ई-अभिव्यक्ति (हिन्दी) - दीपावली अंक - 2023

अंक - 2

ई-अभिव्यक्ति संपादक मण्डल

हेमन्त बावनकर, प्रधान संपादक

विवेक रंजन श्रीवास्तव, संपादक हिन्दी

जय प्रकाश पाण्डेय, संपादक हिन्दी

कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, संपादक अँग्रेजी

www.e-abhivyakti.com

संपादकीय

‘तमसो मां ज्योतिर्गमय’ इन तीन शब्दों में दीप पर्व ही नहीं, प्रकाश और विकास का सारा सार समाहित है। थोड़ी सी दार्शनिक आध्यात्मिक व्याख्या की जाए तो जीवन के अंधकार में उज्ज्वल भविष्य की कामना भी इस शब्द-सूत्र में सन्निहित है। रचनाकार के मनोभाव सद्-साहित्य की रचना करते हैं। प्रकृति मनोभावों को उद्वेलित करती है और रचना के लिये प्रेरित करती है।

ई-अभिव्यक्ति एक वैश्विक पटल है। प्रतिदिन प्रातः सम्पूर्ण विश्व से लेखक और पाठक इस पटल से जुड़ते हैं। हम भी निरपेक्ष भाव से स्तरीय, सकारात्मक और रचनात्मक प्रस्तुति देने का प्रयास करते हैं।

इसी क्रम में आपके वार्षिक ई-पत्रिका के स्वरूप में ई-अभिव्यक्ति का यह द्वितीय दीपावली विशेषांक अपने पाठको को सौंपते हुये हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में प्रस्तुत है कविता, कहानी, लेख, लघुकथा, नाटिका, व्यंग्य हर विधा का मिला जुला गुलदस्ता। हम आभारी हैं, अपने लेखक मित्रों के, जिन्होंने हमारे एक आग्रह पर अत्यंत कम समय में स्तरीय समसामयिक साहित्य आपके लिए प्रेषित किया है।

विगत पाँच वर्षों में ई-अभिव्यक्ति से सम्बद्ध कई प्रबुद्ध लेखकों ने साहित्य के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति के नए आयाम स्पर्श किए हैं, ई-अभिव्यक्ति परिवार की ओर से उन सभी का अभिनंदन। ई-अभिव्यक्ति परिवार विगत पाँच वर्षों की इस यात्रा में उन सभी सम्माननीय लेखक गण एवं पाठक गण का हृदय से आभार। हम उन सभी सम्माननीय जन के भी आभारी हैं जिन्होंने इस यात्रा में परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से अपना सहयोग दिया है।

माँ लक्ष्मी से प्रार्थना है कि हम सब के जीवन में सदैव सुविचारों, संपन्नता, का प्रकाश बना रहे। परिवर्तन के प्रवाह में यह प्रकाश मिट्टी के पारंपरिक दीपकों में तेल और बाती के स्थान पर सोलर रूफ-टाप पर बनी विद्युत ऊर्जा से झिल-मिल करती एल.ई.डी. बल्ब की झालर का हो सकता है, किन्तु, अंततोगत्वा मूल भाव बृहदारण्यकोपनिषद् से उद्धृत “असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय।।” ही है. जिसका अर्थ है कि - मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो. मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो. मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो…

इस दीपावली विशेषांक के साहित्य को आत्मसात कर अपने मित्रों से भी साझा करना मत भूलिए। आपके साहित्यिक सहयोग एवं सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी…

दीप पर्व की इस शुभ वेला में आप सभी को अशेष हार्दिक शुभकामनाएं… 🪔 🪔 🪔 🪔 🪔

हेमन्त बावनकर

प्रधान संपादक

आप अपनी प्रतिक्रियाएँ निम्नलिखित ईमेल पर प्रेषित कर सकते हैं 💐🙏

adm.eabhivyakti@gmail.com, apniabhivyakti@gmail.com, jppandey121@gmail.com

अनुक्रमणिका

व्यक्ति विशेष - श्री संदीप राशिनकर 5
व्यक्ति विशेष - डॉ. भारती माटे 5
दीप पर्व - डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' 6
कहानी - बागबान - डॉ. रमेश यादव 7
कहानी - दीपशिखा - डॉ. दीक्षा चौबे 10
व्यंग्य नाटिका - एक साफ सुथरा इंटरव्यू - डॉ कुन्दन सिंह परिहार 12
कविता - शिलालेख इतिहासों के - आचार्य भगवत दुबे 17
लेख - तमसो मा ज्योतिर्गमय - श्री संजय भारद्वाज 18
कहानी - टूटता तारा - श्री रामगोपाल भावुक 20
कहानी - मास्टर मोतीलाल के दिए - आचार्य राजेश कुमार 29
कुंडलिया - श्री भाऊराव महंत 33
लघुकथा - लक्ष्मी जी के चरण चिन्ह - श्री प्रशान्त चतुर्वेदी 34
कहानी - प्रेमान्त – श्री राजा सिंह 35
लघुकथा - दीये का प्रकाश - श्री विजयानन्द विजय 41
व्यंग्य - *बहना सुखी, भैया दुखी - श्री अभिमन्यु जैन 42
कविता - दीवाली - डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' 43
व्यंग्य - काल के कपाल पर जूता - श्री प्रभाशंकर उपाध्याय 44
गज़ल - श्री कृष्ण गोप 45
व्यंग्य - अजबस्तान की प्रेतात्मा का रहस्य - श्री ऋषभ जैन 46
लघुकथा - बिस्कुट - श्री श्याम खापर्डे 49
व्यंग्य - पांडेय जी और विकास का एजेंडा - डॉ लालित्य ललित 50
कविता - उत्साह, उमंग, ऊर्जा का यह दीपक यूँ ही जलाये रखना - श्री एस के कपूर 56
लेख - धनतेरस के मुहूर्त - पण्डित अनिल कुमार पाण्डेय 57
व्यंग्य - किस्सा एक कहानी कासी - अखतर अली 58
व्यंग्य - हैप्पी दीवाली - सुश्री अनीता श्रीवास्तव 61
व्यंग्य - सोनम बेवफा है - डॉ. महेन्द्र अग्रवाल 64
व्यंग्य - त्रिशूल से ताकतवर गाली - श्री दिनेश अवस्थी 66
ग़ज़ल - डॉ. महेन्द्र अग्रवाल 68
कविता - दीपोत्सव मनाएं - डॉ मुक्ता 69
कविता - पिछली धनतेरस पर... - डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर' 70
कहानी - गुझिया - डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी 71
कविता - दीपावली - सुश्री शन्नो अग्रवाल 75
कविता - दीवाली का पुनरागमन - कर्नल प्रवीण त्रिपाठी 76
कविता - आई दीवाली - सुश्री शेफालिका श्रीवास्तव 77
संस्मरण- हरिशंकर परसाई और उनके अर्थपूर्ण शब्द - श्री द्वारिका प्रसाद अग्रवाल 78
दोहे - नारी है अभिमान! - मनोहर चौबे आकाश 80
व्यंग्य - समस्याएँ कम नहीं हैं मैकदा घर में बनाने में - श्री शांतिलाल जैन 82
कविता - झिलमिलाते दीपक - मुकेश पोपली 84
गीत - आशाओं के दीप जलाकर... - श्री मनोज कुमार शुक्ल "मनोज" 86
व्यंग्य - आठवीं पीढ़ी की व्यवस्था - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 87
कविता - पर्यावरण बचाएं - सुश्री पूनम गुप्ता 88
लेख - हिंदू उत्सव शिरोमणि दीपावली - श्री सुरेश पटवा 89
कविता - यह जीवन एक... - श्री राजन एस. एस. सक्सेना 95
कविता - बाँटने रोशनी जल रहे हैं दिये - प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध 96
लेख - प्रेम जीवन का सार है - ई. अर्चना नायडू 97

लघुकथा - ज्ञानदीप...- श्री सुरेश कुशवाहा ‘तन्मय’ 100
कविता - आई है दीवाली - डॉ मीरा सिंह "मीरा" 101
कविता - हाँ वो ही! - श्री कृष्ण गोप 102
शब्दचित्र - आसान नहीं है "सुमित्र" जैसा बनना - श्री प्रतुल श्रीवास्तव 103
कविता - दीया जलाना है - डॉ राकेश चक्र 105
व्यंग्य - विश्व का आठवाँ आश्चर्य - डॉ मीरा सिंह "मीरा" 106
नारी सशक्तिकरण [चार कवितायें] - डॉ. पद्मा शर्मा 107
कविता - अब के दीवाली में... - श्री सुरेश कुशवाहा ‘तन्मय’ 115
लेख - देव दीपावली : देवताओं का पर्व - सुश्री आकांक्षा यादव 116
हाइकु - श्री तुकाराम पुंडलिक खिल्लारे 119
लघुकथा - आनंद की बारिश - श्री राजकुमार बरूआ 120
समसामयिक लेख - महत्वकांक्षा की मुंडेर - श्री अनूप श्रीवास्तव 121
कविता - मन का दीप - श्री सदानंद आंबेकर 123
कविता - रोशनी की सुरुवात है - श्री श्याम खापर्डे 124
व्यंग्य - सपने में परसाई - श्री राजशेखर चौबे 125
कहानी - स्वर्गलोक में चुनाव - सौ. उज्ज्वला केळकर 127
कविता - मैं दीपक था - डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' 134
कविता - आई है दीपावली... - सुश्री योगिता चौरसिया 'प्रेमा' 135
लेख - भू देवी की आराधना का पर्व–दीवाली - सुश्री इन्दिरा किसलय 136
कविता - जीना है मुश्किल - श्री अशोक भांबुरे 137
लघुकथा - अहिंसा - श्रीमति गौरी गाडेकर 138
कथा - व्यथा कथा एक पेंशनर की - डॉ कुंवर प्रेमिल 139
कविता - दीप का व्यवहार - श्री जयप्रकाश श्रीवास्तव 142
कविता - भारत की नारी - सुश्री प्रणिता खंडकर 143
व्यंग्य - उल्लू की उलाहना - श्री जय प्रकाश पाण्डेय 144
लघुकथा - ज्योतिष - श्रीमति गौरी गाडेकर 147
कविता - लावण्यपूर्ण रात्रि-अभिसारिका - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी 148
कविता - शामियाना - डॉ. भावना शुक्ल 149
लेख - गूगल बन रहा है बुढ़ापे का दोस्त - श्री अजीत सिंह 150
गीत - शुभ सबको हो - श्री अरुण दुबे 153
लघु कथा - दीपों की कश्मकश - श्रीमती सिद्धेश्वरी सराफ ‘शीलू’ 154
कविता - माटी के दीपक जलें - श्री संतोष नेमा 155
कहानी - ठहरे हुए पल - डॉ हंसा दीप 156
लेख - स्कूल बंद है, किताबें भी बंद हैं, क्योंकि दीपावली की छुट्टियाँ जो लगी हैं! - डॉ मीना श्रीवास्तव 161
कविता - दीपों की मौन अभिव्यक्ति - हेमन्त बावनकर 165
Poetry - Farming of Flowers… Capt. Pravin Raghuvanshi, NM 167
Story - Wickets Never Fall - Dr. Amitabh Shanker Roy Choudhury 168
Poetry - The Future… - Miss Radha Unmesh Mulay 177
Article - An Adventure to Save the Great City of Athens - Miss Ira Gautam 178

व्यक्ति विशेष - श्री संदीप राशिनकर

(चित्रकार आणि लेखक)

जन्म : ७ मे १९५८, इंदोर
शैक्षणिक अर्हता : बी.ई. (सिव्हिल)
श्री. संदीप राशिनकर हे सुपरिचित आणि मान्यवर चित्रकार, लेखक आणि समीक्षक आहेत.
आत्तापर्यंत अनेक अखिल भारतीय कला प्रदर्शनांसाठी त्यांच्या चित्रांची आवर्जून निवड केली गेलेली आहे. तसेच, मुंबई, गोवा, इंदोर, निमच,या ठिकाणी आणि लंडनमध्येही त्यांच्या चित्रांची स्वतंत्र प्रदर्शने भरवली गेलेली आहेत.
राष्ट्रीय पातळीवर प्रकाशित केल्या जाणाऱ्या वर्तमानपत्रांमध्ये आणि साप्ताहिकांमध्ये आत्तापर्यंत त्यांची अक्षरशः हजारो चित्रे आणि रेखांकने प्रकाशित झालेली आहेत.
भारतीय ज्ञानपीठासह अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशनांच्या शेकडो पुस्तकांची मुखपृष्ठे श्री. राशिनकर यांनी चित्रांकित केलेली आहेत. म्यूरल्सच्या क्षेत्रातही ते कार्यरत असून अनेक ठिकाणी अनेक प्रतिष्ठानांसाठी त्यांनी भव्य म्यूरल्स तयार केलेली आहेत. आणि त्यात अनेक अभिनव आणि यशस्वी प्रयोगही केलेले आहेत. ब्रास आणि स्टील यांचा वापर करून त्यांनी स्वतः अनेक कलाकृती साकारल्या आहेत, ज्या देश-विदेशातील अनेक कलाप्रेमींनी स्वतःकडे जतन करून ठेवल्या आहेत.
पत्नी सौ. श्रुती यांच्या सहयोगाने त्यांनी लिहिलेला "कुछ मेरी कुछ तुम्हारी" हा काव्यसंग्रह, आणि त्यांनी स्वतः लिहिलेले "कैनवासपर शब्द" हे पुस्तक– अशी त्यांची दोन पुस्तके प्रकाशित झालेली असून दोन्हीही लोकप्रिय ठरलेली आहेत. तसेच पुरस्कारप्राप्तही ठरलेली आहेत. याखेरीज 'कला-संस्कृती' या विषयावरही त्यांनी बरेच लेखन केलेले असून, त्यांचे समीक्षात्मक लेखनही प्रकाशित झालेले आहे.
"जीवनगौरव" पुरस्काराबरोबरच देशभरातील अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारांनी श्री. राशिनकर यांना सन्मानित केले गेलेले आहे.
संपर्क:-: ११-बी , मेन रोड , राजेंद्रनगर , इंदौर -४५२०१२ (म.प्र.)
मो. ९४२५३ १४४२२ / ८०८५३ ५९७७० email :rashinkar_sandip@yahoo.com
Web Site. http://www.sandiprashinkar.com

व्यक्ति विशेष - डॉ. भारती माटे

(चित्रकार, लेखिका आणि कवयित्री)

शैक्षणिक अर्हता : M.Com, CAIIB, Ph.D.(from Irvine (USA) Sub: "Art History of Rangavali & Dry Frescos of Rangavali as Neo-Antiques".)
Proprietor : TAO ARTS, Pune **Creative Director :** TAO Communications, Pune
संस्थापक : भारती माटे फाईन आर्ट्स अँड रिसर्च सेंटर, पुणे. आर्ट वेलफेअर, पुणे.
भारती माटे यांच्या व्यक्तिमत्वाचे अद्वितीय म्हणावेत असे आणखी दोन पैलू आहेत... एक म्हणजे त्यांच्या समकालीन कलाकारांमध्ये त्याच एक अशा कलाकार आहेत, ज्यांना खरोखरच "आत्मशिक्षित" कलाकार म्हणता येईल.
दुसरी गोष्ट अशी की त्या "चित्रकार कवयित्री" आहेत. सर्जनशील असणारी त्यांची अलौकिक बुद्धिमत्ता, कविता आणि चित्रकारिता अशा दोन्ही क्षेत्रात एकाचवेळी उत्तम प्रकारे कार्यरत असते. आणि या दोन्ही कार्यक्षेत्रात त्यांना अनेक पुरस्कार प्राप्त झालेले आहेत.
त्यांची ही वैशिष्ट्यपूर्ण आणि सुंदर रांगोळी चित्रे विक्रीसाठीही उपलब्ध आहेत.
मो. : +91 9890722120 Email : bharati.taoarts@gmail.com
Web Site : www.bharatimate.com Blog : https://bharatimate-painter.blogspot.com/

दीप पर्व - डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र'

दीप पर्व का अर्थ है, जन मन भरो उजास।

केवल अपना ही नहीं, सबका करो विकास।।

दीप उजाला बांटकर, देता है संदेश।

अपना हित साधो मगर, सर्वोपरि हो देश।।

बांध, रेल, पुल में नहीं, अपना हिंदुस्तान।

सच्चे मन से देख ले, बच्चों की मुस्कान।।

नारे व्यर्थ विकास के, भाषण सभी फिजूल।

हंसते गाते यदि नहीं, बच्चों के स्कूल ।।

दाता ने हमको दिये, अन्न, वस्त्र, स्कूल।

देश देवता को करें, अर्पित जीवन फूल ।।

एक अंधेरा उजाला, किंतु नहीं है मित्र ।

सदभावों की सुरभि से, होंगे सभी सुमित्र।।

डॉ. राजकुमार "सुमित्र" जबलपुर मध्यप्रदेश

कहानी - बागबान - डॉ. रमेश यादव

ऑफिस में काम करते हुए पता ही नहीं चला कि कब आठ बजे गए! लोग बाग कब के घरों की ओर कूच कर गए थे। अचानक मोबाइल की घंटी बजी, देखा तो गांव से बाबूजी का फोन था। काफी देर तक बात होती रही। बाबूजी परेशान थे। अपना टेबल समेटकर मैं स्टेशन की ओर लपका। लोकल ट्रेन में भीड़ अधिक थी, शरीर को पतला करते हुए किसी तरह रास्ता बनाया और अंदर जाकर एक किनारे खड़ा हो गया। एक घंटे का सफर वह भी खड़े-खड़े... सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यही तो मजबूरी है इस शहर की, क्या करें! लोग तो दो-दो घंटे इसी तरह लटकते हुए सुबह-शाम सफर करते हैं, बनिस्बत मुझे तो सिर्फ एक ही घंटे सफर करना होता है। यह सोचकर मन को सुकून मिल जाता है और मुंबई लोकल ट्रेन की नारकीय यात्रा को झेल जाता हूँ। बाबूजी की आवाज कानों में गूंज़ रही थी। गांव की याद आ गई। बचपन के वे प्यारे दिन जेहन में घूमने लगे। बाबूजी ने कितनी मेहनत से गांव में घर, खेत, खलिहान और बाग-बगीचा बनाया था। परिवार को संवारा था, मानो स्वर्ग बसाया था।

पिताजी तीन भाई थे। अपने माता-पिता का मैं इकलौता, दोनों चाचाओं को दो बेटे और दो बेटियां थीं। सबकी शादियां हो चुकी थी। गांव में सिर्फ बुजूर्ग ही बचे थे। छुट्टियों में जब नाती-पोते आते तो हवेली खिल उठती थी। इन बुजूर्गों को सिद्दत से इन दिनों का इंतजार रहता। गांव के लोगों के लिए यह ईर्ष्या का विषय होता। कितना हंसता-खेलता परिवार था हमारा... इस उधेड़बुन में मेरा स्टेशन कब आया, पता ही नहीं चला।

अगले दिन दफ्तर पहुंचते ही छुट्टी की अर्जी लगाई और टिकट के इंतजाम में लग गया। बीस दिन बाद का टिकट मिला। बाबूजी ने बड़े आग्रह से सभी को गांव बुलाया था। गांव में घर-खेत, खलिहान, बगिया और जमीन का बंटवारा हो रहा था। दिलों में खूंटें गाड़े जा रहे थे। हमारी पीढ़ी तो शहरों में रहने लगी था, मगर स्वार्थ और लालच की अंधी हवायें उन बुजूर्गों की खुशियों में सेंध लगा रही थी। हवेली की दीवारों में अब दरारें पड़ गई थीं।

आज एक और संयुक्त परिवार विभक्त हो रहा था। जिस परिवार के भाईचारे की कभी लोग दुहाई दिया करते थे, आज वही गांव वाले विभाजन का तमाशा देख रहे थे। विभाजन भला कब सुखद साबित हुआ है! फिर चाहे देश का हो, घर का हो या दिलों का... पर इस दौर की आबोहवा ही कुछ ऐसी है। वैसे हमारे परिवार में बंटवारे की कोई खास जरूरत नहीं थी, हिसाब - किताब पहले से ही साफ था। सबकी रसोइयां और आर्थिक व्यवहार भी अलग-अलग था। खेत खलिहान से जो अनाज आता वह तीन हिस्सों में बंट जाता। सालों से यह सिलसिला जारी था। मगर कुछ बुरी नज़रों और गांववालों की कानाफूसी के कारण नई बहुओं के नियत में खोट आ गई थी। यही लोग अब घर की मालकिनें थीं। रहना तो किसी को भी

नहीं था, पर ‘मैं’ और ‘मेरा’ ने सारा खेल खराब कर दिया था। माता-पिता की संपत्ति में बेटियों का भी हक होता है इसलिए वे भी बंटवारें के लिए भाभियों के कान भर रहीं थीं।

काफी झगड़े- झंझट और विवादों के उपरांत अंतत: एक सप्ताह बाद बंटवारा हो गया। कई सालों से उबल रही ज्वालाग्नि कुछ शांत हो गई। चचरे भाइयों ने उनके हिस्से में आयी हवेली का अपना हिस्सा और जमीन के अनुसार मिले आस-पास के पेड़-पौधों को कटवाना शुरू कर दिया। इनमें नीम, जामून, नीबू, कटहल, आम और कई किस्म के फूल-पौधे थे, जो हवेली के अगवाड़े-पिछवाड़े की शोभा बढ़ा रहे थे। हरियाली से खुशहाल बगिया उजाड़ हो रही थी। इससे बाबूजी काफी परेशान हो रहे थे। मानों उनके सीने पर आरी चलाई जा रही हो। कभी इन्हीं पेड़-पौधों के बीच खेल कूदकर हम बड़े हुए थे। पिताजी परिवार में सबसे बड़े थे। उन्होंने अपने हाथों से इस घर-परिवार तथा बगिया को सहेजा था। इसके तीन टुकड़े हो जाने का उन्हें ग़म नहीं था मगर दुख इस बात का था कि बीचो-बीच दीवारें खड़ी की जा रही थीं। पेड़-पौधों को काटा जा रहा था। छोटे से लेकर बड़ों तक के मन में खटास तो पहले से ही थी अब वैमनस्य के बीज बोए जा रहे थे। आपसी मेल-मिलाप तक बंद हो गया था। गांव की सबसे बड़ी और सबसे शानदार हवेली, वक्त के साथ बंटवारे का दंश झेल रही थी। कई सालों तक बाबूजी घर के साथ गांव के भी मुखिया थे। तीन बार सरपंच रह चुके थे। इस बंटवारे से उदास बाबूजी चुप्पी साधे एक कोने में गुमसुम से बैठे रहते। किसी से कुछ भी ना बोलने की मानो उन्होंने कसम खा ली थी! ज़िंदगी की विषम परिस्थियों से गुजरते हुए बुलंदी के इस छोटे- मोटे आसमान को उन्होंने छूआ था। उनकी चुप्पी किसी से भी बर्दाश्त नहीं हो रही थी। मां ने बताया कि कई दिनों से उन्होंने ठीक से खाना भी नहीं खाया था। बाबूजी की पीड़ा को हम समझ रहे थे पर उनकी उदासी जान ले रही थी।

उस दिन मेरा बेटा छोटा पार्थ, कहीं से भागता हुआ आया और दादाजी की गोदी में बैठ गया। उसके हाथों में पौधों की कुछ टहनियां और गुठलियां थीं। इन्हें थमाते हुए वह बोला, “दादाजी, चलो नई बगिया लगाते हैं। मैंने आज ही इंटरनेट पर सर्च करके पता लगाया है कि पौधे कैसे लगाए जाते हैं। किताबों में भी पढ़ा है कि पौधे लगाने से पर्यावरण का संरक्षण होता है। धरती मैय्या खुशहाल रहती हैं।” काफी देर तक बाबूजी पार्थ को निहारते रहे। उसे परखने लगे। पार्थ की आँखें और उसका मासूम चेहरा बाबूजी को कुछ संकेत दे रहीं थीं। पुन: आवाज गूंजी, “दादाजी, चलो नई बगिया लगाते हैं।” यह सुनते ही दादाजी के अंग-अंग में नई ऊर्जा संचारित हो गई। दादा और पोते के बीच काफी देर तक बातें होती रहीं। हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। काफी दिनों बाद बाबूजी जी ने मौन तोड़ा था। अपनी कसम तोड़कर आज वे हँस-हँसकर पार्थ से बतिया रहे थे। अपना लैपटॉप खोलकर पार्थ दादाजी को बागवानी और खेती करने के नए गुर समझा रहा था। पार्थ के उत्साह को देखकर बाबूजी फिर खड़े हुए और कुछ ही दिनों में मजदूरों को लेकर नए सिरे से नई दुनिया बसानी शुरू कर दी। पार्थ जब तक गांव में रहा, रोज उन पौधों को खाद-पानी देता रहा। अगले साल उसकी बोर्ड की परीक्षा थी अत: छुट्टियां समाप्त होते ही हम शहर लौट आए।

पार्थ का मन अब गांव में रमने लगा था। उसे बगिया से प्यार हो गया था। हर साल छुट्टियों में वह गांव जाने लगा। समय चक्र घूमता रहा। उच्च शिक्षा के लिए पार्थ जब विदेश गया तो उसने ‘एग्रीकल्चर

टेक्नोलॉजी' को अपना मुख्य विषय चुना। इस बीच बाबूजी का देहांत हो गया। कुछ ही महीनों बाद माताजी भी स्वर्ग सिधार गईं। इसके बाद गांव के घर की रौनक ही खत्म हो गई। गांव जाने का अब कोई मतलब ही नहीं बचा था। वहां की सारी जिम्मेदारी घर के वफादार नौकर रामू काका को सौंप दी गई थी। इस तरह कई साल बीत गए। विदेश से पढ़कर पार्थ जब भारत लौटा तो अचानक उसे गांव की याद सताने लगी। मेरे लिए यह आश्चर्य का विषय था। आज कल के बच्चे जो विदेश चले जाते हैं, उनमें से अधिकांश तो अपने वतन को भी नहीं लौटना चाहते। ऐसा नहीं है कि उन्हें अपने देश से प्यार नहीं या अभिमान नहीं पर इतने साल विदेश में रहने के बाद उन्हें यहां की जीवन शैली रास नहीं आती। मगर हमारा पार्थ भारत में ही रहकर गांव के विकास के बारे में कुछ सोच रहा था। उसने गांव में नई फैक्टरी लगाने की योजना के बारे में बताया तो हम चौंक गए। गांव के गरीबों को रोजगार का अवसर मिले यह उसका सपना था। शायद दादा-दादी के संस्कारों का यह असर था। वह कुछ नया और अलग करना चाह रहा था। जब उसने अपनी सारी योजना विस्तार से बताई तो हमें भी उसकी सोच पर काफी फ़ख़्र हुआ। अत: एक दिन वह अपने पुरखों की जमीन पर आ धमका।

वर्षों बाद पार्थ आज गांव की अपनी उस बगिया में आया था। सैकड़ों पेड़-पौधे और पुष्प वाटिका उसके स्वागत में झूम रहे थे। रामू काका बता रहे थे, "छोटे बाबू, दादाजी आपके लिए करोडों का आशीर्वाद छोड़ गए हैं, उनकी इच्छा थी कि हमारा पार्थ इस धरती को स्वर्ग बनायेगा। ऐसा आशीर्वाद हर किसी को नहीं मिलता। उनके हाथों में जादूगरी थी, वे गुठली भी फेंक देते तो पौधा लग जाता था। ऐसा कमाल सबके हाथों में नहीं होता। आप बड़े खुशनशीब हो बाबू, जो ऐसे दादाजी आपको मिले।"

अचानक शीतल हवा का झोंका आया... बगिया महक उठी, पेंड़-पौधे झूमने लगे। परिसर लहलहा उठा। पार्थ को सुकून-सा महसूस हुआ। पल भर के लिए उसे लगा जैसे दादाजी उसे चूमकर चले गए... उसकी आंखों के सामने वो फैक्टरी खड़ी थी "दादाजीस फ्लोरीकल्चर हॉर्टीकल्चर सेंटर।" इसमें फूलों की पैदावार, मार्केटिंग, कॉस्मेटिक और परफ्यूम इंडस्ट्री के अलावा फार्मास्यूटिकल का सपना साकार हो रहा था...

डॉ. रमेश यादव - मुंबई - मो. - 9820759088 / 7977992381

कहानी - दीपशिखा - डॉ. दीक्षा चौबे

आज माधुरी सुबह से ही रसोई में घुसी हुई थी। नाश्ता, दोपहर का खाना, फिर ढेर सारे पकवान भी तो बनाने थे। आज दीपावली जो है... आज तो आने - जाने वालों का तांता लगा रहेगा।

उसे भूख भी लग आई थी लेकिन वह चुपचाप काम में लगी रही। जानती थी, जरा सी भूल हुई नहीं कि उस पर तानों की बौछार हो जायेगी। माधुरी एक सुंदर सुशिक्षित व मधुर स्वभाव वाली लड़की थी। तभी तो साधारण परिवार की होते हुए भी राजीव व उसके पिताजी दोनों को एक ही नजर में भा गई थी। सिर्फ माँ इस विवाह के विरुद्ध थी। वह एक अच्छे खानदान व बड़े घर की बेटी को ही अपनी बहू बनाना चाहती थी, पर राजीव की जिद के आगे उनकी एक न चली।

अंततः माधुरी इस घर में दुल्हन बनकर आ ही गई। आते ही उसने घर के सारे काम सँभाल लिए। ऐसा लगता था मानो घर की हर चीज उसकी सृजनशीलता की तारीफ कर रही हो। उसने कभी अपनी सास को भी शिकायत का मौका नहीं दिया ...लेकिन पता नहीं उनके मन में क्या धारणा घर कर गई थी कि वह माधुरी के हर कार्य में गलती निकालती। उसे फटकारने या ताना मारने का कोई मौका वे नहीं छोड़तीं थी।

पिताजी व राजीव हमेशा माधुरी का पक्ष लेते, उसे समझाते रहते व उसे खुश रखने का प्रयास करते ताकि वह माँ की बातों से दुखी न हो। राजीव उसे धैर्य रखने को कहता " समय के साथ माँ भी बदल जाएंगी... उनके स्नेहिल हृदय के द्वार तुम्हारे लिये भी अवश्य ही खुलेंगे"। पति का यह आश्वासन उसे अपने कर्तव्य - पथ पर डटे रहने की प्रेरणा देता और पिता तुल्य ससुर जी का प्रेम सासु माँ की कटुक्तियों पर मलहम की तरह काम करता। वैसे वह महसूस करती कि माँ जी दिल की बुरी नहीं है... उसके प्रति रूखेपन का कारण शायद अपने इकलौते बेटे की शादी में अपनी जिद न चल पाने का मलाल था या बेटे को खोने का भय...जो कभी - कभी ज्वालामुखी के लावे की तरह अचानक फूट पड़ता था।

खयालों में खोई माधुरी की तन्द्रा माँ जी की आवाज से टूटी। वह खाना लगाने को कह रही थीं और माधुरी सबको खाना परोसने लगी।

शाम को जल्दी से तैयार होकर वह पूजा की तैयारी करने लगी। माँ जी भी दीयों में तेल भरने लगीं। रात को पूजा के बाद सभी छत पर टहलने लगे। दीपशिखाओं की रोशनी से सारा शहर जगमगा रहा था। पिताजी और राजीव पटाखे छुड़ाने नीचे चले गए और माँ जी और माधुरी ऊपर से ही उन्हें देखने लगीं।

तभी अचानक माधुरी ने देखा कि माँ जी की साड़ी के लटकते हुए पल्लू में आग लग गई है और वे बेखबर रोशनी देखने में मग्न हैं। माधुरी ने एक पल की भी देरी नहीं कि और माँ जी की ओर लपकी।

तब तक शायद उन्हें भी इस बात का एहसास हो गया था। वे घबराहट में कुछ सोच भी नहीं पाई थीं कि माधुरी उनके पास पहुँच गई और अपने हाथों से साड़ी में लगी आग को बुझाने लगी। आग तो जल्दी बुझ गयी पर उसका हाथ काफी झुलस गया। माँ जी कुछ देर हतप्रभ सी खड़ी रहीं फिर माधुरी के हाथों को पकड़कर फूट - फ़ूटकर रोने लगीं -

"मैंने तुम्हें हमेशा भला - बुरा कहा। कभी दो मीठे बोल नहीं कहे... फिर भी तुम मेरी सेवा करती रही और आज मेरे लिए ये तूने क्या कर लिया, अपने हाथ जला लिए। मुझे माफ करना बेटी, आज मुझे मालूम हुआ व्यक्ति का आकलन उसके गुणों, व्यवहार से करना चाहिए न कि धन-दौलत से। मुझे माफ़ कर दो...।"

माधुरी को लगा उसे सब कुछ मिल गया और वह माँ जी के सीने से लग गई एक दुलारी बेटी की तरह। अब उसे दीपशिखा की ज्योति अति सुहानी लग रही थी क्योंकि उसने उसके मन के उदासी रूपी अँधेरे को हर लिया था और उसके चारों तरफ खुशियाँ जगमगा उठी थीं... साथ ही ससुराल में मातृप्रेम जो मिल गया था।

डॉ. दीक्षा चौबे - HIG1/33, आदित्य नगर दुर्ग, छत्तीसगढ़ 491001 - मो. 942412359

व्यंग्य नाटिका - एक साफ सुथरा इंटरव्यू - डॉ कुन्दन सिंह परिहार

(एक दफ्तर का दृश्य। बरामदे में दस बारह उम्मीदवार अपनी अपनी फाइलें लिये बैठे हैं। दरवाज़ा खोलकर, टेढ़ी टोपी लगाये, हाथ में एक कागज लिये, एक चपरासी प्रकट होता है।)

चपरासी - हाँ जी! तो आप सब लोग इस कागज पर अपने नाम के आगे दस्तखत बना दीजिए और सौ सौ रुपये दे दीजिए।

एक उम्मीदवार - ये सौ रुपये किस बात के हैं?

चपरासी - सौ रुपये हमारे हैं। दस्तखत कराने के। कभी किसी दफ्तर में नहीं गये क्या? दफ्तर के नियम कानून नहीं मालूम?

(दस्तखत कराके और सौ सौ रुपये लेकर चला जाता है। थोड़ी देर में एक बाबू आता है। बढ़ी हुई तोंद पर खिसकती पैंट। मुँह में पान।)

बाबू - देखिए, आप लोग बारह उम्मीदवार हैं और पोस्ट हैं कुल छः। काम मुश्किल है, लेकिन हमने सब व्यवस्था कर ली है। पहले चिट्ठी वालों पर विचार होगा, फिर लिफाफा वालों पर। लेकिन इतना समझ लीजिए कि चिट्ठी स्टैंडर्ड की होनी चाहिए। विधायक इधायक की चिट्ठी नहीं चलेगी। इसी तरह लिफाफे का वजन भी हमारे विभाग के स्टैंडर्ड के हिसाब से होना चाहिए। वजन कम हुआ तो हम आपकी कोई मदद नहीं कर पाएँगे। हाँ, तो पहले चिट्ठी बताएँ।

(एक उम्मीदवार हाथ उठाता है।)

कहिए, आपको क्या शिकायत है?

उम्मीदवार - हम फोन वाले हैं। हमारी अलग कैटेगरी है।

बाबू - कौन फोन वाले?

उम्मीदवार - भीतर जाकर पूछिए। कोई धरणीधर जी का फोन आया था क्या?

बाबू (हड़बड़ा कर) - रुकिए। एक मिनट रुकिए। मैं अभी आता हूँ। (भीतर जाता है। फिर दरवाज़ा खुलता है। सूट टाई वाले एक साहब प्रकट होते हैं। मुँह पर मुस्कान। पीछे पीछे ओंठ फैलाये बाबू।)

साहब (बाबू से) - कौन हैं?

बाबू (फोन वाले उम्मीदवार की तरफ उँगली उठाकर) - वह रहे।

(साहब बढ़कर उम्मीदवार के पास जाते हैं।)

साहब- तो आप ही हैं मिस्टर अशोक?

(हाथ बढ़ाते हैं। उम्मीदवार बैठे-बैठे ही हाथ मिलाता है।)

साहब - धरणीधर जी का फोन आया था। आपको बहुत तकलीफ हुई। मुझे बहुत अफसोस है। धरणीधर जी कैसे हैं?

उम्मीदवार - ठीक हैं।

साहब - उनसे मेरा प्रणाम कहिएगा। बड़ी कृपा है उनकी मेरे ऊपर। अ ग्रेट मैन। एकदम दया की मूर्ति। अब आप जाइए। आपका टाइम कीमती है। मैं लैटर भेज दूंगा। धरणीधर जी से मेरा प्रणाम ज़रूर कहिएगा। कहिएगा आपके सेवक पी.सी. ने प्रणाम भेजा है।

उम्मीदवार - ज़रूर।

(चला जाता है। साहब बिना दूसरों की तरफ देखे अन्दर चले जाते हैं। बाबू वहीं रह जाता है।)

बाबू- हाँ, तो चिट्ठी वाले अपनी अपनी चिट्ठियाँ मुझे थमाइए और यहीं शान्ति से बैठे रहिए।

(पाँच उम्मीदवार बाबू को चिट्ठियाँ थमाते हैं। बाबू उन्हें लेकर अन्दर चला जाता है। थोड़ी देर में फिर प्रकट होता है।)

ये सुनील कुमार और राजेश कौन हैं?

(दो उम्मीदवार हाथ उठाते हैं।)

हाँ तो आप की चिट्ठियाँ काम की पायी गयीं। आप जाइए, आपको लैटर मिल जाएगा। बाकी तीन ये अपनी चिट्टियाँ सँभालिए। विधायक सिधायक की सिफारिश पर नौकरी के ख्वाब देखते चले आते हैं। आपको सामान्य उम्मीदवारों के साथ इंटरव्यू देना हो तो बैठे रहिए, नहीं तो घर जाइए। वैसे हालत आपके सामने है।

अच्छा, अब लिफाफे वाले अन्दर आ जाएँ।

(छः उम्मीदवार अन्दर जाते हैं। उनमें दो वे भी है जिन की चिट्ठियाँ लौटा दी गयी हैं। थोड़ी देर में छहों उम्मीदवार बाहर निकलते हैं। तीन प्रसन्न हैं, तीन के मुँह लटके हैं। पीछे पीछे बाबू है।)

बाबू - देखिए, लिफाफे के आधार पर तीन का और चुनाव हो गया। जिनके लिफाफों का वजन हमारे विभाग के स्टैंडर्ड के हिसाब से नहीं था वे रिजेक्ट हो गये। दूध का दूध और पानी का पानी। सब काम

कायदे के मुताबिक। ये तीनों लकी उम्मीदवार भी जा सकते हैं। जिनका चुनाव हो गया उनको हमारी मुबारकबाद, बाकी के लिए हमदर्दी और गुड विशेज़।

हाँ तो ध्यान दीजिए। पोस्ट तो सब भर गयीं। लेकिन यह जो छः उम्मीदवार रह गये हैं उन्हें शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। हम बराबर उनका इंटरव्यू लेंगे, भले ही हमारा थोड़ा बहुत वक्त खराब हो।

अब एक एक उम्मीदवार को बुलाने से तो फायदा नहीं क्योंकि काम तो खतम हो गया। हम आपको तीन-तीन करके दो बार में बुलाएँगे और आनन-फानन निपटा देंगे, ताकि आप भी घर जाकर भोजन विश्राम करें और हम भी आप से पीछा छुड़ायें।

(लिस्ट देख कर)

हाँ तो के.पी. सिंह, शिव कुमार और रमेश प्रसाद आ जाएँ।

(भीतर तीन साहब टाई सूट में बैठे हैं। आँखों पर चश्मा। गंजा होता सिर और आँखों में नींद। सामने एक कुर्सी रखी है। बाबू चपरासी से कहकर दो कुर्सियाँ और रखवा देता है। तीनों उम्मीदवार बैठ जाते हैं।)

साहब एक - हाँ तो आप लोग इंटरव्यू के लिए तैयार हैं?

तीनों उम्मीदवार- जी हाँ, तैयार हैं।

साहब एक - तो जल्दी इस काम को निपटा देते हैं। सीरिया की क्राइसिस के बारे में तो आपने पढ़ा ही होगा?

तीनों - पढ़ा है।

साहब एक - बहुत खूब! बहुत खूब! अफगानिस्तान में हुई तब्दीलियों के बारे में पढ़ा है?

तीनों - हाँ, पढ़ा है।

साहब एक - शाबाश! आप से और क्या उम्मीद की जा सकती थी? रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के बारे में पढ़ा है?

तीनों - पढ़ा है।

साहब एक - बहुत बढ़िया। मतलब यह कि आपकी तैयारी पूरी है। (दूसरे साहब से) आप पूछिए।

तीनों - आपने हमसे कोई सवाल तो पूछा ही नहीं।

साहब एक - पूछ कर क्या करना है? हम जानते हैं कि आपको सारे जवाब मालूम हैं। और फिर अब पूछने से फायदा क्या? एक रस्म पूरी करनी थी।

साहब दो - चीन की इकॉनामी की ग्रोथ के फैक्टर्स के बारे में जानकारी है?

तीनों - है।

साहब दो - अमेरिका ईरान तनाव के कारणों का पता है?

तीनों - है।

साहब दो - लेबनान की समस्या की जानकारी है?

तीनों - है।

साहब दो - वेल डन। (तीसरे साहब से) आप भी पूछ लीजिए। देर हो रही है।

साहब तीन - नीरज चोपड़ा का नाम सुना है?

तीनों - सुना है।

साहब तीन - यूसेन बोल्ट का सौ मीटर का रिकॉर्ड पता है?

तीनों - पता है।

साहब तीन - अभी चल रहे ओलंपिक में इंडिया की पोज़ीशन की जानकारी है?

तीनों - जी, है।

साहब तीन - बहुत अच्छा। तीनों ब्रिलिएंट हैं।

साहब एक - वेल जेंटिलमेन, अब आप जा सकते हैं। हमने अपनी ड्यूटी पूरी की। अब कोई नहीं कह सकता कि हमने आपको मौका नहीं दिया। हमारी आत्मा साफ है। रिज़ल्ट तो आपको पहले ही बता दिया है। अच्छा, बाय।

उम्मीदवार एक - हम आपकी शिकायत करेंगे।

(तीनों साहब आश्चर्यचकित होते हैं।)

साहब दो - शिकायत करोगे? क्या शिकायत करोगे?

उम्मीदवार एक - यही कि आपने सिफारिश और रिश्वत के आधार पर चुनाव किया।

साहब तीन (आश्चर्य से) - तो क्या गलत किया? हमने तो सब पहले ही बता दिया था। गलत काम वह है जो छिपा कर किया जाए। हमने एक प्रोसीजर बना रखा है। आप उसमें फिट नहीं हुए तो हम क्या करें?

अपने को उसके काबिल बनाइए। देश के लिए कुछ त्याग करने की आदत डालिए। बिना त्याग के कोरी काबिलियत से क्या होगा?

उम्मीदवार एक - मैं मामले को ऊपर तक ले जाऊँगा।

साहब तीन - ऊपर कौन है ब्रदर? हम तो ऊपर वालों के ही कठपुतले हैं। ऊपर से जैसी डोरी खिंचती है, वैसा ही हम खेल दिखाते हैं। तुम हमें डरा नहीं सकते, भाई। जैसे कोई भक्त भगवान को अपने सब कामों का सूत्रधार मानकर निर्भय हो जाता है, वैसे ही हम अपने सूत्रधारों पर सब छोड़कर निर्भय हैं। तुम्हें दीवार से अपना माथा फोड़ना है तो खुशी से जाओ। दरवाज़ा खुला है।

साहब दो - खीझने से कोई फायदा नहीं ब्रदर। अपने में दूसरी तरह की काबिलियत पैदा करो। हम तो खुद चाहते हैं कि अगली बार आप आयें जो हम खुशी से आप का चुनाव कर सकें। फिलहाल जाइए और बाकी तीन को भेज दीजिए ताकि हम जल्दी उनको भी निपटाने की ड्यूटी पूरी कर सकें। गुड लक, जेंटिलमेन।

डॉ कुन्दन सिंह परिहार - 59, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर- 482002 मो. 9926660392, 7999694788

कविता - शिलालेख इतिहासों के - आचार्य भगवत दुबे

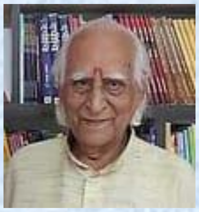

करते हैं रहस्य उद्‌घाटित
शिलालेख इतिहासों के
पाषाणों में छिपी साधना
इनमें धड़क रही हैं सदियां
इनके चिन्तन को कुरेदना
यहीं सिसकती हैं त्रासदियां
कुछ के तन पर बने हुए हैं
कशाघात संत्रासों के
कहीं किसी अश्वारोही ने
साध रखी मन की वल्गाएँ
कहीं घूर्णित रथचक्रों से
हुई प्रकंपित दसों दिशाएं
भाव यहाँ जीवन्त हुए हैं
पतझर के, मधुमासों के
अंकित कहीं काम की क्रीड़ा
झलके कहीं हृदय की पीड़ा
कहीं ताण्डव का नर्तन है
अंकित उद्‌भव और पतन है
कहीं अर्थ अधखुले अभी तक
शंका के, विश्वासों के

आचार्य भगवत दुबे - 82, पी एन्ड टी कॉलोनी, जसूजा सिटी, पोस्ट गढ़ा, जबलपुर, मध्य प्रदेश

लेख - तमसो मा ज्योतिर्गमय - श्री संजय भारद्वाज

दीपावली, भारतीय लोकजीवन का सबसे बड़ा त्योहार है। कार्तिक मास की अमावस्या को सम्पन्न होने वाले इस पर्व में घर-घर दीप जलाये जाते हैं। अपने घर में प्रकाश करना मनुष्य की सहज और स्वाभाविक वृत्ति है किंतु घर के साथ परिसर को आलोकित करना उदात्तता है। शतपथ ब्राह्मण का उद्घोष है,

असतो मा सद्गमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय...!

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' से भौतिक संसार में प्रकाश का विस्तार भी अभिप्रेत है। हर दीप अपने स्तर पर प्रकाश देता है पर असंख्य दीपक सामूहिक रूप से जब साथ आते हैं तो अमावस्या दीपावली हो जाती है।

इन पंक्तियों के लेखक की दीपावली पर एक चर्चित कविता है, जिसे विनम्रता से साझा कर रहा हूँ,

अँधेरा मुझे डराता रहा,

हर अँधेरे के विरुद्ध

एक दीप मैं जलाता रहा,

उजास की मेरी मुहिम

शनैः-शनैः रंग लाई,

अनगिन दीयों से

रात झिलमिलाई,

सिर पर पैर रख

अँधेरा पलायन कर गया

और इस अमावस

मैंने दीपावली मनाई !

कथनी और करनी दो भिन्न शब्द हैं। इन दोनों का अर्थ जिसने जीवन में अभिन्न कर लिया, वह मानव से देवता हो गया। सामूहिक प्रयासों की बात करना सरल है पर वैदिक संस्कृति यथार्थ में व्यष्टि के साथ समष्टि को भी दीपों से प्रभासित करने का उदाहरण प्रस्तुत करती है। सामूहिकता का ऐसा क्रियावान उदाहरण दुनिया भर में मिलना कठिन है। यह संस्कृति 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' केवल कहती नहीं अपितु अंधकार को प्रकाश का दान देती भी है।

प्रभु श्रीराम द्वारा रावण का वध करके अयोध्या लौटने पर जनता ने राज्य में दीप प्रज्ज्वलित कर दीपावली मनाई थी। श्रीराम सद्गुण का साकार स्वरूप हैं। रावण, तमोगुण का प्रतीक है। श्रीराम ने समाज के हर वर्ग को साथ लेकर रावण को समाप्त किया था। तम से ज्योति की यात्रा का एक बिंब यह भी है। स्वाभाविक है कि सामूहिक दीपोत्सव का रेकॉर्ड भी भारतीयों के नाम ही है। यह सामूहिकता, सामासिकता और एकात्मता का प्रमाणित वैश्विक दस्तावेज़ भी है।

तथापि सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि वर्तमान में चंचल धन और पार्थिव अधिकार के मद ने आँखों पर ऐसी पट्टी बांध दी है कि हम त्योहार या उत्सव की मूल परम्परा ही भुला बैठे हैं। आद्य चिकित्सक धन्वंतरी की त्रयोदशी को हमने धन की तेरस तक सीमित कर लिया। रूप की चतुर्दशी, स्वरूप को समर्पित कर दी। दीपावली, प्रभु श्रीराम के अयोध्या लौटने, मूल्यों की विजय एवं अर्चना का प्रतीक न होकर केवल द्रव्यपूजन का साधन हो गई।

उत्सव और त्योहारों को उनमें अंतर्निहित उदात्तता के साथ मनाने का पुनर्स्मरण हमें करना ही होगा। अपने जीवन के अंधकार के विरुद्ध एक दीप हमें प्रज्ज्वलित करना ही होगा। जिस दिन एक भी दीपक इस सुविधानुसार विस्मरण के अंधेरे के आगे सीना ठोंक कर खड़ा हो गया, यकीन मानिए, अमावस्या को दीपावली होने में समय नहीं लगेगा।

श्री संजय भारद्वाज - अध्यक्ष- हिंदी आंदोलन परिवार ☆सदस्य- हिंदी अध्ययन मंडल, पुणे विश्वविद्यालय ☆संपादक- हम लोग ☆पूर्व सदस्य- महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी ☆ ट्रस्टी- जाणीव, ए होम फॉर सीनियर सिटिजन्स ☆

मोबाइल- 9890122603, संजयउवाच@डाटामेल.भारत, writersanjay@gmail.com

कहानी - टूटता तारा - श्री रामगोपाल भावुक

रोहित तो करवट बदलकर सो गये थे लेकिन मैं जाग रही थी। खिड़की के रास्ते तारों भरा आसमान चमक रहा था। मेरे जन्म के समय भी ऐसे ही तारों भरे असमान से मेरे पिता जी को टूटता तारा दिखा था इसलिये ही उन्होंने मेरा नाम तारा रख लिया। वे यह मानते हैं कि जब तारा टूटता है तब किसी नये उद्देश्य के लिये ही उस आत्मा का जन्म होता है, यह जन श्रुति आदिकाल से चलती चली आ रही है।

तारा टूटने की जन श्रुति से मैं जीवन भर अपने को जोड़ने में लगी रही। हम दो भाई बहन है। घर में खेती बाड़ी अच्छी है, हमारे लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा में कोई कमी नहीं रहीं। रानू भइया बड़े हैं, इधर उनकी एयरटेल कम्पनी में नौकरी लग गई तो बड़े- बड़े घरों के लड़की वाले, उनका ब्याह करने के लिये चक्कर लगाने लगे। हमें भी उनका ब्याह करना उचित लगने लगा। जो रिश्ता अनुकूल लगा, मैं ही पिताजी के साथ उस लड़की को देखने गई थी।

मैं अपनी सुन्दरता से मन ही मन उसकी तुलना करके उसके अंग- प्रत्यंग का निरीक्षण करने लगी। उसकी कद-काँठी, सुगठित बदन और हँस मुख व्यक्तित्व देखकर मैं उसकी ओर आकर्षित हो गई।

इसका निर्णय करना पिता जी ने मुझ पर ही छोड़ दिया। मैं सोच रही थी कहीं मैं निर्णय लेने में गच्चा न खा जाऊँ। मैंने अपना पूरा विवके लगाया और कह दिया -'यह लड़की मुझे पसन्द है।'

फिर क्या था तत्काल उसकी गोद भर दी गई।

घर आकर हमने सोचा, यह लड़की हमारे इस पुराने तरीके से बने घर में कैसे रहेगी? मम्मी -पापा ने निर्णय लिया, न हो तो शादी से पहले हम अपना घर, नये तरीके से बनवा डालें।

अगले ही दिन से घर के निर्माण का कार्य चालू हो गया और ब्याह के महूर्त से पहले तक बनवाकर, उसे भाभी के स्वागत में तैयार कर लिया। जिसमें खेती-किसानी से मिला और घर, खर्च से बचा, अधिकांश पैसा जो मेरे ब्याह के उद्देश्य से बचाकर रखा था, स्वाह हो गया। पापा, मम्मी से कह रहे थे तारा के ब्याह के समय भगवान और किसी तरह डोर लगायेगा।

मकान का काम निपटते हीं अपने पण्डित जी से महूर्त निकलवाकर भैया का ब्याह हो गया।

सारा घर भाभी की चका-चैध में खो गया। मम्मी- पापा भाभी को सुना- सुनाकर अपने बड़ेपन की बातें हाँकने लगे। वे भी अपने को बड़े घर की बहू समझने लगीं। इस तरह भाभी की इच्छायें बढ़ने लगीं। कभी सोने के झुमकों, और कभी हार की नई-नई फर्माइशें सें करने लगीं। मम्मी, पापा और भैया का एक ही

लक्ष्य बन गया, कैसे भी उसकी इच्छाओं की तृप्ति की जाये! इस क्रम में धीरे-धीरे घर पर कर्ज बढ़ने लगा।

मैंने प्रथम श्रेणी से बी. ए. पास करली। आगे जीवन व्यवस्थित करने के लिये मैंने बी.एड. की ट्रेनिंग करना चाही, पर घर की स्थिति बी.एड. की फीस चुकता करने में समर्थ नहीं थी, मैं कुछ कहती तो मम्मी- पापा कह देते, तुम्हारी ही पसन्द की भाभी है, इसलिये मैंने मन मारकर हिन्दी से एम.ए. करने का फार्म डाल दिया। मैं कॉलेज जाने लगी।

मेरा सुगठित बदन और चंचल स्वभाव देखकर अच्छे-अच्छे आहें भरने लगे। मैं छिपी कनखियों से देखकर उनके मनोंभाव भांपने की कोशिश करने लगी। मैंने देखा कक्षा के तमाम लड़कों के बीच एक लड़का ऐसा है जो भरे पूरे व्यक्तित्व का है। खिलाड़ियों जैसा फुर्तीला बदन और हिन्दी के तमाम कवियों और कहानीकारों के बारे में उसे गजब की जानकारी थी। यूं तो रोहित मेरे साथ ही हिन्दी में एम.ए. कर रहा था, लेकिन अपने अध्ययन की बदौलत वह कॉलेज के प्रोफेसरों से उन्नीस नहीं लगता था। पढ़ाई के सिलसिले में मेरे घर भी चक्कर लगा जाता। रीतिकाल का रसमय साहित्य और आधुनिककाल की बोल्ड कविताओं ने हमारा लिहाज औा संकोच विल्कुल मिटा दिया। हम दोनों निकट आते चले गये। हमारे मन की स्थिति ऐसी बनी कि हम एक दूसरे के बिना रह न पा रहे थे। उम्र के बहाव ने हमें और अधिक नजदीक ला दिया। इसलिये हमने कोर्ट मैरिज कर ली।

पापा- मम्मी जातिवाद के पोषक थे। उन्हें यह बात रास नहीं आई। मुझे घर छोड़ना पड़ा। रोहित के सारे समाज ने मेरा भरपूर स्वागत किया। स्वागत का कारण मैं समझ रही थी कि मैं बड़ी जाति की हूँ, इसलिये सभी मेरे इस दुस्साहस के लिये मेरा स्वागत कर रहे हैं। इससे उनके अन्दर पली हीन भावना को संतुष्टि मिल रही है।

मेरे मम्मी- पापा ही नहीं बल्कि हमारे समाजशास्त्री यह खुली बात नहीं कह पाते कि मनुष्य प्रजाति में दलितवर्ग का उदय पराजितों के मध्य से हुआ है। विजेताओं ने हारे हुए हर जाति के लोगों को कपड़े बुनने, सिलने, बर्तन बनाने से लेकर मलमूत्र साफ करने तक के काम में जबरन लगा दिया।

युवावस्था के जोश में दो तीन साल तो ऐसे गुजर गये कि उनका पता ही नहीं चला। पतिदेव के अच्छे पढ़े- लिखे होने पर भी कहीं नौकरी नहीं लगी तो आर्थिक तंगी ने घेर लिया। मुझे प्रायवेट स्कूल में शिक्षक का कार्य करना पड़ा। रोहित घर-घर जाकर दिन-रात ट्यूशन पढ़ाने में जी तोड़ मेहनत करने लगा।

रोहित के माता-पिता अपने इकलौते पुत्र की संतान होने की प्रतीक्षा करते-करते थक गये। एक दिन मेरी सासू माँ सुमन जी मेरे पास आकर बैठ गई और प्यार भरी भाषा में बोली-‘बहू, मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि ब्याह को तीन साल हो गये, अभी तक बच्चे का डौल-डाल नहीं दिखा। तुम्हारी भाभी के तो इतने दिनों में दो बच्चे हो गये। तुम कोई दवा वगैरह लेती होगी जिससे बच्चा न हो?’

मुझे कहना पड़ा - ‘नहीं तो, माँ जी, मैं ऐसी किसी दवा का प्रयोग नहीं करती।’

'तो फिर बच्चे क्यों नहीं हो रहे हैं?'

मुझे एक ही उत्तर सूझा, तो मुँह से शब्द निकले - 'यह तो मगवान की मर्जी ही है।'

'अरे! बहू फिर तो किसी डॉक्टर को दिखाना चाहिए, इसमें देर करना ठीक नहीं है।'

मैंने उन्हें संन्तुष्ट किया - 'जी, मैं उनसे आज ही कहती हूँ।' यह कह कर काम के बहाने उनके पास से उठकर चली आई थी।

दूसरे दिन मेरे ससुर जी ने पास बुलाकर प्यार से समझाया - 'बहू, घर में कोई बच्चा हो तो उसके सहारे हमारा समय आनन्द से कटे। इससे ज्यादा हम तुम्हें कैसे समझायें?'

मुझे पिताजी की बात याद हो आई, जब तारा टूटता है तब किसी नये उद्देश्य के लिये ही उस आत्मा का जन्म होता है। रात में छत पर जाकर मैं बैठ जाती और टकटकी लगाकर टूटता तारा देखने की प्रतीक्षा करती रहती। कभी कोई टूटता तारा देखती तो अपने पेट पर हाथ फेरने लगती।

समय गुजरते, मेरा चित्त भी बच्चे के लिये व्याकुल रहने लगा। एक दिन मैंने रोहित से कहा - 'मैं चाहती हूँ, अपने बच्चा होता। मुझे कहीं किसी डॉक्टर को दिख देते। अपने ब्याह को अब तो चार साल से अधिक हो गये। कहीं मुझ में कोई कमी तो नहीं है। बड़े- बूढ़े कहते हैं, शुरू-शुरू में बच्चे हो गये तो हो गये बाद में टांपते रह जाते हैं।'

रोहित का मन भी बच्चे के लिये लालायित रहने लगा था। एक दिन वह मेरे से बोला - 'ठीक है अपने शहर में एक ही तो अच्छी डॉक्टरनी माथुर है। उन्हें ही कल तुम्हें दिखला लाता हूँ। मुझे भी लग रहा है कहीं कुछ कभी तुम में ही है। मेरे मैं कभी होती तो मैं ही तुम से दूर भागता। तुम्हें संन्तुष्ट ही नहीं कर पाता। बोल- तुम मुझ से संतुष्ट रहती हो कि नहीं।'

उनके कन्धे पर हाथ रखकर प्यार प्रदर्शित करते हुए मैंने उन्हें समझाया - ''हो सकता है जी, मुझ में ही कुछ कमी हो, इसीलिये तो मैं अपने को ही डॉक्टरनी को दिखाने की कह रही हूँ।'

दूसरे दिन हम दोनों डॉक्टर. मेडम माथुर के यहाँ जा पहुँचे। मैंने उनसे कहा - 'मेरा नाम तारा है।'

वे बोलीं- 'तुम्हारा नाम सुना है। मैं तुम्हें पहचान गई। अखबरों में तुम्हारा फोटो भी छपा था। तुम्हारे प्रेम विवाह की चर्चा पढ़ चुकी हूँ। कहें, आपको क्या समस्या है?'

मैंने कहा- 'मैडम, मेरे विवाह को चार वर्ष से अधिक हो गये हैं। अभी तक हमारे बच्चा नहीं हुआ है।'

इसके बाद उन्होंने मेरा अपनी तरह से परीक्षण किया और बोलीं - 'इस मामले में जाँचें तो पति-पत्नी दोनों को ही कराना पड़तीं है। मैं जाँचें लिख देतीं हूँ। कल तुम नहीं आ पाओ तो कोई बात नहीं है। तुम्हारे पति आकर मुझे जाँचे दिखा जायें। जाँच के बाद ही मैं दवा लिख दूंगी। आप लोग चिन्ता नहीं करें, जल्दी ही आप लोग माँ- बाप बनेगें।'

हम दोनों खुशी- खुशी पैथोलॉजी पर अपने टेस्ट कराते हुए लौट आये।

दूसरे दिन रोहित जाँच की रिपोर्टें डॉक्टर माथुर को दिखाने गये और उनसे विस्तृत बातचीत हुई। घर आते ही बोले- 'टेस्ट में आया है कि तुम कभी माँ नहीं बन पाओगी।'

मैंने कहा -'रिपोर्ट तो देखें - क्या लिखा है उनमें?'

वे बोले - उनमें मैंने यही लिखा देखा तो मैंने गुस्से में दोनों रिपोर्ट फाड़कर फेंक दीं। जब कुछ होना ही नहीं है तो वे रिपोर्ट हमारे किस काम की?'

मैं मन मार कर रह गई। लम्बा समय गुजर गया।

मैं रात में तारों की ओर देखती रहती शायद कोई तारा टूटता दिख जाये। इसी सोच में मुझे फीवर आ गया। मैं उन्हीं डॉक्टर मैड्म के पास इलाज कराने अकेली ही पहुँच गई। वे मुझे पहचान गई। बोली - 'तारा, हम तुम्हारे बारे में क्या कर सकते हैं? तुम्हारी रिपोर्ट में वाकई कोई कमी नहीं है किन्तु तुम्हारे पति में कमी है रिपोर्ट के अनुसार तुम उनसे कभी माँ नहीं बन पाओगी। अब तो तुम किसी दूसरे की सीमन लेकर माँ बन सकती हो।'

यह सुनकर मैं सन्न रह गई।

मैंने अपना संन्तुलन बनाये रखा।

रोहित से कुछ कहना उचित नहीं था। मम्मी-पापा बच्चे की रट लगाये थे। कहीं इस देवता की पूजा करते, कहीं किसी देवी पर प्रसाद चढ़ाते। कहीं किसी तांत्रिकों को ले आते तो इससे मैं मम्मी-पापा पर झुझला जाती।

इधर सासू माँ ने मुझे दोष देना शुरू कर दिया-'ये लड़की, हमारे लड़के पर ऐसी लट्टू हुई कि फिर इसने अपने माँ बाप और अपने समाज की इज्जत की भी परवाह नहीं की। अरे! आगे-पीछे कुछ नहीं देखा। मेरे भोले- भाले लड़के को चंगुल में फंसा लिया। वो सीधा- सच्चा इसके जाल में उलझ गया। इसके घर के राजी नहीं थे तो भी घर से भागकर कर कोर्ट मैरिज करली। पूरी ठल्ल है ठल्ल। न ब्याने की न वर्धने की। ये हमारे किस काम की। इसके आने से हमारी तो किस्मत ही फूट गई। ये हमारे लड़के का पीछा छोड़ जाये तो हम अपने लड़के का कहीं दूसरा ही ब्याह करलें।'

सुबह-शाम उठते-बैठते सासू माँ का रोज- रोज यही रोना-धोना शुरू हो गया, पर मैं उनके लड़के की कमी को कई बार सोचने पर भी व्यक्त न कर पाई। जब-जब कहने को होती जाने क्यों मुँह में ताला पड़ जाता।

हमारे स्कूल के स्टाफ शिक्षक मयंक राही एक अच्छे कवि थे, उनकी कवितायें प्रतीकों के माध्यम से श्रृंगार रस में सराबोर हुआ करतीं थीं। वे जब भी नई कविता लिखते, हमारे साथियों को इंटरवल के समय

जरूर सुनाते। यों बहुत दिनों से मुझे उसकी कवितायें सुनने का शौक हो गया था। उनकी कवितायें सुनने के बाद जो भी जी में आता कविताओं के बारे में कह देती। यों उनके नजदीक आती चली गई।

एक दिन हम दोनों अकेले अपने कक्ष में बैठे थे, वे बोले - 'तारा जी आप बुरा न माने तो क्या बात कहूँ?

मैंने सहज में ही कह दिया - 'जी कहें। '

वह बोले- 'आपके ब्याह को चार साल से अधिक व्यतीत हो गये हैं। अभी तक आपने कोई खुश- खबरी नहीं दी। कहीं आप दोनों में कोई कमी तो नहीं है। अरे! कमी हो तो हम कब काम आयेंगे? चलो आपको डॉक्टर को ठीक से दिखालाते हैं।'

'तुम्हें यह चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम दोनों चैक करा चुके हैं। कोई कमी नहीं है। हम अपनी आर्थिक स्थिति के कारण रुके हुए हैं। थोडा़ व्यवस्थित हो जायें तब कर लेंगे।'

मैं यह कह कर वहाँ से उठकर चली आई थी, लेकिन उसकी बात रह- रहकर मेरे मन में आ रही थी। मयंक राही कितने खुब सूरत व्यक्ति हैं। फिल्म अभिनेता की तरह सदा सजे- संवरे रहते हैं। मुझसे कितने आदर के साथ बात करते हैं। मेरी जरा सी तकलीफ देखकर परेशान हो जाते हैं। वे कह तो नहीं पा रहे लेकिन मेरी अन्तस् चेतना कहती है कि वे मुझसे प्रगाढ़ प्रेम करने लगे हैं।

क्यों न मैं उनसे प्रेम करके देख ही लूँ। अगर हम लोग संयोग से किसी दिन कभी निकट हो बैठे तो मेरी संतान की लालसा पूरी हो जायेगी।

अरे! मैंने क्या- क्या सोच लिया। ऐसा हो भी गया तो रोहित मुझे घर से निकाल ही देगा।

सम्भव है अपनी कमजोरी के कारण चुपचाप ही रह जाये। उस के माता-पिता की आँखें सिरा जायेंगीं।

उन दिनों मैं इसी द्वन्द में जी रही थी।

उन्हीं दिनों टेलीविजन पर 'महिमा शनिदेव की' पौराणिक सीरियल आ रहा था। रात आठ बजे से शुरू हो जाता। मैं उसे नियमित देखने लगी थी। एक दिन मैं यही सीरियल देख रही थी कि उसी समय रोहित भी आकर उसी सीरियल को देखने लगा- दिखाया गया कि देवताओं के गुरुदेव बृहस्पति की साख चरम पर थी। सभी देवताओं के साथ चन्द्रमा भी बृहस्पति का शिष्य था। उसका गुरुदेव के घर में अन्य शिष्यों की तरह आना-जाना जारी था। चन्द्रमा की निगाह गुरु की पत्नी तारा पर पड़ी। वह उनकी अतिसय सुन्दरता को देखते ही रह गया। लगता था किसी देवलोक की अपसरा ने बनवासी स्त्री के कपड़े पहन लिये हैं। रूप की ज्वाला जगमगा रही थी। प्रेम विव्हल चन्द्रमा ने उनसे अपने प्रेम का इजहार किया तो तारा ने उसका विरोध किया।

चन्द्रमा ने तारा को सम्मोहन शक्ति से अपने बस में कर लिया और मनमानी करने लगा। बृहस्पति को पता लगा तो वे आग- बबूला हो गये। चन्द्रमा ने उन्हें भी अपने सम्मोहन के **पॉस** में बाँध लिया,

इसलिये वे सब कुछ टुकुर- टुकुर देखते रहकर भी उसका विरोध नहीं कर पाये, बल्कि विक्षिप्त से हो गये।

चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी को जब यह बात पता चली, उन्होंने चन्द्रमा को समझाया - 'वे आपकी गुरुमाता है, आपकी माँ के समान हैं। यह बहुत बड़ा पाप है, आप यह ठीक नहीं कर रहे हैं।'

चन्द्रमा बोला- मैं उन्हें एक स्त्री के रूप में देखता हूँ। इससे अधिक वे मेरे लिए कुछ नहीं हैं।'

सीरियल में दिखाया गया कि साढ़े साती खत्म होते ही शनिदेव का न्याय चक्र घूमा, देवी तारा सम्मोहन से मुक्त हो गईं और चन्द्रमा की हरकत देखकर उनके तन-बदन में आग लग गई। उन्होंने चन्द्र को डाँटते हुए कहा-'नीच कामुक चन्द्र तुम्हारा बुरा हो। मैं शाप देती हूँ, तुम्हारी हमेशा-हमेशा के लिये सम्मोहन शक्ति चली जाये। जिससे तुम फिर कभी किसी के साथ ऐसा न कर सको।'

गुरु माता के शाप से चन्द्रमा की हमेशा-हमेशा के लिये सम्मोेहन शक्ति चली गई। गुरुदेव बृहस्पति का भी नशा टूटा। वे सम्मोहन से बाहर आये। उन्हें सत्याता का अहसास हुआ कि तारा और चन्द्र के प्रकरण में पत्नी तारा का कहीं भी कोई दोष नहीं है। क्यांकि चन्द्र के महा सम्मोहन जाल में वे खुद भी बंध गये थे।

सहसा बृहस्पति को लगा कि एक सुन्दरी स्त्री की नजर से देखने पर चन्द्रकी मुखाकृति और साज-सज्जा बृहस्पति से हजार गुना मोहक दिखती है।

उन्होंने तारा को पत्नी के रूप में ही अपना लिया।

उन्हें पता चला कि उनकी पत्नी गर्भ से है। वे फिर द्वन्द में फस गये थे। इसी उधेड़बुन में तारा के गर्भ से बुध का जन्म हो गया।

अब सवाल यह था कि बुध का पिता किसे कहा जायें?

बृहस्पति ने सारी बातें समझते हुए वुध की जन्म कुण्डली में पिता की जगह अपना नाम लिख दिया।

बृहस्पति द्वारा बनाई गई जन्म कुण्डली का दश्य टेलीविजन पर स्थिर हो गया था और एक मिनिट बाद ही वहाँ विज्ञापन आने लगा था। तारा मन ही मन सोच रही थी कि सीरियल की आज की कहानी के अंश को निर्माता की टीम ने जगमगाती बिजलियों, अभिनेताओ की बदलती मुखमुद्राओं और अंग संचालन के कौशल से बहुत प्रभावशाली ढंग से फिलमाया है।

रोहित उस सीरियल के प्रसंग को देखकर खिसियाते हुये बोला - 'तुम बड़ी विचित्र हो कि ऐसे रद्दी सीरियल देखती रहती हो।'

मैंने थोड़ी कड़क आवाज में कहा - 'आज के युग में ऐसी घटना होती तो पति देव पत्नी की गरदन ही काट डालते। बच्चे को जन्म लेने से पहले ही उसकी हत्या कर देते।'

वह कुछ सोचते हुए गम्भीर होकर बोला - 'आदमी को मजबूरी में सब कुछ सहना भी पड़ता है। ऐसी स्थिति होती तो सम्भव है आज का आदमी भी इस स्थिति को भी स्वीकार कर लेता।'

मैंने उत्तर दिया - 'रोज इतने बलात्कार हो रहे हैं, ऐसी बलात्कृता के प्रति घरवालों की सहृदयता कहाँ देखने को मिली है। लोगों ने अपने देवताओं से भी कुछ नहीं सीखा। बताओ इस स्थिति में गुरुपत्नी देवी तारा का क्या दोष था?'

रोहित को उत्तर देना पड़ा - 'लोगों को ऐसी स्थिति में अपना दृष्टिकोण बदल कर स्त्री के साथ व्यवहार करना चाहिए।'

यह कह कर वे मेरे पास से उठकर चले गये।

मेरा चित्त बारम्बार इसी प्रसंग की उधेड़बुन में रहने लगा।

कुछ दिन और गुजर गये। विद्यालय पहुँचते ही मयंक मेरे इर्द-गिर्द मड़राने लगता। जैसे ही उसे समय मिलता, कह देता - ''क्या सोच रहीं हो? मैंने तो अपनी सेवा का प्रस्ताव आपके समक्ष रख दिया है। आप चाहे तो... ।'

पता नहीं कैसे उस दिन उसकी यह बात सुनकर, मेरे चेहरे पर मुस्कराहट आ गई थी। यह बात उसने महसूस करली, तो बोला - 'चलो, आपने नाचीज की बात पर विचार तो किया। फिर कब...?

'मेरे मुँह से निकल गया - 'कहीं रोहित को पता चल गया तो वह मुझे मार ही डालेगा। आप भी जानते हैं उनका गुस्सा बहुत खराब है। वे फिर आगा-पीछा नहीं देखते। गुस्से में पागल हो जाते हैं। आपकी बातों में आकर मैं अपनी गृहस्थी उजाड़ना नहीं चाहती।'

वह बोला - 'मेरी गृहस्थी भरी पूरी है। घर में पत्नी, पुत्र, पुत्री हैं, यह आप सब जानतीं हैं। मैंने आपकी गृहस्थी उजाड़ी तो मेरी गृहस्थी कौन सी बची रहेगी। आप चिन्ता नहीं करें, उन्हें इस बात का पता ही नहीं चलेगा। हम कुछ दिन एक दूसरे को...।'

इस बात के बाद तो एक होटल के कमरे में हम दोनों मिलने लगे थे। सच कहूँ तो पहली बार जब मैं उससे मिलकर घर लौटी थी और अपनी छत पर रात को टहल रही थी कि मुझे एक चमकदार टूटता तारा मेरी ओर आते दिखा था तो मैंने प्यार से अपने पेट पर हाथ फेर लिया। कुछ ही दिनों में मुझे पता लग गया कि मैंने गर्भ धारण कर लिया है। यह बात मैंने मयंक से छिपा कर रखी।

मैं यह जानकर मयंक से दूर रहने का प्रयास करने लगी तो यह बात उसे खटकने लगी। वह एक दिन गुस्सा हो उठा तो मैंने ठंडे स्वर में कहा - 'आप ने संन्तुलन खोया तो मैं रोहित से कहने पर मजबूर हो जाऊँगी। आपकी पत्नी और बच्चे यह बात सुनेंगे तो आप समझ लें, आपके बच्चे बड़े हो रहे हैं। उन पर इस बात का क्या असर पड़ेगा? हम दोनों के हित में ही यह बात ठीक नहीं रहेगी। मैं आपकी बातों में आकर भटक गई। इसका मतलब यह तो नहीं कि दो गृहस्थी बर्वाद हो जाये।'

इस तरह मैंने मयंक का मुँह बन्द कर दिया।

अब एक ही चिन्ता मुझ पर सवार हो गई कि अपनी इस बात को रोहित को कैसे बतलाऊँ? एक रात हम दोनों बिस्तर पर दैनिक मिलन के बाद सुस्त पड़े थे। मैंने धीरे से कहा - 'जी आज माँ जी कह रहीं थीं कि मैं माँ बनने वाली हूँ। मैंने तो मम्मी से कह दिया- मम्मी जी मुझे तो ऐसी कोई बात नहीं लगती।'

वे बोली- 'मुझे न बना। मैं पूरी नजर रखे हूँ। इस माह तेरा महीना खंद गया कि नहीं। बोल?'

मुझे मम्मी से कहना पड़ा, महीना तो खँद गया है। यह सुनकर वे बड़ी खुश हो रहीं थी। वे कह रहीं थीं- 'मैंने अपने शहर के राम मन्दिर पर अखण्ड रामायण बोल दी थी। राम जी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है।'

मम्मी बिना नागा किये छह माह से वहाँ रोज परिक्रमा लगा रही हैं। वे कह रहीं थीं - 'उन्होंने मेरी प्रार्थना सुन ही ली है। यह कह कर वे मेरे पास से चलकर पापा के पास पहुँच गईं और उन्होंने यह बात पापा जी से भी कह दी है। पापा जी यह बात सुन कर बहुत खुश हो रहे थे।'

यह सुन कर रोहित के मुँह से निकला - 'यह सम्भव नहीं है।'

मैंने उसके मन की बात समझते हुए कहा - 'क्यों सम्भव नहीं है! तुम रोज मुझसे मिलते हो कि नहीं? हमारे मिलन में कोई कमी दिखी क्या? बोलो। अरे! इसे क्या मैं कहीं और से ले आई। तुम्हें बच्चा होना ठीक नहीं लग रहा है तो ले चलो मुझे मैड़म डॉक्टर के यहाँ, इसे गिरा देते हैं।'

वह बुदबुदाते हुए बोला- 'तुम्हारी बात सच मान लू तो फिर डॉक्टर वाली बात पूरी तरह झूठी हो जायेगी।'

मैं उठकर बैठ गई और बोली- 'देखो जी इन पैथोलॉजी और अस्पतालों में परेशान मरीजों का मेला लगा रहता है। यह भी तो हो सकता है कि किन्हीं और की रिपोर्ट पर गलती से हमारा नाम लिखा हो गया हो।

अब तक वह सन्तुलन में आ चुका था। बोला - 'चलो, यह तो खुशी की बात हुई।'

उसके बाद उसने प्यार से मेरे पेट पर हाथ फेर कर देखा। मैं देख रही थी। उसके चेहरे के भाव क्षण-क्षण बदल रहे थे। मैं समझ गई यह अब मेडम डॉक्टर के यहाँ जरूर जायेगा। इसलिये यही सोच कर मैंने कहा - 'मैं चाहतीं हूँ एक बार आप मुझे डॉक्टर माथुर को दिखा लाते।'

वह झट से बोला - 'इतनी जल्दी क्या है? अब बच्चा कहीं भाग तो जायेगा नहीं। कुछ दिन और निकलने दो, उन्हें दिखा लाऊँगा।'

यह कह कर वह करबट बदलकर लेट गया। । मैं समझ गई- वह अपनी पुरानी रिपोर्ट लेकर डॉक्टर मेडम के यहाँ यही सब पूछने जरूर जायेगा। वे सब समझती हैं, स्त्री हैं। उन्हें कह देना चाहिए- रिपोर्ट गलत भी हो सकती है। कहीं उन्होंने रिपोर्ट को सही कह दिया फिर...फिर तो मेरी खैरियत नहीं है।

उसी समय मुझे याद हो आया गुरुदेव बृहस्पति की पत्नी तारा का वही प्रसंग। जिसमें गुरुदेव ने तारा को दोषी नहीं माना। यहाँ दोषी मैं भी नहीं हूँ। जीवन के लिये यह बात मेरी मजबूरी हो गई। इस बात को

लेकर रोहित को कौन समझाये! अपनी कमजोरी उसने भी मुझ से भी तो छिपा कर रखी है। दोषी तो वह भी है। आदमी का स्वभाव है वह अपने दोष नहीं देखता। इस तरह मैं जाने क्या-क्या सोचती रही?

आज वह देर रात घर लौटा। मम्मी उससे यह देख कर लड़ ही पड़ीं - 'हमने कितने देवी- देवता पूजे हैं तब कहीं ये दिन देखने को मिला है। आज तू जाने कहाँ चला गया था, तारा बहू ने अभी तक न कुछ खाया है न पिया है, अरे! ऐसे में हमारे बच्चे पर क्या असर पड़ेगा, यह सोचा है तूने?'

मैं देख रही थी वह चुपचाप मम्मी की बातें सुन रहा था। उसके पास उनकी बात का कोई जबाव नहीं था। वह चुपचाप मेरे पास आकर लेट गया। रात भर करवटें बदलता रहा। सुबह घर से जाते समय मुझे सुनाकर मम्मी से बोला - 'मम्मी आज से तुम्हारी बहू अब विद्यालय पढ़ाने के लिये नहीं जायेगी। '

यह कह कर वह चला गया था। उस दिन के बाद मैंने विद्यालय जाना बन्द कर दिया था।

इन दिनों रोहित की मनः स्थिति उसके चेहरे से पढ़ने का प्रयास करने लगी थी। उसके रूखे व्यवहार से कभी- कभी लगता, वह मुझे तलाक देने की बारे नहीं सोच रहा है। कभी लगता- इसने इस बच्चे को पिता का नाम नहीं दिया तो इसका जीवन ही विवादित हो जायेगा। यह सोचकर मैंने आज सुबह साहस करके पूछ लिया - 'आपका व्यवहार बदला-बदला सा है। जिस दिन से तुम्हारा ये बच्चा पेट में आया है, तुम गुम- सुम से हो, या तो तुम अब भी संतान नहीं चाहते हो या फिर तुम...।'

रोहित ने उत्तर दिया - 'ऐसा कुछ नहीं। फिर मैड़म माथुर, कह रहीं थीं कि जिस तरह बच्चे बन्द करने के ऑपरेशन असफल हो जाते हैं उसी तरह यह रिपोर्ट भी फैल हो गई हो।'

मैंने मुस्काते हुए कृत्रिम गुस्से में आँखें तरेरकर कहा - 'मुझे तुम्हारी यह बात अच्छी नहीं लगी कि तुमने मुझसे असली रिपोर्ट छिपा कर रखी।'

'तारा, मुझे क्षमा करें, मुझे यह बात तुम से छिपाना नहीं चाहिए थी।' उसी वजह से मेरे दिमाग में सन्देह का कीड़ा रेंगने लगा था।

श्री रंगोपाल भावुक - कमलेश्वर कोलोनी; डबरा भवभूतिनगर जि. ग्वालियर - म. प्र. 475110 मो 9425715707, 8770554097 - Email - tiwariramgopal5@gmai.com

कहानी - मास्टर मोतीलाल के दिए - आचार्य राजेश कुमार

हम आपकी मुलाकात अपने गाँव के एक अजीब आदमी से करवाना चाहते हैं। नाम- मास्टर मोतीलाल। काम- पढ़ाना। जमापूँजी- एक टूटा-फूटा कच्चा घर, जिसमें ज़रूरत की चीज़ें भी पूरी तरह से नहीं हैं।

शरीर कमज़ोर है, लेकिन चेहरे पर अपूर्व शांति हैं। कपड़ों से ग़रीबी झलकती फिरती है, लेकिन आँखों में संतोष जगमगाता है। बाल सफ़ेद हो चुके हैं, लेकिन उत्साह अभी जवान है।

आप कहेंगे कि इसमें अजीब क्या है? ऐसे तो बहुत सारे लोगों को हम जानते हैं, बल्कि एक तो यहीं पड़ोस में रहता है।

दरअसल, अजीब बात यह है कि दिवाली की रात जब सारा गाँव रोशनी में झिलमिल करता हुआ तारों को शर्मिंदा करता है, तो मास्टर मोतीलाल का घर अंधकार में डूबा रहता है। इतनी दिवालियाँ आईं और गईं, लेकिन उनके मन में मास्टर के घर में एक जलता दिया देखने की साध बनी रही।

आप कहेंगे कि कोई दुख होगा बेचारे को, जो उनके जीवन की सारी दिवालियों को काला कर गया होगा। इस दिन घर में कोई मौत हो गई होगी या चोरी-चकारी हो गई होगी या फिर ऐसी हो कोई दुखद दुर्घटना हो गई होगी, जो अपने साथ उनके सुखों और उजालों को भी ले गई होगी।

लेकिन यदि हम कहें कि आपका अनुमान एकदम ग़लत है और ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, जो मास्टर जी के हाथ को दिया जलाने से रोकता, तब तो आपको ज़रूर अचंभा होगा। या नहीं? आप ज़रूर पूछेंगे कि ऐसी कौन-सी बात है कि मास्टर मोतीलाल दिए नहीं जलाते? क्यों?

आपकी जिज्ञासा जायज है, लेकिन हम इसके बारे में आपको क्या बता सकते हैं भला! इस विषय पर यदि कोई व्यक्ति रोशनी डाल सकता है, तो वे तो खुद मास्टर मोतीलाल ही हैं। तो क्यों न उन्हीं से क्यों न पूछा जाए?

मास्टर मोतीलाल से मिलना भी अपने आपमें एक शानदार अनुभव है। उनकी मीठी मुस्कान आपको उनके इतना नज़दीक ले आएगी कि फिर आप उनसे किसी भी तरह की कोई भी बात करने से नहीं हिचकिचाएँगे। फिर इतने प्रेम से वे आपका, आपके परिवार के लोगों का और यहाँ तक कि आपके पालतू जानवरों वगैरह का भी हालचाल पूछेंगे कि आपकी सारी चिंताएँ और समस्याएँ अपने आप ही बिला जाएँगी। आप घंटों उनके पास बैठे उनकी बातें सुनते रहेंगे, और आपको लगेगा कि अभी दो घड़ी पहले ही तो आया था। लेकिन बातों-बातों में आप मास्टर जी से असल बात पूछना मत भूल जाइएगा। अरे, क्या भूल भी गए? भई, आपको उनसे पूछना है कि दिवाली के रोज़ आप दिए क्यों नहीं जलाते?

आपका संकोच-भरा सवाल सुनकर मास्टर जी अपनी मधुर मुस्कान बिखरते हुए कहेंगे - "बस बेटा, ऐसी कोई बात भी नहीं है? मन ही नहीं करता। "

आपका मन चाहेगा कि इस बात पर भरोसा कर ले, हमारी सलाह है कि आपको इस बात से संतोष नहीं होना चाहिए। आपको कहेंगे - "बुरा मत मानिए मास्टर जी, लेकिन कोई तो बात होगी! आप नहीं बताना चाहते, तो न बताएँ। मैं तो बस यों ही पूछ रहा था।"

"मास्टरों की ज़िंदगी तो सबके लिए एक खुली किताब की तरह होती है, बेटा!" मास्टर जी मुस्कराते हुए आपके कंधे पर हाथ रख देंगे और आपको लगेगा कि आपने नाहक यह बात उठाई। नहीं दिए जलाते, तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ता है। आप चाहेंगे कि मास्टर जी सवाल का जवाब न दें, और ऐसा कुछ हो जाए कि आप उनके पास से उठकर तुरंत चले जाएँ।

मास्टर जी आपके मन की बात जान लेंगे, इसलिए वे जवाब नहीं देंगे। वे कहेंगे - "बेटा, तुम कल सुबह रामदीन के घर जाना, फिर वहाँ से मस्जिद जाना जहाँ तुम्हें असलम मिलेगा, वहाँ से तुम कलक्टर के दफ़्तर में जाकर उनके चपरासी बलवंत से मिलना। तब तक दिन ढल जाएगा, अतः तुम प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में जाकर प्रकाश से मिलना। "

हुई न आपके मन की बात! मास्टर जी ने जवाब तो नहीं ही दिया, बल्कि आपके जाने का रास्ता भी साफ़ कर दिया। आप "जान बची सो लाखो पाय" कहते हुए हाथ जोड़कर उठ आएँगे। लेकिन आते-आते सोचेंगे कि आदमी सचमुच अजीब है। इसने सवाल का जवाब देने की बजाय इन लोगों से मिलने के लिए क्यों कहा! यह भी कोई बात हुई! छोड़ो, अपने को क्या लेना-देना! जैसा भी है, आदमी कुल मिलाकर ठीक ही है। आप सब बातें भूलकर घर आकर चैन से सो जाएँगे। लेकिन सुबह उठते ही मास्टर मोतीलाल आपके विचारों में चले आएँगे। किसी भी कोण से आपका मन उन्हें मूर्ख मानने को तैयार नहीं है। तो? चलो, उनके द्वारा बताए गए एक-आध आदमी से मिलकर देखा जाए कि माज़रा आखिर क्या है? पहले कहाँ जाने के लिए कहा था, अँ... हाँ... रामदीन के घर।

रामदीन के घर के बाहर पहुँचकर आप दंग रह जाएँगे। क्या गाँव में भी कोई आदमी इतनी सफ़ाई और सलीके से रह सकता है! बाहर से ही घर जैसे बुलाता-सा लगता है। घर के आँगन में छोटी-छोटी क्यारियों में फूल-पौधे झूम रहे हैं। एक ओर पालतू पशुओं का बेड़ा है, जिसमें गंदगी का कहीं निशान तक नहीं है। घर के लोग अपने-अपने कामों में लगे हैं, लेकिन कोई अफरा-तफरी, उठापटक तक नहीं है - शोर-शराबा, चिल्लाना, गाली-गलौच तो फिर दूर की बात है। आपको घर की ओर देखता पाकर रामदीन के पिता पूछेंगे - "बेटा, किससे मिलना है?"

"जी, रामदीन से!" आप कहेंगे।

"तो चले आओ, बेटा।" वे दरवाज़े पर उठकर आ जाएँगे। आपको प्रेम से लेकर जाएँगे, और पाँच ही मिनट में रामदीन के बारे में इतनी ढेर-सी बातें बता देंगे कि आपको लगेगा कि गृहस्थ हो, तो रामदीन जैसा।

रामदीन सुबह-सवेरे उठता है। भगवान का नाम लेता है, फिर माता-पिता के चरण छूकर उनके हालचाल पूछता है। इसके बाद कुछ देर अपनी बीवी और बच्चों के पास बैठता, बतियाता है, उनके हालचाल लेता

है, उनकी ज़रूरतों के बारे में पूछता है, और फिर गाय-भैंस और अपने कुत्ते को दुलारता है। घर के लोगों की काम में मदद करता है और घर की समस्याएँ सुलझाता है। कभी ऊँचा नहीं बोलता। शाम होते ही घर लौट आता है। कोई ऐब नहीं है। ज़्यादा धन-दौलत कमाने की लालसा नहीं है। ख़ुश रहता है और सबको ख़ुशी बाँटता है।

इतने में रामदीन भी आ जाएगा। इतने प्रेम से मिलेगा, मानों आप उसके सगे-संबंधी हैं। उसे देखकर ही लगेगा कि उसके पिता ने उसके बारे में जो कुछ बताया था, वह उस सबसे कहीं अधिक गुणवान और अच्छा इंसान है। आपको लगेगा कि हमारी भाषा कितनी कमज़ोर है - पूरी बात वह बता ही नहीं पाती। कभी जितना बताती है, उससे कहीं ज़्यादा छिपा लेती है; और कभी जितना बताना चाहिए, उससे कहीं ज़्यादा बता देती है।

इस मुलाक़ात से आप उत्साहित होंगे और उस घड़ी को धन्यवाद देंगे, जब आपने इन लोगों से मिलने का फ़ैसला किया, वरना आपको इतनी अच्छी बात पता नहीं चलती और आप इतने अच्छे व्यक्ति से मिलने से महरूम रह जाते। आप चाहते हैं कि तुरंत दूसरे व्यक्ति से भी मिला जाए।

अब आपको जाना है, मस्जिद। आइए, इस रास्ते से चले आइए। यहाँ से अंदर पैर रखते ही आप मस्जिद में ही होंगे। क्या कह रहे हैं? यह तो आपको मस्जिद की बजाय मंदिर अधिक नज़र आता है! यहाँ तो मुसलमानों की बजाय हिंदू अधिक नज़र आ रहे हैं। नहीं जनाब, यह मस्जिद ही है। आइए, एक हिंदू से ही पूछ लिया जाए - "अरे भाई, ज़रा सुनना! यह मंदिर है या मस्जिद?"

"क्या फ़र्क पड़ता है, साहब!" वह जवाब देगा, "मंदिर हो या मस्जिद, दोनों ही तो भगवान के स्थान हैं। यह तो हम लोगों के देखने का ढंग है कि उसे राम के रूप में देखें या रहीम के - ईश्वर अल्ला तेरो नाम। जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। इसलिए हम मंदिर में भी उसी भाव से जाते हैं, जिस भाव से यहाँ मस्जिद में आते हैं। हमें तो दोनों ही जगह एक जैसी शांति, सुख, और संतोष मिलता है। धर्म का काम तो जोड़ना है, तोड़ना नहीं। तोड़ने वाले तो मंदिर का भी बँटवारा करके एक-एक ईंट अपने घर ले जाने की फ़िराक में रहते हैं। पर हमारे यहाँ ऐसा नहीं है। हमारे पंडित यहाँ आते हैं और यहाँ के मौलवी साहब हमारे मंदिर में जाते हैं। आइए, मैं आपको मौलवी असलम साहब और पंडित दातादीन जी से मिलवाऊँ। वे ही हमें ऐसी अच्छी बातों की शिक्षा देते हैं। "

अहंकार, स्वार्थ, संकीर्णता और कटुता से मुक्त सरल, सादगीयुक्त, निर्मल, और उदार इन दोनों ही देवदूतों को छोड़ने का जी तो नहीं चाहता, लेकिन कलक्टरी बंद होने को है, और अभी वहाँ बलवंत से आपको मिलना है।

आप इन लोगों से विदा लेकर जल्दी से कलक्टरी पहुँचेंगे। लेकिन बलवंत तो यहाँ है ही नहीं। कहीं काम से गया लगता है। आइए, पूछा जाए। उसका साथी चपरासी पूछने पर छूटते ही कहेगा - "क्या काम है, साहब! मुझे बताइए। बलवंत तो बेकार का आदमी है। न तो किसी से एक भी पैसा लेता है, न कोई भेंट-बख्शीश। ख़ास कलक्टर के दफ़्तर में लगा है। चाहे, तो रोज़ सो-पचास पीट ले जाए। लोग नोट लिए-लिए उसके आगे-पीछे घूमते रहते हैं, पर मज़ाल है कि उनकी ओर देख भी ले। ग़लत काम होने नहीं देता और

ठीक काम करवाने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना बहाने को तैयार रहता है। आपको क्या काम है? मैं करवा दूँगा। "

"नहीं, हमें तो बस उससे मिलना ही था। " आप कहेंगे।

"हाँ साहब, मिलने लायक तो आदमी वही है। " उस चपरासी के मुँह से 'आह' जैसी निकलेगी, "आदमी हो, तो उसी के जैसा। हम लोग कोई आदमी थोड़े ही हैं। हम तो स्वार्थ के पुतले हैं। हम कितना चाहते हैं कि उसके जैसे बनें, पर क्या कोई आसान है उसके जैसा बनना! गया होगा किसी ग़रीब का काम करवाने के लिए। "

बलवंत से मिलने की ज़रूरत अब नहीं रह जाएगी। शाम भी ढल चुकी होगी। चलिए प्रौढ़ शिक्षा केंद्र चलें और देखें कि प्रकाश जी क्या गुल खिला रहे हैं। शायद आते-आते हमें देर हो चुकी है। प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में बहुत से लोग बैठे हैं, और उन्हीं के बीच बैठे प्रकाश जी बातचीत जैसे माहौल में उन्हें पढ़ा रहे हैं। नहीं, वे उन्हें क-ख-ग या दो दुनी चार करना नहीं सिखा रहे, बल्कि वे तो उन्हें रोज़ाना के जीवन में काम आने वाली बातें सिखा रहे हैं - अपनी सफ़ाई रखने के लाभ क्या हैं? अंधविश्वास क्या नुकसान देता है? बिना विचारे कोई काम क्यों नहीं करना चाहिए? स्त्रियाँ पुरुषों के समान क्यों हैं? हमारा आचरण अच्छा क्यों होना चाहिए? शूद्र क्यों छोटा और ब्राह्मण क्यों बड़ा नहीं है? कोई भी काम छोटा क्यों नहीं होता? इन और ऐसी ही बहुत-सारी बातों को प्रकाश जी बहुत सरल, स्पष्ट, और प्रभावी ढंग से लोगों के सामने रख रहे हैं और लोगों के चेहरों पर छाया प्रशंसा का भाव तो यही ज़ाहिर करता है कि उनकी बातों का असर कर हो रहा है। लोग अपनी शंकाएँ भी उनके सामने रख रहे हैं और प्रकाश जी दैनिक जीवन के रोचक उदाहरण देकर और लोगों में आपस में चर्चा करवाकर उनका समाधान कर रहे हैं। प्रकाश जी तो वास्तव में अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं।

आपकी तबीयत प्रसन्न हो गई न इन लोगों से मिलकर और इनकी विशेषताएँ जानकर। आप यही सोच रहे हैं न कि अगर ऐसे ही व्यक्ति समाज में हों, तो इसकी बहुत-सी समस्याएँ तो अपने आप दूर हो जाएँ। हर जगह उजाला फैल जाए।

हूँ, आपके मन में अभी भी एक सवाल है। आपका सवाल यह है कि इनकी अच्छाई तो ठीक है, बहुत अच्छी और अनुकरणीय बात है, लेकिन इनका मास्टर मोतीलाल से क्या लेना-देना है, और उन्होंने इनसे मिलने को क्यों कहा था?

चलिए, इतना तो हम भी आपको बता सकते हैं। रामदीन जो इतना अच्छा गृहस्थ है, मौलवी असलम जो सचमुच धर्म का सच्चा अर्थ लोगों को बताते हैं, चपरासी बलवंत जो भ्रष्टाचार को दूर से ही सलाम करता है, और मास्टर प्रकाश जो लोगों के जीवन के अंधकार को शिक्षा की रोशनी से जगमग कर रहे हैं - ये सब-के-सब और ऐसे ही अनेक लोग मास्टर मोतीलाल के शिष्य हैं। इन सभी की रोशनी मास्टर मोतीलाल ने ही जागृत की है। और इन सभी की जगमगाहट मास्टर मोतीलाल के ही प्रकाश के कण हैं।

तो... हाँ, अब आप समझ गए। मास्टर मोतीलाल जब समाज में ये जीते-जागते दिए जला रहे हैं, तो उन्हें मिट्टी के क्षणिक प्रकाश देने वाले दिए जलाने की भला क्या ज़रूरत है?

आचार्य राजेश कुमार - संपादक, विश्व हिंदी कोश, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिक्षा विभाग, भारत सरकार, सी-205, सुपरटेक इको सिटी, सेक्टर, 137, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201305 - मो. 9687639855, ईमेल drajeshk@yahoo.com

कुंडलिया - श्री भाऊराव महंत

[1]

दीवाली में दीप से, सजा उसी का मंच।
जनता ने सुनकर जिसे, बना दिया था पंच।
बना दिया था पंच, देख उसकी अच्छाई।
लेकिन वह तो सत्य, दुष्ट निकला हरजाई।
जिससे थी उम्मीद, हरेगा रातें काली।
छीन और के दीप, मनाता है दीवाली। ।

[2]

दीवाली अब आ गई, बच्चे माँगे वस्त्र।
बीवी बोले साड़ियाँ, लेकर बेलन अस्त्र।
लेकर बेलन अस्त्र, सभी चीजें मँगवाती।
दे देकर के धौंस, काम मुझसे करवाती।
कह 'महंत' कविराय, जेब अब मेरी खाली।
कैसा यह त्यौहार, गरीबी में दीवाली। ।

श्री भाऊराव महंत - बालाघाट, मध्यप्रदेश - मो. 9407307482

लघुकथा - लक्ष्मी जी के चरण चिन्ह - श्री प्रशान्त चतुर्वेदी

दीवाली आ गयी थी और गया प्रसाद जी के घर पर तैयारियाँ अंतिम चरण में थीं। गया प्रसाद जी बाजार के काम प्रायः निपटा चुके थे। बच्चे बाहर थे और इस दीवाली उनके आने का कोई कार्यक्रम न था। उनकी पत्नी सविता घर पर तैयारियों को अंतिम रूप देने में जुटी थीं। इस काम में और विशेषकर साफ-सफाई में उन्हें काम वाली बाई जमना की मदद की जरूरत थी। जमना को आया देख वे खुश तो हुईं, लेकिन देर से आने का उलाहना दिये बिना न रह सकीं। जमना के साथ उसकी बेटी रमा भी आयी थी। जमना ने बताया कि आज रमा के स्कूल की छुट्टी है तो वो भी साथ आ गई है। सविता जी को आश्वस्त भी किया कि वे चिंता न करें, रमा घर के बाहर ही खेलती रहेगी।

रमा बाहर खेल रही थी, इतने में किसी काम से सविता जी बाहर की तरफ आईं। रमा के मिट्टी से सने पैरों की छाप घर के मुख्य द्वार के बाहर देख कर भड़क गयीं। डाँटते हुए जमना को बुलाया और अच्छी तरह सामने का फर्श धुलवाया। इसके बाद रमा को बाहर खदेड़ने के बाद विशेष तौर से बाजार से लाए गए लक्ष्मी जी के सजावटी चरण चिन्ह मुख्य द्वार के बाहर जमा कर उन्होंने चैन की साँस ली। गया प्रसाद जी सब कुछ देख रहे थे। उनके मन में विचार आया कि लक्ष्मी जी के असली चरण चिन्ह तो धुल गये और उनकी जगह नकली चरण चिन्हों ने ले ली है। पत्नी से यह कहने की हिम्मत वे जुटा नहीं पाये। उन्हें दीवाली भी तो मनानी थी।

श्री प्रशान्त चतुर्वेदी

कहानी - प्रेमान्त –श्री राजा सिंह

रायल कैफे के सामने सिनेमा हाल है। सामने रोड के बाद, काफी खाली जगह है। उस जगह स्टैंड है। उस जगह पर काफी चहल-पहल है। हाल के सामने फुटपाथ नहीं है। हजरतगंज चौराहे से लेकर हलवासिया तक रोड डिवाइडर नहीं है। दोनों तरफ के फुटपाथ अक्सर भरे रहते है। पब्लिक से कम, हाकर्स और छुटपुट सामान बेचनें वालों से ज्यादा। छतरीटाइप हैंगर में जींस, टाप और लोवर भी बेंच रहें है। यदा-कदा बेमन के ग्राहक रूक जाते हैं। कुछ धीरे से, विदेशी माल लेने के लिए कान में फुसफुसाते हैं। कोई-कोई उनकी बातों में आकर फंस भी जा रहा है।

सितम्बर... बारिश से उँबा, उकताया महीना। महीने के प्रारम्भ के दिन।

मैं टहल रहा हूँ। सिनेमा से आगे बढकर। फुटपाथ में चढकर। कभी आगे कभी पीछे। लवलेन से लेकर यूनीवर्सल बुक स्टाल तक। बुक स्टाल खुलने की प्रक्रिया में है। आदमी मेरी तरफ देखता है। सोचता है, ग्राहक है। मैं दूसरी तरफ देखकर आगे बढ़ लेता हूॅ। कैफे के सामने वाली जगह पर, वही से वह ठीक से दिखाई पड़ती है।

मैं पिछली रात नहीं सो पाया। अक्सर जब नींद आने को होती है, लेटते ही गायब हो जाती है। मुझे नींद नहीं आती। मुझे यहॉ आना था ओर रात भर में यही सोचता रहा कि मैं यही आऊँगा। यहीं साहू सिनेमा के पास खड़ा रहूँगा। मैं उस सड़क की ओर देख रहा हूँ, जिधर से उसे आना है। उस स्थान को देखता हूॅ, जहॉ पर वह हमेशा आटो से उतरती हैं। सलीके-और सावधानी से वह सिनेमा की तरफ देखती है। उसकी आंखें तलाशती हैं, और धीमे कदमों से चलती हुई मेरे सामने।

उसकी प्रतीक्षा करना अच्छा लगता है। मैं खुद जानबूझकर समय से पहले आता हूँ। वह सदैव समय के बाद आती है। कोई उसका इन्तजार करें, उसे यह अच्छा लगता हैं। उस पर असर करता है। मुझे उससे मिलने से ज्यादा आवश्यक कुछ और नहीं लगता, इसका यह मतलब नहीं है कि मेरे पास और कुछ आवश्यक नहीं हैं।

समय गुजर रहा है। एक ही जगह खड़े रहना, एक ही दिशा में ताकते रहना ठीक नहीं लगता। मैं घूरती आँखों से बचता हुआ, एक बार फिर किताबों की दुकान के सामने हूँ। इस बार दुकान में भीड़ है। मैं दुकान में जाने में हिचकता हूॅ, कि इसी बीच वह आ गई तो!... मेरा समय से पूर्व आना निरर्थक सिद्ध होगा।

यह लखनऊ है और सितम्बर के पहले दिनों में बूंदें भी गिर सकती हैं। रात में शायद बूंदें गिरी थीं। मैं जग रहा था। मेरे कमरे की टीन की छत पर संगीत बजा था फिर खो गया। ...अगर बारिश हो गई तो आयेगी क्या? मैं एक जगह कोने में खड़ा हूँ और उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। वह आती होगी।

मैं जानता था, वह समय आयेगा, जब रायल कैफे के सामने खड़ा होकर प्रतीक्षा करूंगा। कल शाम उसकी कॉल आयी थी। कहा था दस बजे कैफे के सामने मिलेगी। उसने कुछ और नहीं कहा था। ...मेरे लिखे के उत्तर में वह आ रही थी। उसने मेरे लिखे का कोई जिक्र नहीं किया था, जिसके कारण वह आ रही थी। हम दोनों के बीच लिखा-पढ़ी नहीं थी। हम दोनों मिलते ज्यादा थे, बोलते कम थे। वह बहुत कम बोलती थी। जैसे एक लम्बे लेख पर सूक्ष्म टिप्पणी। मौन ही उसकी भाषा थी। ...

उस दिन हम दोनों अम्बेडकर उद्यान में गये थे। घास पर चलते हुए, उसका चहकना। तितलियों और भौंरों से विहँसना। पेड़ों से लिपटना। डालियों से लटकना। फिर हम दोनों ने अपने जूतों-चप्पलों का पीढ़ा बनाकर घास में बेफिक्र बैठे थे। एकदम सटें-सटें, एकदम निकट। निकटता स्पर्श कर रही थीं शारीरिक और कहीं दूर गहरे मन स्थल पर। तुम गम्भीर थीं और आसक्त भी। तुम्हारी अशक्तता समीपता के सन्निकट करती जा रही थी। तुम्हारा सर मेरे कंधे पर टिक गया था और तुमने आंखें बन्द कर लीं। मेरी आंखें और चेतना दोनों खुली थी। मैं आसपास सतर्कता से निहार रहा था। कोई देख रहा है क्या? ...कभी एकान्त में, मैं उसे धीरे से अपने पास खींचता, तो बहुत नम्रता पूर्वक अपने को अलग करती और कहती... प्लीज ये नहीं। आज क्या हुआ? ... वातावरण का असर है... या दमित इच्छायें...।

तुम बुदबुदा रही हो, परन्तु मुझे साफ सुनाई पड़ रहा है। आई लव यू-विकी, ... आई लव यू-विकी... आई लव यू-विकी ... की ध्वनि गूँज रही है और चारों तरफ की हवा में घुल रही है। इन शब्दों-वाक्यों की तासीर रूमानियत मेरे जेहन में समाती जी रही थीं बहुत कुछ बाहर निकलना चाह रहा था। ... आई लव यू टू-नाजिया, का प्रलाप बाहर निकलने को आतुर ... परन्तु नहीं हो पाया। ... कुछ शब्द ऐसे हैं, जो मैंने आज तक नहीं कहें। ये शब्द जेहन में पड़ रहते है, जिन्हें हम बाहर नहीं निकाल पाते। वह पड़े ही रहते, उचित अवसर की प्रतीक्षा में, एक सुरक्षित कोष की तरह। इन्हें नष्ट भी नहीं किया जा सकता हैं क्यों कि ये प्रिय शब्द हैं। वह नीचे झुक आई थी। मैंने उसकी तंद्रा तोड़ दी और धीरे से पूछा-

- तुम पहले कभी यहॉ आयी हो?

- नहीं उसने मेरी तरफ झपकती ऑखों से देखा। उसकी ऑखों में अपने प्रेम के प्रति उत्तर से असम्बन्धित प्रश्न से उपजी छटपटाहट थी।

- क्यों? यह तो तुम्हारे शहर में है।

- मेरे घर चौक के पास काफी अच्छे, पुराने पार्क हैं, वास्तविक इतनी दूर कृत्रिम पार्क देखने कौन आये? वह अनमनी हो गई।

नजिया वापस चल दीं। उसकी ऑखें मेरे पर टिकी थीं, किसी उत्तर की तलाश में। जब मेरी ऑखें उसकी निगाहों से टकराईं तो उसने उसे हटा लिया। शायद छलक आई थी। उसकी ऑखों में निरीहता उतर आई

थी। अपने प्रणय अभिव्यक्ति की स्वीकृत/अस्वीकृत के बोझ तले या उस प्रश्न को उपेक्षित किए जाने को लेकर।

जब वह आयी मैं उसके बारे में नहीं सोंच रहा था जब प्रतीक्षा लम्बी हो जाती है, तो जिसकी प्रतीक्षा हो रही होती है वह पृष्ठभूमि में चला जाता है, और सामने दिख रहे पर उलझ जाता है। मेरे साथ तो अकसर ऐसा होता है। जब वह आयी तो मुझे कुछ भी पता नहीं चला। मैं सिनेमा के पोस्टर देख रहा था। नायक-नायिका की खूबसूरती और निकटता में खोया हुआ था और वह मेरे पास चली आयी बिलकुल पास, एकदम पीछे। मुझे पीछे से टुनियाते हुए। वह परपल कलर के खूबसूरत सलवार सूट में थी और उसके बाल खुले हुये, कंधों में लहरा रहे थे। उसने नेचुरल लिपिस्टिक लगा रखी थी, जैसी वह अकसर लगाती थी। उसके होंठ प्राकृतिक रूप से लाल थे और बड़ी सी कजरारी आंखें उसके दुधिया जिस्म में, अलग से टकी लग रही थी। उदास खूबसूरती, तीर तक धंसी जा रही थी।

'क्या, बहुत देर से खड़े हो? उसने हल्की सी मुस्कराहट से पूछा। '

'मैं काफी पहले आ गया था। '

'कब से इन्तजार कर रहे हो?'

- पिछले जन्म से। मैनें कहा।

- चल झूठे, वह हंस पड़ी। मेरा मतलब था, तुम यहां कब आये थे।

- दस बजे।

- परन्तु मैंने तो ग्यारह बजे फिक्स किया था।

मुझे कोई उत्तर देना ठीक नहीं लगा। मेरी ऑखें नींद न आने की वजह से लाल हो रही थी। उसने देखा और उसमें फिर उदासी प्रवेश कर गई। मैं उत्सुक था, उसकी प्रतिक्रिया और निर्णय जानने के लिए। शायद मैं जानना भी नहीं चाहता था। मैं सिर्फ उसे चाहता था और उससे बिछड़ना नहीं चाहता था।

हम दोनों कैफे की तरफ बढ़ जाते है। हम दोनों अक्सर यहॉ आते थे। कोई भी कोने वाली सीट पर बैठते है। कोना खाली है। ग्राहक नाम मात्र के हैं। घुसते ही अंधेरा लगता है, शायद बाहर की रोशनी की अभ्यस्त ऑखें भीतर पसरे मध्यम प्रकाश को पकड़ने में समय लगाती हैं। धुंधलका साफ हो जाता है। वेटर हम दोनों को पहचानते हैं।

हम कोने में बैठे हे, वेटर पानी रख गया है और काफी का आर्डर ले गया है। वह चुप बैठी है। उसके दोनों हाथ टेबुल के नीचे है। दोनों हथेलियां आपस में एक दूसरे को मसल रही है। वह कुछ कहना चाह रही थी। शायद कुछ ऐसा जो अप्रिय हो। वह घबराहट में लग रही थी।

- मैंने सोचा तुम फोन करोगी? मैंने कहा। उसने मेरी तरफ देखा। उसकी ऑखों में हल्का सा विस्मय था।

- अजीब बात करते हो? कल तो फोन किया था। उसकी आवाज तल्ख थी। मैं गलत था।

- शायद तुम नाराज हो। मैंने कहा।

- कह नहीं सकती। हो सकता हैं। मुझसे हंसी निकल पड़ी।

- क्यों? हंसे क्यों?

- कुछ नहीं ऐसे ही।

- ऐसे कैसे?

- तुम्हारे अनिर्णय वाले व्यक्तित्व पर। वह मौन रहीं और अपलक मुझे निहारती रही। मेरे कहे को तौलती रही।

- नाराज होने पर और अच्छी लगती हो। सफेद फूल लाल हो जाता है।

- ऊँह ....! उसने मुंह बिचका दिया।

- ऑखे लाल क्यों है। उसने कहा।

- रात भर सो नहीं पाया।

- क्यों?

- तुमसे मिलने की अधीरता थी। वह चुप लगा गई। वह कुछ सोंच कर उदासीन हो गई, जैसे वहॉ से अदृश्य हो गई हो।

मुझे वह शाम याद आती है। अम्बेदकर उद्यान में निर्लिप्त होते भी असम्पृक्त थे। उस शाम चाहत की जबरदस्त आकांक्षा आई थी, सब कुछ समेट लेने की। परन्तु मैं डर गया था। हकीकत पता चलने पर छूटने का डर भारी था। सब कुछ बता देने को आतुर मेरा मन, एक अजीब सी ऊहापोह की स्थिति में भटकता रहा।

... एक बार उसने फिर पहल की। उसने लिखा मैं तुमसे बेपनाह मुहब्बत करती हूॅ। क्या तुम्हें भी है। क्या तुम मुझसे शादी करोगे? मैं उसके निश्चित प्रेम से आसक्त था, मैंने अपने आप को अलग किया। क्या उत्तर दूॅ? सही या गलत। दिल कड़ा किया और सिर्फ अपनी स्थिति प्रेषित कर दी। मैं डर रहा था। आज डर दोनों तरफ व्याप्त है। मेज के नीचे मसलती हथेलियां और घबराहट में अपना पसीना पोंछता, वह और मैं। मैं भावी आशंका को जान लेने को उत्सुक हूॅ, और विचलित भी हूॅ।

मुझे लगता है, मैं वह सब कह दूॅ, जो पिछले हफ्ते से मेरे को विचलित और विह्वल किये है। पल-छिन सोचता रहा हूॅ, अपने से छलता रहा हूॅ और उससे कहने को तरसता रहा हूॅ। जानता हूॅ कुछ चीजे है, जो खो जाती है, खो जाना ही उनकी नियति है। आज ऐसा ही कुछ घटित होना है।

वेटर आया और कॉफी रख गया। सामने मैंनेजर दिख रहा है। वह हम दोनों को देखकर मुस्कराया और उसने रेसिप्सेनिष्ट के कानों में कुछ धीरे से फुसफुसाया। उसने अपना सर मोड़कर हम दोनों की तरफ उत्सुकता से देखने लगी। उसकी आंखों में अजीब सा कौतूहल था।

वह कुछ कहना चाहती थी। शब्द निकल नहीं रहे हैं। उसकी आंखें बहुत उदास और गम्भीर हैं। वह काफी को स्टिर कर रही है। स्टिर करते हुए उसकी आंखों में आंसू है, जो चमक रहें है।

- विकी- उसने धीरे से कहा, और रूक गई। उसने विक्रम प्रताप सिंह को छोटा कर के अपने लिए सुरक्षित कर लिया था अकेले में वह इसी का प्रयोग करती थी।

- विकी-क्या ये सही है? उसने पूरी शक्ति बटोर कर कहा। परन्तु स्वर धीमा था।

- क्या? मेरे कान खड़े हो गये। अनागत शब्दों के स्वागत में।

- मैंने इस तरह कभी नहीं सोंचा था।

- किस तरह? मैंने पूंछा।

- जो तुमने लिखा है... उसे पढ़कर। एक पल वह रुकी। उसने उँसास भरी।

- जैसे, तुमने लिखा है, ...उसे मैंने कई बार पढ़ा। यकीन नहीं आया। अब भी नहीं आ रहा है। विकी... यह गलत है, सच में बहुत गलत है। यह कैसे हो सकता है? तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? जब मैं पूरी तरह डूब चुकी हूँ, तब बता रहें हो। विकी ...उसने मेरी तरफ देखा। विकी ...क्या यही सच है, जो तुमने लिखा है ...शादी शुदा हो... एक पत्नी है, एक दस साल का लड़का है... एक पॉच साल की लड़की ...परिवार इलाहाबाद में है ...उसने मेरी तरफ कातर नजरों से देखा। मैं तुम्हारे लिखे को, तुमसे तकसीद कराने आयी हूँ।

मैं चुप था। गमगीन था। कुछ बोलने में असमर्थ था। शायद अपराध बोध से ग्रसित था।

- विकी... सच, तुम चीट हो, ...मैंने कभी ऐसे नहीं सोचा था। यह तसव्वुर से परे था, ऐसा ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि यह भी हो सकता है? नहीं...।

मैं रिक्त हो गया था। मेरा सब कुछ समाप्त हो गया था। मैंने उसकी ओर देखा। उसकी आंखों में आंसू थे बड़े-बड़े। परन्तु वह ढुलक नहीं रहे थे। उसके अहसास की हत्या हुयी थी। मुझे आभास था, शायद ऐसा ही कुछ होगा। मैं कल रात यहीं सोचता रहा था। जब वह सदैव के लिए न कहेगी, तो मेरा क्या होगा? वह कह चुकी है, और मैं वैसा ही बैठा हूॅ। वह ठगी सी थी और मैं शर्मसार था।

- नाजिया... क्या तुम खफा हो?

- हॉ। वह अपना सर हिलाती है।

- मैं सबसे बुरा आदमी हूँ। मुझे मॉफ कर सकती हो। वह शान्त, स्थिर, निराश और हताश थी। उसे मेरी मॉफी असर नहीं करती। वह पाषाण की तरह अविचलित थी। मैं उसे छूना चाहता था। परन्तु यह अब सपना लगता है।

- नाजिया, क्या हम दोस्त रह सकते है? वह कुछ नहीं कहती। कुछ कहना भी नहीं चाहती। जो कुछ उसके भीतर था, वह व्यक्त नहीं कर सकती थी।

कई सालों से हम दोनों मिलते रहे हैं। किन्तु न वह मेरा घर जानती थी न मैं उसका। मिलने से ज्यादा हम लोग एक दूसरे को महसूसते ज्यादा रहे है, अपने आस-पास। शायद वायवीय प्रेम...।

आज हम दोनों फिर इस कैफे में आ बैठे है। शायद अंतिम बार ...। कुछ देर बाद वह अपने घर चली जायेगी और मैं छत में स्थित टीन शेड वाले कमरें में। फिर क्या कभी मिल पायेगें?

- क्या हम दोस्त नहीं रह सकते, नाजिया?

वह एक फीकी हंसी देती है।

- विकी यदि तुमने वह सब न लिखा होता तो अच्छा रहता। अब हम वैसे नहीं रह सकेंगे, जैसे पहले थे।

हम दोनों चुप बैठे रहे। बाहर वारिस होने लगी थी। कुछ देर बाद उसकी पलकें उठीं।

- क्या सोंच रहे हो? उसने पूंछा।

मैं चुपचाप उसकी तरफ देखता रहा।

- वारिश के बारे में। हम उठ खड़े होते यदि बाहर मौसम न बदला होता। कॉफी के प्याले खाली पड़े थे। मैंने एक हांट कॉफी अपने लिए और कोल्ड कॉफी उसके लिए मंगाई। वह सदैव कोल्ड कॉफी ही लेती है। उसने मना नहीं किया। मैने मेज पर टिकी उसकी सफेद हथेलियों पर अपने हाथों पर दबाया। उसने हाथ वापस, अपनी तरफ खींच लिए। उसने मेरी आंखों में झांका।

- क्या, हम दोस्त नहीं हो सकते? मेरे स्वर में आर्दता थी।

- दोस्ती, मुहब्बत में तबदील होती है, मुहब्बत दोस्ती में नहीं बदलती। ये नामुमकिन है। उसकी आंखों में टूटने का दर्द था और दिल में खलिश थी। परन्तु उसके स्वर में दृढ़ता थी।

बाहर बादल छंट गये थे। वारिश बंद हो गई थी।

सब कुछ धुला-धुला साफ हो गया था। हमारी कहानी भी धुल गई थी, सिर्फ खरोंच बाकी थी। मैं पराजित एवं हताश। मैंने माडल शाप की तरफ पहली बार सुकून की तलाश की।

श्री राजा सिंह - एम-1285 सेक्टर-आई एल.डी.ए. कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ- 226012 - फोन-0522-4248734 मो0 9415200724 ई.मेल- raja.singh1312@gmail.com

लघुकथा - दीये का प्रकाश - श्री विजयानन्द विजय

चारों ओर दीवाली की धूम थी। आसपास बनी ऊँची-ऊँची बिल्डिंगें और कतार में खड़े गगनचुंबी अपार्टमेंट्स झालरों की जगमगाती रोशनी से नहाए हुए थे। बाजार में अभी भी चहल-पहल थी। सड़क के किनारे फल-मिठाई-सजावट के सामानों की दुकानें रंग-बिरंगे बल्बों से सजी हुई थीं। शाम ढल रही थी और लोग दीवाली की बची-खुची खरीददारी में लगे हुए थे।

अपनी झोपड़ी के सामने एक टोकरी में मिट्टी के दीये लिए बैठी कमलिया राह से गुजरने वालों को याचना भरी नजरों से देख रही थी और सोच रही थी कि कुछ और दिये बिक जाते, तो बच्चे के लिए कुछ पटाखे खरीद लेती। सुबह से जिद किए जा रहा है मनुआ। मगर इलेक्ट्रॉनिक लाईटों के जमाने में अब दीये खरीदता भी कौन है? न तो छतों की मुड़ेरों पर अब दीपमालाएँ सजती हैं, न ही कुम्हारों की मेहनत का अब कोई मोल रह गया है?

मनुआ बगल में चुपचाप बैठा कभी माँ की ओर, तो कभी आने - जाने वाले लोगों को देख रहा था।

अँधेरा बढ़ने लगा तो कमलिया उठकर दीया जलाने झोपड़ी के अंदर चली गयी। तभी अचानक पावर कट हो गया और चारों ओर घटाटोप अँधेरा छा गया। ऊँचे-ऊँचे मकान और गगनचुंबी इमारतें अँधेरे में कहीं खो गयीं।

थोड़ी देर में कमलिया हाथ में दीया जलाए झोपड़ी से बाहर आई। मिट्टी के दीये की रोशनी ने घुप्प अँधेरे को चीर दिया।

मनुआ ने सिर घुमाकर एक बार अँधेरे की ओर देखा, फिर माँ के हाथ में जगमगाते दीये को... और खुशी से झूमकर नाच उठा, और बोला - माँ, मुझे पटाखे नहीं चाहिए।

श्री विजयानन्द विजय - आनंद निकेत बाजार समिति रोड, पो. - गजाधरगंज, बक्सर (बिहार) - 802103
मो. - 9934267166 - ईमेल - vijayanandsingh62@gmail.com

व्यंग्य - *बहना सुखी, भैया दुखी - श्री अभिमन्यु जैन

भद्रा में बहना ने भाई को राखी बांध दी तभी से बहना सुखी और भैया दुखी हो गए। मामा की घोषणाओं ने आग में घी का काम किया, बहना हो गई सरकारी योजना का गहना। बहना, अब सरकारी हो गई, उसकी, सरकार गज़ब की चिंता कर रही। ऐसा लगता है कि पहले इस धरा पर बहना थी ही नहीं, मंगल ग्रह से अभी अभी उतरी है और पूरी सरकार उसकी सेवा में लगी है। लाड़ली बहना के रूप में मामा को ब्रह्मास्त्र मिल गया, इससे वे विरोधियों को कुचल डालेंगे। सिर काट डालेंगे। बहना के नाम पर इतनी घोषणा हो गईं कि अब उनकी जानकारी देने के लिए अलग से एक विभाग बनाना पड़ेगा। बहना का गर्भ में शुभ आगमन होते ही गोद भराई, नौ महीने तक सुपोषण आहार, अन्नप्राशन, स्कूल फीस, ड्रेस, साइकिल, छात्रावास, स्कॉलरशिप, स्कूटी, लैपटॉप और अब हर महीने नगद राशि, रियायती गैस सिलेंडर, मुफ्त आवास, यह सब देख भाई के कान से धुवां निकल रहा है। अब नारी शक्ति। वंदन विधेयक द्वारा लोकसभा और विधान सभा में महिला आरक्षण बिल पास हो गया है। हालत यह है की बहुत सी सरकारी योजना की हितग्राही बहना के पीछे मुहल्ले के बेरोजगार लड़के शादी के लिए लगे हैं।

यदि आप सरकारी दफ्तर में जाएं, तो आपको बाबू नहीं मिलते, ऐसे ही आप किसी घर जाएंगे तो पता चला बहना लोकसभा, विधान सभा, नगर निगम, नगर पालिका में विचाराधीन विधेयक पर। बहस करने गई है। वहां पर बहस पूरी न होने से अब घर में बहस कर रही है। वे जमाने लद गए जब महिलाएं घर गृहस्थी, बाल बच्चे सम्हलती थीं, अब तो वे पार्टी और मतदाता को सम्हालने के टूल्स बनी हैं।

जब से चुनावी सुन गुन चालू हुई है, मुफ्त सरकारी योजनाओं की झड़ी लगी है। पहले राजा राजकोष भरने का सोचते थे, आज खाली करने पर जोर है। राजा के दरबार में रोज जाति आधारित पंचायतें हो रही हैं। बोर्ड का गठन हो रहा, ताकतवर को मंत्री का दर्जा दे वोट का खेला हो रहा। सब कुछ लुटा दो, चुनाव जिता दो, एक मात्र मूल मंत्र पर काम हो रहा। मामा, जो अपनी मेहनत की कमाई राजकोष में टैक्स के रूप में जमा करते हैं कभी उनसे भी तो पूंछ लो। ये मुफ्त हराम खोरी की योजनाएं आदमी को नकारा,,,कामचोर,

आलसी बना रहीं हैं। गांव में खेती किसानी के लिए मजदूर नहीं मिल रहे, शहर में रेट इतने हाई कि लोग काम कराने की हिम्मत नहीं कर रहे। मगर आपकी हिम्मत की दाद देना पड़ेगी महिनों से अखबारों में फुल पेज के फोटो वाले विज्ञापन छपवा रहे है। आज एक पार्टी जन आशीर्वाद यात्रा तो दूसरी जनाक्रोश यात्रा निकाल रही। सत्ता का चरित्र बच्चा बच्चा जानता है। नूरा कुश्ती बंद करो। मिलकर दोनों राज करो।

लाड़ली बहना गरीब है, फकीर हैं, बेसहारा है न जाने ऐसे कितने प्रमाण पत्र सरकारी पैसा पाने के लिए लगाए, बहना को सरकार पर रत्ती भर भरोसा नहीं, खाते में जमा पैसा तत्काल निकाल रहीं, पता नहीं कब सरकारी कृपा आना बंद हो जाए। मतदाता को लुभाने प्रलोभनों की दुकान खुल गईं हैं, इन पर उच्च न्यायालय, सर्वोच्च न्यायालय, चुनाव आयोग कब तालाबंदी करेगा।

नारी शक्ति की बात होती जरूर है किंतु राजनीति में निर्वाचित नारी अपनी शक्ति/पावर/ पति को दे देती है, तभी तो सरपंच पति, पार्षद पति, अध्यक्ष पति, विधायक पति आदि नाम से पति की पहिचान होती है। टिकट और चुनाव के चक्कर में बहन जी चली गईं भोपाल, गांव की सूनी पड़ी चोपाल। शासकीय आवास योजना के तहत प्राप्त मकान पर ताला लगा देख बहनोई के सीने पर सांप लोट गया। उसे कुछ करना पड़ेगा, शासकीय सुविधा पाने योनि परिवर्तन कैसा रहेगा।

श्री अभिमन्यु जैन, जबलपुर

कविता - दीवाली - डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र'

दीवाली की दस्तकें, दीपक की पदचाप।
आओ खुशियां मनायें,क्यों बैठे चुपचाप।।

अंधियारे की शक्ल में, बैठे कई सवाल ।
कर लेना फिर सामना ,पहले दीप उजाल।।

कष्टों का अंबार है ,दुःखों का अंधियार ।
हम तुम दीपक बनें तो ,फैलेगा उजियार ।।

डॉ राजकुमार "सुमित्र" - **जबलपुर, मध्यप्रदेश**

व्यंग्य - काल के कपाल पर जूता - श्री प्रभाशंकर उपाध्याय

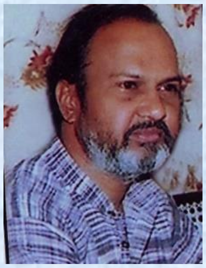

बनारसी विलास में लिखा है, 'सुन रे वाचा चुनिया-मुनिया, उलट वेधसी उलटी दुनिया।' नागार्जुन दुनिया को फानी बताते हैं। इस फानी जगत में एक मिथ्या संसार और है, जिसे आभासी दुनिया कहते हैं इसे सोशल मीडिया भी कहा जाता है। इससे जुड़ा व्यक्ति वास्तविक रिश्तों में प्रायः घोर अन-सोशल हुआ रहता है। इस मीडिया में क्रिया-प्रतिक्रिया वाला न्यूटन का सिद्धांत भी पानी भरता है। यहां, आवश्यक नहीं कि क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया हो। क्रिया-प्रतिक्रिया से जुड़े तीन तरह के लोग यहां पाए जाते हैं। एक वे जो अपनी पोस्ट चिपकाने की क्रिया करते हैं और उस पर प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में पलक-पांवड़े बिछाए रहते हैं।

दूसरे वे जो अपनी क्रिया अर्थात् अपनी बात, उपलब्धियां, ऑडियो-वीडियो को पोस्ट करने हेतु प्रगट होकर तत्क्षण अन्तर्धान हो जाते हैं। किसी अन्य की पोस्ट पर प्रतिक्रिया देने से इन्हें परहेज हुआ करता है।

तीसरी प्रकार के भद्रजन अपनी पोस्ट डालें या न डालें किंतु अपनी मौजूदगी उपस्थिति अवश्य दर्ज कराएंगे। इनके भी तीन विभेद हैं- एक वे जो अंगूठा दिखा देंगे। इनकी गति मिसाइल को भी मात करती है। क्रिया के होते ही क्षणांश में इनका अंगूठा हाजिर हो जाता है। दूसरे वे जो प्रतिक्रियात्मक टिप्पणी देते हैं। ऐसे प्रतिक्रियाबाज तीन से तेरह मिनट में पढी जाने वाली पोस्ट पर दो मिनट के अंतराल में ही पूर्णतः पठनीय या आदि से अंत तक बांधे रखने वाली... जैसे वाक्य बमका देते हैं। भले ही स्वयं, उसे आदि से अंत तक न पढ पाए हों लेकिन काल के कपाल पर जूता तो तड़का ही देते हैं।

त्वरित प्रतिक्रियाशालियों के कुछ सिद्ध शब्दी भी होते हैं- वाह... वा..., क्या बात है, बहुत खूब, लाजवाब, शानदार, अप्रतिम, अतुलनीय आदि इत्यादि। इन्हें पोस्ट की विषयवस्तु से कोई सरोकार नहीं होता। एक सज्जन का ब्रहम वाक्य है, सो स्वीट। इन्हें हर्ष और विषाद के विषय भी सो स्वीट लगते हैं। एक पिता द्वारा शेयर की गयी युवा पुत्री के जन्मदिवसीय चित्र पर इन्होंने सो स्वीट लिख मारा और पंगा होते होते बचा। एक भद्रजन आमीन शब्द की पूंछ पकड़े हैं। इन्होंने एक परिवार में हुई त्रासदी पर आमीन लिख दिया। परिणाम की कल्पना आप कर लीजिए।

संक्षिप्त प्रतिक्रियाबाजों के विपरीत ही कुछ दीर्घ प्रतिक्रियाविद् भी होते हैं जो तिल का ताड़ बनाने की कला में पारंगत हैं। ऐसे लोग मूल क्रिया के एवज में दो गुने-पांच गुने आकार का पहाड़ खड़ा कर देते हैं। हैरत है कि लोग मुझे उसी श्रेणी का प्रतिक्रियाबाज कहते हैं। वे नादान नहीं जानते कि मुझे इतनी फुरसत कहां? अपने हाथ में जब भी मोबाइल थामता या लेपटॉप को लेप पर बिठाता हूं तो पत्नी की दृष्टि वक्र हो जाती है। वो मुझे एक लंबी सूची और बड़ा झोला पकड़ा कर कहती है, "इसे छोड़ो और जल्दी से

बाजार से सौदा-सुल्फा ले आओ। ” वहां से लौटता हूं तो बहू कहती है, “पापाजी, ये छुटकू इतना चिपकू हो रहा है कि काम ही नहीं करने दे रहा। जरा इसे पार्क ले जाकर झूला खिला लाइए।” कभी बेटा कहता है कि क्वाडो (श्वान) को दिशा-मैदान करा लाइए। घर से बाहर जाकर क्वाडो बेकाबू हो जाता है। उसके गले का पट्टा चेन थामे मेरा बुढ्ढा बदन उसके पीछे खिंचा ही चला जाता है और जब वहां से लौटता हूं तो इतनी शक्ति नहीं बचती कि लंबी प्रतिक्रिया दे सकूं।

श्री प्रभाशंकर उपाध्याय - 193, महाराणा प्रताप कॉलोनी, सवाईमाधोपुर (राज.)- 322001 - मो. - 9414045857, 8178295268

गज़ल - श्री कृष्ण गोप

मैं किनारे पर चला रे दरिया के संग

छंद की संगत करे खुद जल तरंग

फकत सियाही से उकेरूं हर छवी

देखना तुम भर के उनमें मन के रंग

इस कंटीली डाल से जो चिढ़ा किये

फूल खिल आए यहीं सब हुए दंग

संग उसके हो लिया है बच्चे सा मन

खूब ऊंची उड़ी जब अपनी पतंग

कर न पाया कुछ तो रब से ये कहा

'दिल बड़ा क्यों दिया दे के हाथ तंग!'

जंग हो लोहू कभी क्यों बहे यह

कृष्ण गोप - मो.9039692428

व्यंग्य - अजबस्तान की प्रेतात्मा का रहस्य - श्री ऋषभ जैन

अजब बीमारी फैल रही थी अजबस्तान में। अच्छा खासा आदमी अचानक गश खाकर टप्प से गिर पड़ता और देखते-ही-देखते गहरे अवसाद में पहुंच जाता। रोज के आठ-दस मरीजों से शुरू हुई संख्या पचास तक पहुंची तो सरकार चिंतित होने के लिए बाध्य हो गयी। वह अभी चिंता करने की तैयारी कर ही रही थी कि रोजाना सौ लोग टपकने शुरू हो गए। अब तो जीएचओ यानी ग्लोबल हेल्थ आर्गेनाइजेशन के लिए भी फटे में टांग घुसाना जरूरी हो गया। जीएचओ ने अजबस्तान के सबसे बड़े खोजी डाक्टर खोजीराम को इस रहस्यमय बीमारी की खोजबीन कमेटी के प्रमुख की जिम्मेदारी सौंपी। डा. खोजीराम ने कार्यभार संभालते ही अज्ञात आधार पर अज्ञात बीमारी के लिए उच्च रक्तचाप को जिम्मेदार ठहरा दिया। यह जीएचओ का अघोषित प्रोटोकॉल था। उनकी लिस्ट में दो-तीन व्याधियों की स्थिति ऐसी थी जैसी पुलिस के रिकॉर्ड में छटे हुए बदमाशों की होती है। कुछ सुराग न मिले तो चिकित्सक बीमारी का ठीकरा इनके सर फोड़ देते थे। जीएचओ की रपट सुनकर अजबस्तान में अफरातफरी सी मच गयी। रक्तचाप के मरीज घबराये, तो उनका रक्तचाप और बढ़ गया। अजबस्तान में वैचिप नामक एक खोजी संस्था और भी थी। वैचिप यानी वैकल्पिक चिकित्सा परिषद। यद्यपि वैचिप के सैद्धांतिक कर्तव्यों की सूची बहुत लम्बी थी, तथापि उसका एक मात्र व्यावहारिक काम जीएचओ के काम में गलती निकालना था। वैचिप ने यहां-वहां से डाटा कबाड़ा और साबित कर दिया कि रहस्यमय बीमारी का रक्तचाप से कोई संबंध नहीं है। कुछ दिनों बाद डा. खोजीराम ने वक्तव्य दिया कि अजबस्तान में फैली अज्ञात महामारी मधुमेह के कारण हो रही है। कुछ ही दिनों में वैचिप वालों ने इस दावे की भी हवा निकाल दी। लोगों को पता था कि जीएचओ अगली बार तीसरे बदमाश यानी थायराइड को निशाना बनायेगा। उन्हें यह भी पता था कि वैचिप वाले इस निष्कर्ष की भी ऐसी-ऐसी करके ही मानेंगे। अजबस्तान में मेडिकल साइंस का यही रिवाज था। लेकिन डा. खोजीराम ने दो बार गलत ठहराये जाने को दिल पर ले लिया। उन्होंने प्रण किया कि अज्ञात बीमारी के पीछे के जालिम वायरस या बैक्टीरिया का पता लगाकर रहेंगे और फिर एंटीवायरस या एंटीबायोटिक के साथ एंटीवैचिप बनाकर ही दम लेंगे। बीमारों के खून, मल, मूत्र, लार, वीर्य आदि के सैंपल युद्धस्तर पर बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं में भेजे गये। विदेशों से विशेषज्ञ बुलाये गये। लेकिन कारण पता चलना तो दूर उल्टा रोगियों की संख्या बढ़ती चली गयी। अचानक अजबस्तान में प्रेत का साया होने की खबर फैल गयी। लोग रात में घरों से निकलने से थर्राने लगे। जिसे देखो वह उल्टे पैर वाली चुड़ैल, सफेद साया या सिरकटी लाश देखने की दास्तान सुनाता दिखता। जनता के बीच जीएचओ और डा. खोजीराम की किरकिरी होने लगी। एक तरफ वैचिप वाले हल्ला मचा रहे थे, और दूसरी तरफ ओझा-तांत्रिक। डा. खोजीराम पर दबाव बहुत बढ़ गया। वे रात-रात भर जाग कर बीमारियों के पिछले कई सालों के पैटर्न खंगालते रहते। डा. खोजीराम की हालत देखकर घरवाले चिंतित हो गये। एक दिन घरवाली ने

उन्हें समझाया कि थोडा चिल भी किया करो। किसी दिन आप भी टप्प से गिर गये तो कितनी जगहंसाई होगी। वैचिप वाले डिन्डोरा पीटेंगे कि ये बीमारी को निपटाने चले थे खुद ही निपट गये। आगे कभी कोई फटे पत्ते में नहीं पूछेगा। सब तांत्रिकों के यहाँ भागा करेंगे। डा. खोजीराम को बात जम गयी। उन्होंने एक दिन के लिए रिलेक्स होने का निर्णय लिया। निश्चित किया गया कि अगले दिन सारे काम की छुट्टी करके अट्ठावन साल की जवान हीरो की नयी मूवी देखने जाया जायेगा।

अगले दिन श्री और श्रीमती खोजीराम समय से पांच मिनट पहले सिनेमाघर में जाकर बैठ गये। निर्धारित समय पर लाइट बंद हुई, मनचलों ने सीटी बजायी, और स्क्रीन पर चित्र आना शुरू हुए।

पहले दृश्य में एक नवयुवक बता रहा था कि इस सरकार ने बिजली बिल माफ कर दिया, इससे हर महीने इत्ते इत्ते, साल में इत्ते सारे और पांच साल में बहुतई सारे रुपये बच गये।

इसके बाद एक बुजुर्गवार कहने लगे कि इस सरकार ने मुफ्त दवा बांटीं, परिणाम स्वरूप हुई बचत से उनका बैंक बैलेंस मोटा हो गया है।

उनके गायब होते ही स्कूल की पोशाक पहने एक बालक प्रकट हुआ। उसने रटी-रटाई अंग्रेजी में बताया कि इस सरकार ने उसके विद्यालय को लकदक कर दिया है, इससे उसे दून स्कूल जैसी फीलिंग आती है।

इसके बाद कोई चौथा कह रहा था कि इस सरकार ने ये किया।

तदोपरांत किसी पांचवें का कहना था कि इस सरकार ने वो किया।

सिनेमाघर वाले को संदेह था कि किन्हीं कारणों से दर्शक इतनी महत्त्वपूर्ण बात नहीं देख पाये हैं, सो वह इन दृश्यों की बारंबार पुनरावृत्ति कर रहा था।

पांचवीं बार इन पांच विज्ञापनों झेलने के बाद डा. खोजीराम की तबीयत पक गयी। उन्होंने मन-ही-मन ईश्वर से प्रार्थना की कि मूवी जल्दी शुरू करवायें। ईश्वर ने आधे घंटे बाद उनकी अरज सुनी। मूवी प्रारंभ हुई तो हीरो ने न जाने क्यूँ आठ-दस विलेनों को धुनना शुरू कर दिया। भयंकर शोर-शराबे वाला यह पिटाई अभियान पंद्रह मिनट चला। विलेनों के भागते ही हीरोइन अवतरित हुई। उसने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया, यानी हीरो के साथ गलबहियां करते कर्कश गान संपन्न किया। गाना पूरा होते ही बीस-पच्चीस विलेन फिर आ गये, और फिर वही पिटाई अभियान। डा. खोजीराम ने बोर होकर मोबाइल निकाल लिया। उन्होंने गूगल पर उंगली रखी ही थी कि,

"हमारी सरकार ने ये किया....",

"हमारी सरकार ने वो किया...."

मोबाइल से भी वही विज्ञापन झड़ रहे थे।

डा. खोजीराम ने घबराकर मोबाइल वापस जेब में डाल लिया। वे फिर से मूवी झेलने की कोशिश करने लगे। जैसे-तैसे मध्यान्ह हुआ तो उन्होंने राहत की सांस ली। लेकिन ये क्या? स्क्रीन पर फिर वही नवयुवक, फिर वही बुज़ुर्ग, फिर वही रट्टू लड़का, फिर वही हमारी सरकार। मध्यान्ह विज्ञापन।

डा. खोजीराम ने हौसला जुटाया और आँखें मींच कर मध्यान्ह खत्म होने का इंतजार करने लगे। मध्यान्ह के बाद का काल डा. खोजीराम ने “यह समय भी बीत जायेगा” वाली प्रेरक कथा को स्मरण करते व्यतीत किया।

मूवी ख़त्म होने पर डा. खोजीराम दंपती चुपचाप बाहर निकले। उन्हें देखकर लगता था मानो हीरो द्वारा खलनायकों की जगह उन लोगों को धुना गया हो। वे एक-दूसरे से तक बात नहीं कर रहे थे। कार में बैठते ही श्रीमती खोजीराम ने रिलेक्स होने की मंशा से एफ एम रेडिओ चला दिया। उसपर विज्ञापन आ रहे थे।

"हमारी सरकार ने ये किया...,

हमारी सरकार ने वो किया।"

इस ध्वनि को सुनते ही डा. खोजीराम को लगा जैसे किसी ने कानों में पिघला शीशा उड़ेल दिया हो। उन्होंने रेडियो बंद करना चाहा लेकिन घबराहट में बेंड बदलने वाला बटन दब गया। दूसरे चैनल पर सुपर हीरो की मूवी के बुलंद डायलॉग चल रहे थे। अब तो डा. खोजीराम की हालत खराब हो गयी। वे कार से कूद पड़े और सड़क किनारे की दीवार पर हाथ मारने लगे। उन्हें एक दौरा जैसा आ गया। थोड़ी देर बाद कुछ समझ आया तो उन्होंने दीवार को देखा। उस पर लिखा था,

"हमारी सरकार ने ये किया...,

हमारी सरकार ने वो किया।"

बगल में मूवी का पोस्टर चिपका था।

डा. खोजीराम का दिमाग चकरा गया। वे गश खाकर गिर पड़े। होश आया तो अस्पताल में पड़े थे। बगल वाले बिस्तर पर श्रीमती खोजीराम की भी वही हालत थी। जीएचओ का प्रमुख भी महामारी का शिकार बन चुका था। हालांकि डा. खोजीराम बहुत जल्दी अवसाद से उबर गये। उन्होंने महामारी का कारण जो तलाश लिया था। उन्होंने डाक्यूमेंट्री-नुमा रपट तैयार की।

"चुनावी मौसम में हर नागरिक को अपने दिमाग का ध्यान रखना चाहिए। इस दौर में यदि सुपर हीरो की फिल्म भी रिलीज हो जाये तो मामला अत्यंत संगीन हो जाता है। दो तरफ से फ्राई हों तो भेजे जल भी सकते हैं। आम जनता को सलाह दी जाती है की इस मौसम में बहुत ज्यादा एफ एम सुनने और टीवी या मोबाइल देखने से बचें और सड़क पर चलते समय दीवारों पर लिखी बातों को देखने-पढने की कोशिश भी न करें।"

डा. खोजीराम ने जीएचओ की तरफ से यह डाक्यूमेंट्री वायरल कर दी है। वैचिप वालों ने लाख कोशिश की लेकिन वे इसे ग़लत सिद्ध नहीं कर पा रहे। हालांकि वर्तमान में चुनावी विज्ञापनो और सुपर हीरो के प्रचार के चलते यह डाक्यूमेंट्री लोगों तक पहुंच पायेगी इसमे संदेह है।

श्री ऋषभ जैन - 10/7 ऋषभ नगर, दुर्ग - 9424721297

लघुकथा - बिस्कुट - श्री श्याम खापर्डे

सुबह-सुबह राजेश दैनिक समाचार पत्र पढ़ रहा था, पास में उसकी मां भी बैठकर कुछ काम कर रही थी.

राजेश की पत्नी ने चाय और बिस्कुट राजेश के सामने प्लेट में रख दिया, पर मां के सामने सिर्फ चाय ही रखी. राजेश ने पत्नी को आवाज दी, मां के लिए भी बिस्कुट लेकर आओ ?

दो तीन बार आवाज देकर भी ना सुनने पर, राजेश पत्नी पर जोर से चिल्लाये, मैंने मां के लिए बिस्कुट बोला था, तुम्हें सुनाई नहीं देता है क्या?

पत्नी रसोई घर से भिनभिनाती हुई आई, आकर बिस्कुट का पूरा पैकेट मां के सामने पटककर चली गई.

दोनों मां बेटे चुपचाप एक दूसरे को देखते रहे, मां ने बिस्कुट का पैकेट राजेश की तरफ बढ़ाया, चुपचाप चाय पीकर, आंखों से आंसू पोंछते हुए, उठकर चली गई।

श्री श्याम खापर्डे - भिलाई जिला दुर्ग छतीसगढ़

व्यंग्य - पांडेय जी और विकास का एजेंडा - डॉ लालित्य ललित

सड़क है, दौड़ है और आम आदमी की तरह अपने विलायती राम पांडेय जी यहां निम्न मध्यम वर्गीय बंदे की भूमिका में है, वैसे उन्हें हर भूमिका को निभाना आता है, बात सीमित दायरे में रहें तो ठीक है, चीकू सुबह स्कूल गया है, आज उसकी अंग्रेजी की परीक्षा है, क्या टपर टपर इंग्लिश बोलता है, लगता है ट्यूशन के वैसे वसूल हो गए।

आइए सीन अस्पताल। पांडेय जी ने पार्किंग में गाड़ी लगाई। लिफ्ट से तीसरी मंजिल आएं, किसी भोले ने गलत सलत बटन दबा दिया होगा; लिफ्ट पांचवी मंजिल पर दौड़ गई, पांडेय जी के साथ चार पांच मरीज और थे, कहने लगे हमें तो तीसरी पर उतरना था, यह क्या हुआ! पांडेय जी ने कहा घबराइए मत, हार्ट बीट दौड़ने लगती है, कभी कभी दिल का दौरा भी पड़ जाता है, कल पड़ गया था, मेरी मौसी के दूर के मौसा के लड़के फूल चंद ने बताया, सब सुनकर सांस रोक कर खड़े रहे, क्या पता किस का डिब्बा गोल हो जाएं।

अब पांडेय जी तीसरी मंजिल में पहुंच गए, भीड़ के मारे इतना बुरा हाल कि सीनियर सिटीजन में तीन बार झगड़ा होते होते बचा, मानो इन लोगों ने कसम खा रखी हो, या तो पिट जाएंगे अन्यथा पीट देंगे, बड़ी मुश्किल से बचाव हुआ।

पर्ची बन गई।

अब सामने डॉक्टर थे, बिना शेव किए, ऐसे मुंह बना रखा था, मानो यमराज के विदेश प्रतिनिधि हो, वाला कर्तव्य निभाने की भूमिका में हो।

कहने लगे बताइए क्या तकलीफ है!

पांडेय जी ने कहा तकलीफ तो कोई नहीं, पत्नी है मेरी, कहने लगीं घूम आओ, हॉस्पिटल। इसलिए मैं आ गया, ऐसे कीजिएगा डॉक्टर साहब, दवाई जो है, वे रिपिट कर दें, और कुछ टेस्ट लिख दें, ताकि कल जांच करवा लूं, ऑफिस में रिपोर्ट जमा करवा दूं।

डॉक्टर साहब ऐसे घूरने लगे मानो यह पेशेंट ऐसे बिहेव कर रहा है मानो किसी कल्ब में आया हो और कह रहा हो, सुनिए जरा रिपिट कर दें और स्नैक्स जरा जल्दी लाइए, क्या इतनी देर लगती है!

डॉक्टर ने कहा ऐसा है, टेस्ट मैंने लिख दिए है, आप करवा कर लाते तो मैं देख लेता।

ऐसा है आप का बल्ड प्रेशर बड़ा हुआ है, यह ठीक बात नहीं है। समझें आप!

क्या करते हो!

पांडेय जी ने बताया कि बिजली विभाग में हूं, कभी सेवा la मौका दीजिए।

डॉक्टर ने कहा क्या कर सकते हो! मेरा इस बार का मीटर या तो गड़बड़ा गया है, या उसको देखना होगा, क्या किया जा सकता है!

पांडेय जी ने कहा आप मेरा पर्चा बना दो, अपना पता बताएं कल आ कर चेक कर लेता हूं, क्या पंगा है!

कुछ खर्चा करेंगे तो आगे से मीटर सही चाल में आएगा, मतलब ज्यादा बिल नहीं आएगा।

डॉक्टर समझ गया, बंदा काम का है, उधर पांडेय जी ने मन बना लिया था, डॉक्टर फंस गया तो सीधे दो हजार का फटका लगा दूंगा।

पांडेय जी लौट आएं, आज शनिवार था, घर में रामप्यारी ने कहा लस्सी पियेंगे!

पांडेय जी ने कहा हम तो कब के प्यासे है!एक तुम हो जो कभी ध्यान नहीं देती!

रामप्यारी ने मतलब को समझा और उक्त प्रसंग की व्याख्या करते हुए कहा शर्म भी नहीं आती, दो बच्चों के बाप बन चुके हो और!

मतलब कहना तो यह चाहती थीं

ये मुंह और मसूर की दाल।

पर शिष्टाचार वश बोल न पाई;पर आंखें तरेर कर निकल गई, जैसे कोई सड़क पर साइलेंसर निकलवा कर कोई आशिक अपनी प्रेमिका की गली से गुजर जाता है, उधर पांडेय जी भी मौसम की मौसीकी करने में पीछे नहीं हटते थे, फोन लगा बैठें

क्यों राधेलाल जी शाम का क्या पिरोग्राम है!

राधेलाल ने कपाल भारती करते हुए कहा सब ईश्वर की माया है; क्या पता कौन प्रस्तावक मिल जाएं!

पांडेय जी ने बुद्धि पर जोर दिया और तत्काल गूगल पर देखा और पाया कहने का भाव था स्पांसर!

तभी ठंडी हवा बहने लगीं और पांडेय जी रचनात्मक हो गए।

मोटेरामजी/लालित्य ललित

ये किस्सा उन साहब का है

जिनका नाम मोटेराम है

उनको खाना अच्छा लगता है

अब साहब

कहते है बाऊजी!

अगर नहीं खायेंगे वे तो

कमाएंगे वे कैसे!

जो स्ट्रीट वेंडर्स है

सड़क किनारे बनाते है

कचौड़ियां, ब्रेड पकौड़े से लेकर लिट्टी चोखा

और तो और

छोले भटूरे से लेकर तंदूरी आइटम

कितने लोगों को रोजगार देने का काम करते है!

दुनिया कमाल की है

जिसका काम है खाना

उसे सुहाता है कि खाये जाओ

प्रभु के गुण गायें जाओ

गांव-शहरों और गांव के साथ हाइवे के बस स्टॉपों से लेकर

चाय की टिपरी पर लगा रहता है

लोगों का हजूम

कहीं बिस्कुट

कहीं मट्ठी और कहीं कड़ाही से निकलते समौसे की खुशबू

कैसे रास्ता रोक देती है

राहगीरों का

यही स्वाद है भारत का

कि तसल्ली से खाया-पीया भी क्षण भर को

रुक जाता है और मोटेरामजी से ऊर्जा पा जाता है

हिंदुस्तानी किसी भी बात को मना कर दें

ऐसा हो ही नहीं सकता

चाहे रात हो बैरात हो

जगा कर कुछ भी खिला दो

भैया जी मना थोड़े न करेंगे

आखिर वे किसी का भी दिल तोड़ना नहीं चाहते

जो वे ऐसा काम करते

नहीं न

ग़जब की चुस्ती और स्फूर्ति बनाए रखते हैं

कहते है

सबका ध्यान रखता हूँ आखिर वे भी तो नागरिक है

उन्हें भी तो कमाना और घर चलाना है

हम तो मात्र संवाहक है

स्वाद के।

तभी रामप्यारी ने चीकू को कहा, मोबाइल बंद करो। और सुनो, पांडेय जी बिटिया की घड़ी के सैल बदलवा देना, याद से। पांडेय जी जब घर होते है तो यही कहते है जी हुक्म की तामील होंगी, और पतियों को बोलना भी क्या आता है!

न राधेलाल जी आवाज निकलती, न रामखेलावन की और महाकवि की तो पूछो मत, बेचारे पति लोग!!!

पांडेय जी सुबह सैर पर गए कि उन्हें साहनी साहब दिखाई दे गए कहने लगे यह क्या बात हुई! आप ने अपनी सैर का समय बदल लिया! ऐसा मत कीजिए, हमें तो सुबह बाजरा भी देना पड़ता है; पांडेय जी ने

कहा हजूर मैं आपकी रग रग से वाकिफ हूं, जवानी में भी आप बाजरा देते रहें और उम्र के इस ढलान पर भी आपका योग और अभ्यास जारी है, प्रभु आपकी जिंदादिली को बनाए रखें। साहनी जी ने प्रणाम कह कर कहा, पांडेय जी आप दीर्घायु हो, स्वस्थ रहें, आपसे मैं प्रेरित होता हूं।

पांडेय जी ने कहा आज तो गणेश चतुर्थी है, मोदक का प्रसाद बनेगा। साहनी सहाब ने कहा बनेगा तो सही, पर हम क्या करेंगे! एक बेचारा मधुमेह का मारा!!

पांडेय जी ने कहा, पहले तो यह बताइए, कि यह मधु कौन है! किस की बेटी है और कहां रहती है!

साहनी साहब भी पांडेय जी की सोहबत में रहते हुए कई सारी बातों को सीख गए थे, हाजिर जवाब भी थे।

कहने लगे कि मधु डॉक्टर लाल की बेटी है, किरण स्वीट्स के ऊपर रहती है, जलेबियां बहुत खाती है, पांडे जी समझ गए कि मामला सीरियस है, अपनी बात को बदलते हुए कहने लगे कि आगे तक चलना है तो ध्यान रखिए, समझें। साहनी साहब ने हाथ जोड़ लिए और सुबह की बैठक संपन्न हुई।

दफतर में पहुंचने वाले पांडेय जी अपने विभाग के पहले व्यक्ति है, गणेश चतुर्थी पर हिंदी स्टेनो रोजी गुलाटी पंडुराव ने मोदक खिलाया और नमस्ते की, पांडेय जी ने कहा रोजी जी आपकी भी शुभकामनाएं, पर एक मोदक से हमारा काम नहीं चलेगा, एक मोदक और देना पड़ेगा।

रोजी। एक मोदक और दिया और मुस्कुराती हुई सेक्शन में चली गई। पांडेय जी सोचने लगे, बड़े बाबू होना भी बड़ी बात है, kabji मोदक कभी बर्फी! सच में हिंदुस्तान त्योहारों का देश है।

तभी देविका गजोधर का फोन बजा।

क्या पांडेय जी आजकल आप हमें मिलते भी नहीं, ये क्या बात हुई!

आप तो ऐसे न थे!

पांडेय जी ने कह दिया कि आपसे मिलने का मुहूर्त निकला है शाम 7 बजे, कॉफी होम। देविका प्रसन्न हुई।

पांडेय जी का उद्देश्य है कि कभी भी किसी को भी नाराज न किया जाएं, ऐसा करने से मन भी स्वस्थ रहता है और लोक कल्याण की भावना भी बनी रहती है।

तभी असंतुष्ट कुमार दाखिल हुए, कहने लगे कि कैंटीन वाला पगला गया है, क्या चाय बनाता है, गन्ने का जूस!

ऐसी मीठी कोई चाय होती है!

पांडेय जी ने कहा नाहक गुस्सा होते हो!

कुछ देर में चाय मंगवाएंगे, दयाल बाबू ने टोकते हुए कहा, पांडेय जी सही कह रहे है, बात को समझा करो।

तभी चपरासी आया और कहने लगा कि दयाल बाबू बड़े साहब बुला रहे है, पांडेय जी भी उठे और लघु शंका को प्रस्थान कर गए।

सोचते हुए क्या माया है, दुनिया लघु शंका और दीर्घ शंका के हेर फेर में लगीं हुई है और हम अभी तक विकास के एजेंडे से कॉर्डिनेट करने में जान प्राण एक किए हुएं है।

तभी पांडेय जी ने लल्लू भीया को फोन लगाया।

कैसी है तबीयत!

किस की! लल्लू भाया ने पूछा

पांडेय जी ने कहा कल जल्दी निकल गए थे दफ्तर से

इसलिए पूछा।

अरे! पांडेय जी, यह हमारा तकिया कलाम है, जब जल्दी जाना होता है, आप भी सीखिए, अपने बहानों को नया करते रहिए, साहब लोगों को क्या फर्क पड़ता है!

ये लल्लू भईया की सोच थीं और ये पांडे जी की, कि जब तक बहुत जरूरी काम न हो, वे कहीं नहीं जाते थे, बल्कि अपने बॉस से एहसान लेना भी उन्हें पसंद नहीं था, बात करते है।

डॉक्टर लालित्य ललित - बी 3/43, शकुंतला भवन, पश्चिम विहार, नई दिल्ली 110063

कविता - उत्साह, उमंग, ऊर्जा का यह दीपक यूँ ही जलाये रखना - श्री एस के कपूर

[1]

अब यह दीया विश्वास का जलाये रखना।

ऊर्जा उमंग उत्साह सदा जगाये रखना ।।

यह दीपक की लौ अब बुझने न पाये।

यूँ ही प्रेम भाव सबसे अब बनाये रखना ।।

[2]

दीपावली ने दिया संदेश तम मिटाने का।

चीर कर अंधकार को प्रकाश बुलाने का ।।

मानवता प्रेम का उजियारा हरओर फैलाओअब।

काम करना अब सत्य को न्याय दिलाने का ।।

[3]

प्रकाश की किरण के आगे अंधेरा निकलता नहीं।

सच का उजाला झूठ से कभी गिरता नहीं ।।

सदियों से चक्र चलता चला आया है।

सूर्य के आते ही अंधकार कभी टिकता नहीं ।।

श्री एस के कपूर "श्री हंस" - बरेली

लेख - धनतेरस के मुहूर्त - पण्डित अनिल कुमार पाण्डेय

हम सभी जानते हैं कि दीपावली पांच त्योहारों का एक त्यौहार है। इन त्योहारों में सबसे पहला त्यौहार धनतेरस का होता है। धनतेरस के दिन भगवान धन्वंतरि, देवी लक्ष्मी और भगवान कुबेर की पूजा की जाती है। यह माना जाता है कि धनतेरस के दिन सोना खरीदने से उस सोने में समय के साथ में 13 गुना की वृद्धि हो जाती है।

धनतेरस प्रतिवर्ष कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन मनाई जाती है। इस वर्ष यह योग 10 नवंबर को पढ़ रहा है। इस वर्ष का मुहूर्त अत्यंत शुभ है। इसी दिन प्रदोष का व्रत है और व्यापार के राजा बुद्धदेव का पश्चिम दिशा में उदय हो रहा है।

मुहूर्त चिंतामणि ग्रंथ के नक्षत्र प्रकरण में के श्लोक क्रमांक 19 के अनुसार हस्त नक्षत्र में सोना खरीदना और गहना बनवाना शुभ होता है। 10 नवंबर को भुवन विजय पंचांग के अनुसार रात्रि के 11:58 तक हस्त नक्षत्र रहेगा। इसी प्रकार मेष वृश्चिक तथा सिंह लग्न सोना खरीदने के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। पौराणिक ग्रंथों में दिए गए मार्गदर्शन के अनुसार धनतेरस के त्योहार पर 10 और 11 नवंबर को सोने चांदी और अन्य धातुओं तथा हर प्रकार की खरीदारी करने के लिए शुभ मुहूर्त निम्न अनुसार हैं।

10 नवंबर को 11:21 दिन से 11:58 रात हस्त नक्षत्र होने के कारण सामान्य मुहूर्त है।

10 नवंबर को 11:59 से 12:21 तक का समय अभिजीत मुहूर्त होने के कारण अत्यंत शुभ है।

10 नवंबर को ही 11:59 से 13:22 तक शुभ की चौघड़िया होने के कारण यह मुहूर्त भी अच्छा है।

10 नवंबर को 16:07 से 17:30 तक का समय चर की चौघड़िया के कारण और 20:45 से 28:51 तक शुभ अमृत और चर की चौघड़िया होने के कारण भी अच्छा मुहूर्त है।

अगले दिन अर्थात 11 नवंबर को 7:51 से 9:14 तक तथा 11:59 से 13:22 तक भी मुहूर्त अच्छा है।

11 नवंबर को ही प्रातः काल 7:01 से 9:17 तक का समय भी खरीदारी के लिए उपयुक्त है।

इसके अलावा 5 नवंबर को रविपुष्य नक्षत्र में 11:39 तक वाहन आदि खरीदना शुभ है।

9 नवंबर को हस्त नक्षत्र में रात के 9:52 से पूरी रात वाहन आदि खरीदने के लिए शुभ मुहूर्त है।

19 नवंबर को सूर्योदय से रात के 10:48 तक भी वाहन खरीदा जा सकता है परंतु इसमें अभिजीत मुहूर्त में वाहन खरीदना अत्यंत शुभ रहेगा।

29 नवंबर को दिन के 1:55 तक तथा अभिजीत मुहूर्त में वाहन खरीदना शुभ रहेगा।

आपसे अनुरोध है कि हमें इस लेख के बारे में बतायें। जय मां शारदा। मां शारदा से प्रार्थना है या आप सदैव स्वस्थ सुखी और संपन्न रहें।

पण्डित अनिल कुमार पाण्डेय

सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता प्रश्न कुंडली और वास्तु शास्त्र विशेषज्ञ - साकेत धाम कॉलोनी, मकरोनिया सागर। 470004 मो 8959594400

व्यंग्य - किस्सा एक कहानी कासी - अखतर अली

मै एक कहानी सुनाना चाहता हूं।

यह उस लड़की की कहानी नहीं है जो थी तो मीठी लेकिन लोगो ने उसे देख देख कर नमकीन कर दिया। यह उन आंखो की भी कहानी नहीं है जिन आंखो को लोग ट्रेक्टर कहते है और उस पर इल्ज़ाम लगाते है कि उसकी आंखे जवानी को खोदती रहती है। यह उस नौजवान की कहानी भी नहीं है जिसकी बैंक की बुक में अंक नहीं है और प्रेम की बुक में शब्द नहीं है।

जी क्या कहा... नहीं नहीं यह उस हवेली की दास्तां नहीं है जहां खिड़की से इश्क का कारोबार चलता था और न ही यह उस समंदर की कथा है जिसमे एक लहर दूसरी लहर से पूछती है कि तीसरी लहर क्या है? यह उस समाचार पत्र की कहानी नहीं है जिसे फुल पेज का विज्ञापन मिल जाये तो वह कहानी और कविता को निरस्त कर देता है। अरे नहीं नही यह उस हसीन चेहरे की कहानी नहीं है नकाब में दब कर जिसका दम घुट रहा है।

यह उस नजूमी की दास्तां नहीं है जो सुबह से दोपहर बना रहा था और शाम हो गई, दोपहर तो बनी नहीं सुबह भी हाथ से गई। यह उदास मन, सूखे मौसम, पीली घास, सुस्त घोड़े और तेज़ औरतो की कहानी नहीं है। यह उन बूढों की कहानी नहीं है जिन्होंने जवानी में कुछ नहीं किया और न ही यह उन जवानो की कहानी है जिन्हें बुढ़ापे का खौफ़ नहीं। यह उनकी कहानी नहीं है जिन्हें होश में यादे ख़ुदा न रही और जोश में खौफे ख़ुदा न रहा। उन लोगो की कहानी तो है ही नहीं जो साहिल पे खड़े होकर तूफ़ा का नज़ारा देखते है।

यह एक ऐसी घटना की कहानी है जिसमें वाकया तो इत्तू सा है लेकिन विवरण घनेरा है। यह कोई ऐसी कहानी नहीं है जो आरंभ होते ही खत्म हो जाये और न ही ऐसी कहानी है जो एक बार शुरू हो जाये तो फिर खत्म होने का नाम ही न ले। यह एक ऐसी कहानी है जिसका जहां समापन होगा वहां से अनेक कथाए आरंभ होगी। इसका कथ्य उतना अच्छा नहीं है जितना अच्छा इसका शिल्प है। नरेशन ज़्यादा लग सकते है लेकिन नरेशन भी कथा साहित्य के अंदर की चीज़ है कहानी के बाहर का सामान नहीं।

अब मै कहानी आरंभ करता हूं... जी श्रीमान क्या कहा आप समझ गए मै किसकी कहानी सुना रहा हूं? नहीं नहीं यह उन अफसरों की कहानी नहीं है जो आफ़िस इसलिये आते है क्योंकि डाक्टर ने उन्हें आराम करने के लिए कहा है और न ही उन पतियों की है जो घर के काम भी आफ़िस में करते है। देखिये महोदय आप इतनी ज़ोर से मत चिल्लाइये यह नाज़ुक कहानी है हाथ से छूट कर गिर गई तो टूट कर चूरा चूरा हो जायेगी। इसकी किर्ची किर्ची बिखर जायेगी।

अरे नहीं जनाब यह पुरानी तस्वीर की नई प्रिंट नहीं है। इसमें रहस्य, रोमांस, एक्शन सब है।

क्या फ़रमाया इसे फ़िल्म निर्देशक को सुनाऊ इस पर अच्छी फ़िल्म बन सकती है? ऐसा है श्रीमान अच्छी कहानी और अच्छी फ़िल्म का आपस में कोई संबंध नहीं होता। अक्सर अच्छी कहानी पर फ्लाप फ़िल्म और वाहियात कहानी पर हिट फिल्मे बनी है। फ़िल्म कहानी के भरोसे नहीं चलती यह तकनीक और प्रस्तुतिकरण का माध्यम है। यहां खोटे सिक्के हिट और धन दौलत फ़्लाप है।

मेरी कहानी एक ऐसी कहानी है जो ज़रा भी कहानी नहीं लगेगी जबकि है पूरी की पूरी कहानी।

हर एक कहानी में घटना की जांच होती है मेरी कहानी में जांच ही एक घटना है। मै एक बात और स्पष्ट कर देना चाहता हूं यह किसी के समर्थन या विरोध में दिया गया बयान नहीं है।

इसमें न क्रोध है, न इर्ष्या है, न बदला। यह किसी देश की कहानी नहीं है यह समूची पृथ्वी की कहानी है। यह किसी व्यक्ति की कहानी नहीं है यह समूची मानवता की कहानी है। यह उस आहत व्यक्ति की कहानी नहीं है जो अपने दुश्मन की बर्बादी की दुआ मांगते हुए कह रहा है - हे भगवान उस घर में बस एक औरत चिडचिडी दे दे। यह एक अच्छी औरत की कहानी नहीं है क्योकि अच्छी औरत की कोई कहानी होती ही नहीं। यह बुरी औरत की भी कहानी नहीं है क्योकि किसी भले आदमी में इतना साहस नहीं कि वह ज़माने को किसी बुरी औरत की कहानी सुना सके। यह उस शिक्षक की कहानी भी नहीं है जिसकी कक्षा में कोई छात्र पल भर के लिए भी नहीं सो सकता क्योकि वह खुद इतने जोर से खर्राटे लेते है कि कोई और कैसे सोये?

मै अपनी तरफ़ से तो कहानी को ठोक ठोक कर तैयार किया हूं। इतनी ठोक ठोक से ये कितनी ठीक और कितनी ठाक हुई है यह तो ठीक ठीक से आप पाठक या श्रोता ही बता सकते है। मैं इतना जानता हूं कि भले मेरी कहानी का क्षेत्रफल छोटा है लेकिन इसका आयतन ज़बरदस्त है, व्यंग्य इसका वर्गमूल है। मेरी कहानी का जन्म किसी अन्य क्लासिकल कहानी की पसली से नहीं हुआ है। यह मेरी अपनी भोगी गई पीड़ा है।

यह एक गरीब किसान की कहानी नहीं है क्योकि अब कहानी के किसान ने भी गरीब होने से इंकार कर दिया है। उसने साफ़ साफ़ कह दिया है अब हमें गरीब, बेचारा, लाचार समझने की गलती न करना। यह बदनसीब लड़की की कहानी तो हो ही नहीं सकती क्योकि अब वह दिन गये जब लडकियां बदनसीब हुआ करती थी। अब तो लड़की शिक्षित है वह व्यवसाय करती है, नौकरी करती है, देश के लिए मैडल जीतती है।

मेरी कहानी में लड़की नहीं है। लड़की हो तो लोग सवालो की झड़ी लगा देते है। पहला सवाल लड़की सुंदर है क्या ? भाई साहब मेरी अपनी मान्यता है कि लड़की का लड़की होना ही कुदरत की इतनी सुंदर बात है कि उसमें अतिरिक्त सुंदरता तलाशना उचित नहीं। फिर पूछते है रंग कैसा है, लंबाई कितनी है, कहां तक पढ़ी है, व्यवहार कैसा है, पारिवारिक पृष्ठभूमि कैसी है,

मेरे बेटे के लिए बात चलाओ। माताए बहू की तलाश में कहानियों में भी घुसने लगी है।

यह उन लड़को की कहानी नहीं है जो डाक्टर, इंजीनियर और सी.ए. बनने के लिये मेहनत कर रहे है और न ही उन लड़कियों की कहानी है जो इनके डाक्टर, इंजीनियर और सी.ए. बनने का इंतेज़ार कर रही है। यह उन आशिको की कहानी नहीं है जो पलकों में सितारे लिए राहो में खड़े है और न ही यह ज़मीन के उन दलालों की कहानी है जो किसी की ज़मीन किसी की बता कर किसी को बेच रहे है। फिर भी यह उत्तेजक घटनाओं की स्पाइसी कहानी है।

कल्पना के प्लाट पर जो कहानी की ईमारत खड़ी हुई है इसमें रिश्तो के रौशनदान है, मोहब्बत की खिड़किया है, त्याग की छत है, ज्ञान का मुख्य द्धार है। इस कहानी के निर्माण में उच्च स्तर का राँ मटेरियल इस्तेमाल किया गया है, सड़क निर्माण की तरह कथा निर्माण नहीं हुआ है। कहानी के शरीर पर कही भी सफ़ेद दाग के निशान नहीं है। पूरी रचना में निकासी की तरफ़ ही ढ़लान बनाई गई है।

लगता है मै आज कहानी कह नहीं पाउगा। होता है कभी कभी ऐसा भी होता है जब बहुत कोशिशो के बाद भी ढंग की रचना बन नहीं पाती है। न ठीक से दृश्य बनते है, न प्रभावशाली भाषा तैयार होती है, न सही तरीके से पात्रो का चरित्र चित्रण ही हो पाता है। कहानी अकहानी होती जा रही है और कथन अकथन होता जा रहा है। घोषित अघोषित में तब्दील होते जा रहा है अतः मै तुरंत कहानी के प्रयास को रोक देता हूं।

अखतर अली - निकट मेडी हेल्थ हास्पिटल, आमानाका, रायपुर (छतीसगढ़) - मो.न. 9826126781 - Email - akhterspritwala@gmail.com

व्यंग्य - हैप्पी दीवाली - सुश्री अनीता श्रीवास्तव

सामने वाले घर में सभी कोरोना पॉजिटिव पाए गए थे। बेटे, बहु और छोटी बच्चियों को घर में ही कवरेन्टीन किया गया था किंतु श्री और श्रीमति शर्मा को हॉस्पिटल में ही भर्ती कर लिया गया। पूरे मोहल्ले में अजीब सा सन्नाटा था। सब्जी बेचने वाली औरतों और फल बेचने वाले आदमियों ने इस ओर आना बंद कर दिया था। अखबार आदि तो पहले से ही बंद थे। ठीक शर्मा जी के सामने वाली गली में तो मातम सा पसरा था। यूँ सुधा और उसके परिवार का शर्मा जी के यहाँ बहुत आना जाना नहीं था। मोहल्ले के बाकी घरों में भी बहुत घरोबा किसी से नहीं था। सुधा और उसका परिवार लम्बा समय दूसरे शहर में बिता कर आए थे। अब जा कर गृह नगर में तबादला मिला।

उसके अपने बच्चे और पति सनी शहर में पदस्थ थे। ऐसे में सुधा अपनी वृद्ध माँ को साथ ले आई थी। उसका अकेलापन दूर हुआ और माँ का भी। जब -तब बच्चे और सुधा के पति अपनी सुविधानुसार आते जाते रहते। इधर सामने के परिवार में कोरोना होने के बाद से गली मोहल्ले में फैली उदासी सुधा के मन में भी प्रवेश कर गई थी। माँ ने दशहरे की शाम उससे कहा, “तुझे भी घर की पुताई सफाई करा लेना चाहिए। अपने घर में ये पहली दीपावली है। शानदार होनी चाहिए।”

सुधा ने सुन कर सिर्फ ‘हूँ‘ कहा। उसके ऑफिस में भी रंग-रोगन का काम चल रहा था। मन में आया था कि वहां लगे लेबर से बात करे परन्तु न जाने क्यों ह्रदय एक उदासीपन से भरा हुआ था। उसके होंठ खुले ही नहीं। कल पूछ लेगी- यही सोचते हुए उसने स्कूटी स्टार्ट की और घर की ओर निकल आई।

उसका जीवन अति व्यस्तता के चलते स्वचालित सा है। नियत समय पर सोना, जागना, खाना, बाहर जाना और फिर सो जाना। मगर इस सबके बीच भी सुधा सहयोगियों और मित्रों से हास- परिहास के क्षण खोज ही लेती थी। किंतु कोरोना से बदले परिवेश ने उसके भीतर गहरे में कुछ बदल दिया था। क्या शर्मा परिवार पर आई विपत्ति इसका कारण है? दिन भर टी वी पर चलती खबरें जो कोरोना की बढ़ती भयावहता का लेखा- जोखा बयां करतीं हैं? गली में फैला सन्नाटा? या घर का अकेला पन? दूर बसे परिजनों की सुरक्षा और सेहत की चिंता? कुछ स्पष्ट नहीं था। किंतु इतना तो तय था कि इसका मिला जुला असर उसे खुश नहीं रहने देता था। त्योहार के उत्साह पर जैसे उदासी की स्याह चादर तन गई।

ट्रिंग... ट्रिंग...

उधर से सुधा के पति धीरज का फोन था।

सुधा ने अनमनेपन में ही कॉल रिसीव किया, “हेलो”

“क्या चल रहा है”

“कुछ खास नहीं ...वही रोजमर्रा के काम।”

जल्दी ही धीरज ने मतलब की बात बोल दी, “मैं कल आ रहा हूँ। बच्चे भी एक दो दिन में पहुंच जाएंगे। अभी- अभी मेरी उनसे बात हुई है... ठीक है रखता हूँ। बाय”

सुधा अब भी हाथ में मोबाइल पकड़े थी। उसने अपने आप को टटोला... क्या उसे धीरज के आने की खुशी नहीं है? क्या उसे बच्चों के आने की खुशी नहीं है? हद है। फिर ये मन की उदासी जाती क्यों नहीं। तभी माँ ने आवाज़ लगाई,

“अरे सुधी, दूध वाला सुबह खोया दे गया था। फ्रिज में रखा है। ज़रा देखना तो। मिलावटी तो नहीं है?”

“अरे माँ, इतनीं आसानी से कहाँ पता चलता है! इतनीं जल्दी पकड़ में आने लगे तो मिलावट होगी ही कैसे?’ उसने महसूस किया उसके स्वर में झुंझलाहट थी। शायद माँ का दिल रखने के लिए उसने फ्रिज खोला और पॉलीथिन में बंद खोया उठाया। तभी खिड़की के उस पार नज़र चली गई। वहाँ शर्मा जी का घर था। बाहर कोरोना की सूचना चस्पां थी और घर सील किया गया था। देखते ही उसका मन फिर एक बार व्यथित हो गया। उसने तुरंत कॉन्टेक्ट में शर्मा भाभी जी का नम्बर सर्च किया। बेटे ने फोन उठाया,

“अब कैसी तबियत है सबकी, बेटा?”

“बाकी सब ठीक हैं मगर मम्मी वेंटिलेटर पर हैं... इंजेक्शन लग रहे हैं।”

“हिम्मत रखो बेटा। बाकी सब की तरह मम्मी भी जल्दी अच्छी हो जाएँगीं।”

फोन रखने के बाद भी शर्मा जी के बेटे की बातें सुधा को आंदोलित किए थीं।

माँ सारा घटना क्रम देख रही थीं। बोल पड़ीं, “चलो जैसा भी है ये खोया भूनो। कल सब आ रहे हैं कुछ तो तैयारी कर लो।”

सबके आने से घर चहकने लगा था। आज बाजार से लाए जाने वाले सामान की सूची बन रही थी। सब गए तो सुधा दरवाज़े तक पीछे चली आई। तभी शर्मा जी का बेटा गाड़ी निकालते हुए दिखा। उसके मुंह से अनायास ही निकल गया, “मम्मी अब कैसीं हैं?”

“आंटी इंजेक्शन मिलने में प्रॉब्लम आ रही है...”

“बाहर से मंगवा लेते”

“जी, बाहर से ही मंगवाए हैं। ब्लैक में मिल रहे हैं। अभी तक तीन ही मिले हैं। डॉक्टर का कहना है दो और चाहिए।”

"कोशिश करो बेटा। मिल जाएँगे।"

कह तो दिया लेकिन अपने कथन की सत्यता पर उसे स्वयं ही संदेह था। बाजार से सामान आया तो वह थैले वहीं छोड़ अपनी बहन से विडियोकॉलिंग में व्यस्त हो गई। बहन अपने नए सुसज्जित घर पर मोबाइल का कैमरा घुमा रही थी। तभी उसे याद आया उसकी सासो माँ भी कोरोना से संक्रमित हुई थीं। । उसने उनका हाल पूछा अब वे स्वस्थ हैं लेकिन बातों ही बातों में पता चला उनके लिए मंगाए दो इंजेक्शन बच गए हैं। सुधा ने तत्काल उनसे इंजेक्शन देने का अनुरोध कर डाला और शर्मा जी के बेटे को इंजेक्शन लाने को कह दिया।

आज दीपावली की सुबह है। काम वाली बाई ने बताया सामने वाली आंटी आज अस्पताल से छुट्टी हो कर आ रही हैं। सुधा ने झाँक कर देखा शर्मा जी के दरवाजे से शासन द्वारा लगाई गई बैरिकेटिंग हटा ली गई है।

कोई किसी से कह रहा था,

"समय पर इंजेक्शन मिल गए। किस्मत अच्छी थी।"

सुधा ने सजल आँखों से मन ही मन ईश्वर का आभार माना। भीतर आई तो देखा माँ दीये पानी में भिगो रही हैं। बच्चे रंगोली के रंग सहेजने में लगे हैं। धीरज पूजा की तैयारी के लिए बार-बार माँ से कुछ न कुछ पूछ रहे हैं। लक्ष्मी जी की बहुविध पूजा और आरती के बाद दीयों को थाली में सजाए सुधा, छत पर आ गई। दीप के पड़ौस में उसने रखा दीप और उसके पड़ौस में रखा एक और दीप... और इस तरह बन गई झिलमिल करते दीयों की दीपमालिका। उसकी दृष्टि शर्मा जी के घर पर गई आरामकुर्सी पर शर्मा भाभी को बैठा देख मन प्रफुल्लित हो उठा। उसने हाथ उठाया और मुँह से निकल गया, "हैप्पी दीवाली"।

सुश्री अनीता श्रीवास्तव - टीकमगढ़, मध्यप्रदेश

व्यंग्य - सोनम बेवफा है - डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

मेरी सोनम बेवफा है। जब से सोशल मीडिया पर यह समाचार जैसा डायलॉग चर्चित हुआ है और इसी टाइटल से फिल्म बनी है तब से हर लड़की नवयुवती की अव्यक्त आकांक्षा है कि उसका नाम भी ऐसे ही गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले, शहर-शहर, बच्चों बड़े-बूढ़ों की जुबान पर हो। उसे ऐसे ही उसके नाम से देश -दुनिया में पहचाना जाए। वह किसी हिट फिल्म की नायिका की तरह सुर्खियां बटोरे। उसका नाम सात समंदर पार हर भारतीय तक पहुंचे। उसके परिचित-अपरिचित लोगों की प्रेमिकायें पत्नियां भी उससे ईर्ष्या करें कि हाय हम सोनम या सोनम जैसे न हुए। लेकिन हर किसी प्रेयसी या नवयौवना की किस्मत सोनम जैसी नहीं होती। ऐसी हो भी नहीं सकती कि सरकारी मुद्रा पर लिखी दिखाई देने लगे। टी.वी. चैनलों पर चर्चा हो, उस पर फिल्म बने लेकिन राजनीति में आए लल्लू पंजुओं की तरह विधायकी-सांसदी के सपने देखने वाले लप्पूझप्पुओं को देश में लोकतंत्र होने से कौन रोक सकता है, इसलिए इन्हें भी सपने देखने का पूरा हक़ है। मेरी सहानुभूति मिश्रित संवेदनायें इनके साथ हैं और रहेंगी।

आजकल जैसे मन की बात होती है वैसे ही किसी जमाने में मन्नू की बात होती थी। मन्नू हमारे जमाने में कॉलेज की मशहूर मॉडल थी। उसके क्लास की सहपाठिनें ही नहीं पूरे कॉलेज की लड़कियां उससे ईर्ष्या करती थीं। चार छह लड़कों की टीम उसके आगे पीछे 'गार्ड आव आनर' देती घूमती थीं। बाजार से निकलती तो दुकानदार उठकर खड़े हो जाते। मैं भी उसका मुरीद था। शादी हुई तो अपन भी भूल गये। बात भी आई गई हो गई। पर ये ससुरी सोनम ने उसकी याद दिला ही दी।

मेरी सोनम बेवफा है का टीवी चैनलों ने तब तक बतंगड़ नहीं बनाया था। तब तक किसी ने उसका चेहरा नहीं देखा था। कोई जान -पहचान भी नहीं थी। मगर जब से इस नाम से फिल्म आई उसकी अधिकतर पहचान सार्वजनिक हो गयी। ऐसे बुरे वक़्त में जबकि देश के एक नेता जी एक मोहतरमा की पहचान के मुद्दे पर घिरे पड़े हैं और अदालतों के चक्कर खा रहे हैं। अदालतों के चक्कर में एक बार फंस जाओ तो चक्कर काटने ही पड़ते हैं। अदालतें हैं ही संसद जैसी गोल-गोल। इस गलियारे से उस गलियारेचलते रहो चलते रहो। चरैवैति -चरैवैति। समय भी यही है। सचमुच इसी का समय है

सोनम बेवफा है तो है कोई दूसरा आपके लिए क्या करे और दूसरों की छोड़िये आपने ही अपने लिए अब तक क्या कर लिया क्या किया और क्या बिगाड़ लिया उसका और अब आगे क्या करने का इरादा है पिछले ढाई-तीन सौ साल की उर्दू शायरी गवाह है कि अगर कोई बेवफ़ा है तो है। तुम क्या जोर जबरदस्ती से उसका मन बदल लोगे जब उसका तुम्हारे साथ वफ़ा का कोई इरादा ही नहीं है तो फिर और वफा की बात तो तब हो जब उसने तुम्हारे साथ प्यार का इक़रार किया हो। यदि तुम्हारा प्यार एक तरफ़ा है तो उसका इलाज क्या है सोनम को तो पता ही नहीं है कि कोई पागल उसके पीछे पड़ा है। उसके लिए रातों को जागता है चांद तारे देखता है अपने बाल नोंचता है। तुम न हुए मीर दाग़ दर्द हो

गए। हद होती है पागलपन की। इससे अच्छा तो किसी उर्दू शायर के शागिर्द बन कर शायरी सीख लेते। ज़िंदगी अपने हाथों से खराब करते। किसी दूसरे का नाम तो न लगता?एक महिला तो बदनाम न होती। और अभी क्या बिगड़ा है उसका पीछा छोड़ो और अपना कोई बढ़िया सा तख़ल्लुस रखकर शायरी शुरू कर दो। शायद तुम्हारी किस्मत चेत जाए।

और यदि तुम्हारी बात या फिल्म सही है तो सोनम को पता है कि वह उसे बेवकूफ बना रही है लूट रही है। तब तो वही उत्तरदायी है। लेकिन दोषी फिर भी नहीं है। अपनी मूर्खता का दोष किसी और पर कैसे डाल सकते हो

इसी घटना से उद्वेलित-उत्प्रेरित ऐसी ही महत्वाकांक्षा से पीड़ित मेरी एक पुरानी प्रेमिका ने कल देर रात अपने साथ सात फेरे लिए पति के सोने के बाद मुझे फोन किया कि भले ही जीवन भर के लिए एक दूसरे के नहीं हो पाए एक दूसरे के साथ नहीं रह पाए एक साथ जी नहीं पाए मगर लैला मजनू हीर रांझा शीरी फरहाद की तरह एक दूसरे के नाम के साथ नाम जोड़कर फिल्मी जोड़ियों की तरह फेमस तो हो ही सकते हैं। यदि यह स्वीकार नहीं तो आजकल की महिला नेताओं की भांति अपने नाम के साथ घसीटे गये नाम की तरह संयुक्त नाम रख सकते हैं बोलो

सुनकर ही दंग था अचानक क्या जबाव देता मोबाइल के घनघनाने से निद्रा से अर्धनिद्रा की ओर अग्रसर होता हुआ हड़बड़ाकर उठ बैठा। मोबाइल में उसका नम्बर देखते ही सबसे पहले देखा कि कहीं पत्नी जाग तो नहीं रही? कहीं पर्सनल बातचीत सुन तो नहीं लेगी सामने भी पुराने जमाने की चहेती थी। उसे क्या बात करने से भी मना कर देता? बात नहीं करता तो लोगों का प्रेम से ही विश्वास उठ जाता। प्रेम भी प्रेम चौपड़ा बनकर रह जाता। वीडियो काल नहीं था फिर भी सहमति में बार बार सिर हिलाते हुए उसकी बात तसल्ली से सुनी और मोहल्ले के पार्षद की तरह झूठा आश्वासन दिया-ठीक है दो-चार दिन रुको देखता हूं देश का माहौल क्या है क्योंकि इतनी शोहरत के बाद पूरा देश ही परिवार की तरह हो जाता है। सवाल यह कि कहां से शुरू करूं कैसे आगे बढ़ूं बात कितनी बढ़ाऊं और कहां ले जाकर उसके साथ खत्म करूं बात इतनी आसान भी नहीं थी। वो जितनी हिम्मत कर रही थी उतनी मुझमें थी भी नहीं। होती तो पहले ही ले उड़ता।

नई परियों को तो सब कुछ बालों का रबर बैंड लगता है। बालों में डालो, खींचो और मोड़कर छोड़ दो। लेकिन अपुन तो कोई रबर बैंड हैं नहीं? घर गृहस्थी वाले हैं। पूरी बात सुनकर सोचा कि न सोनम की सुनना है, न आगे चर्चा करना है। नंबर ही ब्लाक कर देता हूं। किसी और नंबर से काल आया तो सीधे घर जाकर उसके पति से बात करूंगा। ठीक है न।

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल - स. नई गजल, सदर बाजार शिवपुरी म.प्र. - मो. 9425766485

व्यंग्य - त्रिशूल से ताकतवर गाली - श्री दिनेश अवस्थी

देवताओं की वाणी की तरह कभी मनुष्य की वाणी में भी सिद्धि थी। जो वह कहता था, वही हो जाता था। देवताओं के बीच के कुछ दुष्ट देवताओं ने मनुष्य के मस्तिष्क में शैतान का प्रवेश करवा दिया। मनुष्य का मस्तिष्क शैतान को इतना भाया कि सारे मनुष्यों के मस्तिष्क में वह प्रकाश-गति से समा गया। देवता अभई तक नहीं जान पाए हैं कि उनके साथ दुष्ट देवता भी हैं। दुष्ट देवताओं ने शैतान से मैत्री कर सभी देवताओं को जहां का तहां रोक दिया है। देवता नहीं जान पाए हैं कि उनका देवत्व स्थिर क्यों हो गया है? देवत्व में वृद्धि क्यों नहीं हो सकी?

शैतान को मनुष्य के भीतर देवता ही पहुंचा सकते थे। मनुष्य में यह ताकत थी ही नहीं कि वह शैतान को स्वयं में प्रविष्ट करवा सके। शैतान मनुष्य के मस्तिष्क में चला गया तब मनुष्य की सिद्ध-वाणी में समाकर उसने नुकसान करवाना शुरू कर दिया। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी। मनुष्य की सिद्ध वाणी से एक-दूसरे का नुकसान होने लगा। अब देवताओं का नुकसान भी मनुष्य अपनी सिद्ध-वाणी से करने लगा। तब देवताओं ने मनुष्य को भगवान से श्राप दिलवाया कि उसका कहा 'बुरा' नहीं फलेगा। शैतान तो मनुष्य मस्तिष्क में था, अब अच्छे कथनों के भीतर बुरी नीयत को छिपाकर आदमी, दूसरों का बुरा करने लगा। तभी से मनुष्य द्वारा देय न तो श्राप फलते हैं और न ही आशीर्वाद फलता है। आशीर्वाद के न फलने की कोई चिंता नहीं किन्तु श्राप का न फलना आदमी से सहन नहीं हुआ। उसके द्वारा देय पहले श्राप के न फलने पर उसके मुख से पहली गाली निकली होगी। अब स्थिति यह कि आदमी न तो देवताओं के करीब है और न ही शैतान के करीब है। वह तो इन दोनों से अलग ब्रह्मांड के किसी अज्ञात कोने में जा बसा है गो कि उसका स्थायी पता आज भी पृथ्वी है।

गाली की उत्पत्ति की एक कथा देवताओं वाले प्रसंग से हट कर है। वह यह कि पाषाण-युग में पत्थर के हथियारों के बीच गाली का अाविष्कार हुआ होगा। जरूरतें जब आदमी के अधीन थीं तब गाली उसके पास फटक भी नहीं सकी थी। पत्थरों ने जरूरतों को साधे रखा था। बाद में जरूरतों के अधीन होने पर आदमी के सकारात्मक गुणों पर भी पत्थर पड़ने लगे। पत्थर के नुकीले हथियारों से वह भोजन के लिए जानवरों को मारता था। फिर शौक और हिंसा के लिए उसने जानवरों को मारा। शौक और हिंसा के लिए उसका पत्थर का हथियार जब चूका होगा तब जीवित जानवर के प्रति उसके मुख से पहली गाली निकली होगी।

गाली का अविष्कार जिसने भी किया होगा, उसके शिक्षण की ताकत ऋषियों और गुरुओं से बहुत अधिक थी। उसने अपने स्कूल का प्रचार-प्रसार भी नहीं किया होगा। उसका स्कूल जो हाउस फुल हुआ था, वह आज तक चला आ रहा है। बगैर समक्ष-शिक्षण और बगैर डिस्टेंस लर्निंग, गाली का स्कूल उत्कृष्ट परिणाम देते आया है।

गाली में जोरदार संप्रेषण-क्षमता होती है। गाली देने वाला, गाली में ठीक से घृणा मिलाने में चूक नहीं करता। यदि चूक भी जाए तब गाली पाने वाला अपनी तरफ से घृणा को एम्प्लीफाई कर ग्रहण कर लेता है।

ऋषि-गण एवं गुरु-जन और कुछ नहीं कर सकते थे तो उस महान व्यक्ति से संप्रेषण की ताकत का रहस्य ही जान लेते जिसने गाली का अविष्कार किया था। अविष्कारक ने घृणा में भी मनुष्य के आपसी रिश्तों का ख्याल रखा, उसने महिला के निजी अंगों की उद्घोषणा कर रिश्ता जोड़ने का खूब ख्याल रखा था। ताम्रपात्र के साथ चीन में आविष्कृत कागज भी खूब भरे गए पर ऋषि और गुरु मनुष्य के बीच सौहाद्र और मानवीय संबंध विकसित नहीं कर पाए। उधर गाली के आविष्कारक ने घृणा की भरपूर ताकत से मनुष्य के रिश्तों का जोरों से उद्‍्घोष करना सिखा दिया।

बड़े से बड़े धैर्य और चुप्पी को तबाह करने की जबरदस्त क्षमता गाली में होती है। गाली देने की योग्यता हासिल करने के लिए घृणा के अतिरिक्त कोई योग्यता हासिल नहीं करनी पड़ती। घृणा की प्राप्ति के लिए कोई अतिरिक्त प्रयास नहीं करना पड़ता। गाली का साथ देने वह स्वत: दौड़ी चली आती है। गाली अपने साथ क्रोध भी लाती है। क्रोध के साथ आयी गाली, प्रतिक्रिया-विहीन नहीं होती। क्षोभ, क्रोध, दयनीयता, बेशर्मी या बेचारगी गाली की प्रतिक्रिया स्वरूप हो सकते हैं। बहुत कम होता है जब गाली युक्त क्रोध, प्रतिक्रिया विहीन हो।

गाली को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए घृणा का गहराना जरूरी है। गहराने के लिए घृणा को भी अलग से प्रयास नहीं करना पड़ता। बस स्वार्थ और अहंकार को खुली छूट दीजिए फिर देखिए, शक्तिशाली गाली का कमाल। ऋषि और गुरु तमाम आदर्श और नैतिकता सिखाते रह गए पर गाली को नहीं गला पाए।

गाली घृणा का भोजन है। धुआंधार गालियां देते किसी व्यक्ति को देखें। जैसे-जैसे गालियों की संख्या बढ़ती जाती है घृणा से उसका चेहरा विकृत होता जाता है। जिन्हें शैतान पर शोध करनी हो वे उन व्यक्तियों के चेहरों को वीडियो फिल्म में कैद कर लें, जो संपूर्ण घृणा से गाली दे रहे हों। उन्हें अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ेगी और न ही उन्हें अधिक भटकना पड़ेगा। गालियों तथा घृणा की नयी-नयी आयाम-अनुभूतियां उन्हें प्राप्त होंगी।

गाली में घृणा की ताकत ही नहीं होती, वह अपने साथ शूल लिए होती है। शंकर जी के त्रिशूल में तीन शूल हैं पर गाली में सैकड़ों शूल होते हैं। गाली का सामना करते समय शूल की तरफ ध्यान नहीं जाता। समय बीतने के साथ गाली के शब्दों की सांद्र घृणा, तनु हो जाती है और गाली के शब्द सह्य हो जाते हैं पर गाली सैकड़ों शूल मस्तिष्क की कोशाओं में धंसकर लम्बे समय तक त्रास देते हैं। निराले होते हैं वे, जो भीतर के भलेपन और उदारता के कारण गाली के साथ आए शूल का अनुभव नहीं करते। उसे तवज्जो नहीं देते।

विनम्रता, सदाशयता और लोकहित कर्त्तव्य को पहचानने और समझने की सामूहिक तमीज जब समाज में आएगी और इस तमीज को समाज अपने केन्द्र में स्थापित करेगा तब मानव जाति की उन्नति के

वास्तविक मायने प्रकट होंगे। विनम्रता सदाशयता और लोक-हित को पहचानने और समझने की तमीज गाली-युक्त समाज में नहीं होती।

श्री दिनेश अवस्थी, जबलपुर, मध्यप्रदेश

ग़ज़ल - डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

ख़ुशी कतरा के निकली है तो अनजानी सी लगती है,

हमारा दिल भी सहरा सा है वीरानी सी लगती है।

इनायत है वो अपना हाथ सर पर फेर देते हैं,

बुज़ुर्गों की यही आदत महरबानी सी लगती है।

मैं गीली रेत में लड़ते झगड़ते घर बनाता था,

मगर अब याद करता हूं तो नादानी सी लगती है।

जो उठते ही सुबह से शाम सबका ध्यान रखती थी,

वही मां आजकल सबको परेशानी सी लगती है।

चमकती ज़िन्दगी, दुनिया समझती है सितारों सी,

उसी को आंख में ठहरे हुए पानी सी लगती है।

ज़रा सी आस की डोरी, किसी के हाथ में ठहरी,

अपीलें हों गईं ख़ारिज ये निगरानी सी लगती है।

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल - नई गजल, सदर बाजार शिवपुरी म.प्र. मो. 9425766485

कविता - दीपोत्सव मनाएं - डॉ मुक्ता

आओ! हम सब दीपोत्सव मनाएं
एक दीया उन शहीदों के नाम जलाएं
जिन्होंने हंसते-हंसते किया प्राणोत्सर्ग
देश रक्षा हित लुटा दिया अपना यौवन

आओ! एक दीया किसानों के हित जलाएं
जो अपना खून-पसीना एक कर अन्न उपजाते
जिसे खाने पर होता हम सबका पालन-पोषण
और हमारा अस्तित्व रहता इस जहान में रक्षित

आओ! एक दीया उन श्रमिकों हित जलाएं
जो दिनरात एक कर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाते
परंतु वे खुले आकाश तले अपनी ज़िंदगी बिताते
जिनमें हम सुरक्षित जीवन-यापन करते

आओ! एक दीया उन गरीबों के हित जलाएं
जो रोटी, कपड़ा और मकान नहीं जुटा पाते
बच्चे उनके आजीवन अभावग्रस्त जीवन बिताते
उनकी दयनीय दशा देख हृदय उद्वेलित हो जाता

और नेत्रों से बह निकलता आँसुओं का सैलाब
परंतु हम लाख चाहने पर भी उन गरीब,अभागों
के निमित्त हम सुख-सुविधाएं भी नहीं जुटा पाते
और वे उसे नियति स्वीकार गुज़र-बसर करते

काश! इंडिया और भारत का भेद मिट जाता
हर इंसान यहाँ समानाधिकार प्राप्त कर समानांतर
जीवन जीता, स्व-पर व राग-द्वेष का भेद मिट जाता
और मन-आँगन में स्नेह,सौहार्द व आनंदोल्लास बरसता

डा. मुक्ता - माननीय राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत, पूर्व निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी
संपर्क - #239,सेक्टर-45, गुरुग्राम-122003 ईमेल: drmukta51@gmail.com, मो• न•...8588801878

कविता - पिछली धनतेरस पर... - डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'

पिछली धनतेरस पर
घर से बाहर कदम रखा तो
हवा के साथ धकियाकर
धौल जमाते हुए
पल्ले ने कहा
चीनी के खिलौने लाना न भूलना
चौखट ने कहा
पाव भर सरसों के असली तेल के साथ
अबकी मिट्टी के दीये ही लाना
मुंडेर से कौए ने
दुछत्ती से गौरैया ने
जैसे औचक हाँ भरते हुए उड़ान भर ली
द्वारे की निबिया गुहराई
दुइ चार हमरे चौतरे बदे भी लाना
कुम्हार के बच्चे खुश होंगे
आगे हरहराते हुए पीपर दउवा बोले
सही कह रही है छुटकी
आगे छतनार छाया लिए
बरगद दादा भी अपनी करधनी की
जगह -जगह से
नीचे लटकती ढीली गाँठों को
कसते हुए कसमसाए
जैसे सोच रहे हों कहूँ कि न कहूँ
फिर कंधे उचकाए और बोले
इस बार खूब
तेल भर-भर कर रखना दीये
हमारी जड़ों के आस- पास
नदी पार के बच्चे
ये दीये लेने
उस दिन अधिरत्ता ही
तैर कर आ जाएंगे इस पार
और
मेरी जड़ों में लटक कर झूले बिना ही
इनमें बचे तेल को
सीसियों में उड़ेल
साथ में दीयों को समेट
वे बच्चे
उड़ जाएंगे उस पार उलटे पैर
जब तक सुलगेगी आग चूल्हे में
इसी तेल में तैर कर निकलेंगी पूड़ियां
सब्जी छौंकेगी इनकी माँ
इन्हीं दीयों से बना लेंगे तराजू
खेल लेंगे तुम्हारे बच्चों की तरह ही
कुछ देर वे बच्चे भी।

डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'

कहानी - गुझिया - डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी

टैक्सी आ गयी। सामान रखा जाने लगा। फ्लाइट का समय हो गया था।

बेंगलूर पहुँचते पहुँचते रात हो जायेगी। और घर पहुँचते पहुँचते बच्चे सो जायेंगे। मैं ने इस बार भी कितनी बार मां से कहा, "बाबूजी से बात छेड़ो न। अब यहां अकेले अकेले क्यों पड़ी हुई हो? चलो, बेंगलूर। मेरे पास... ।"

माँ का वही जबाब था, "जब तक हाथ पांव चल रहे हैं - हमें अपना काम कर लेने दे। फिर तो तू है ही।"

और भी एक समस्या थी। इस मकान का क्या होगा? मैं ने वहां अपना फ्लैट कब का ले लिया है। तंख्वाह से लोन की किस्त भी कट रही हैं। रिटायरमेंट के बाद यहां आकर न मैं रह पाऊँगा, न मेरा छोटा भाई। यहाँ न बिजली है, न पानी। ऊपर से सड़क सीधी कभी नहीं चलती। हमेशा नीचे या ऊपर। खैर, मन को यही समझाता रहता हूँ - जब समस्या आयेगी, तब उसका हल भी ढूँढ़ा जायेगा...

"रुचि, इसमें गुझिया है। सूटकेश में और सामानों के ऊपर रखना। घर जाते ही पैकेट खोल लेना। वैसे तो तला हुआ सामान खराब नहीं होता। फिर भी गरम गरम धरा गया है-, कहीं-! "मां ने पत्नी को एक पैकेट थमाते हुए कहा।

"तुम भी न माँ-। अब ये सब करने की क्या जरूरत थी?" मैं ने कहा। वैसे मन में लड्डू फूट रहे थे, "बेकार की इतनी मेहनत!"

"बेकार की?" माँ ने मेरी आँखों में झाँक कर कहा, "तुझे मेरे हाथ की गुझिया इतनी पसंद है। और मैं ने क्या किया? मैदा बेलना, खोवा भूनना, भरना, तलना - सब कुछ तो रुचि ने ही किया। "

"अम्मांजी, यह मत कहिए। वरना कहने लगेंगे, - तुम्हारी गुझिया मेरी माँ जैसी नहीं होती। "

बाबूजी को प्रणाम कर हम कार में बैठ गये। मेरी आँखों के सामने एक पुरानी तस्वीर खिल उठी... ठीक जैसे पानी में परछाई तैरती रहती है...। कार चलने लगी।

बी.टेक. सेकेंड या थर्ड ईअर में था। पंद्रह अगस्त, जन्माष्टमी और एक इतवार को लेकर तीन दिन की छुट्टी थी। एक दिन का मास कट। तो करीब चार दिन की छुट्टी। रात के डिनर के बाद मैं स्टेशन के लिए निकलने ही वाला था कि अपनी लॉबी के तीन चार दोस्तों ने मुझे घेर लिया, 'क्यों गुरुघर जा रहा है? तेरे ही मजे हैं। "

बस, करीब एक रात की जर्नी होने के कारण मैं दो दिन की छुट्टी में भी घर भाग सकता था। इन बेचारों को जलन होती। इनके घर दूर जो थे। मेरा लैब पार्टनर विश्वेश दत्त बोला, 'अरे मोटे, घर से गुझिया लेते आना। चाचीजी के हाथ की गुझिया निराली होती हैं। '

बाकिओं ने मेरा बैग छीन लिया।

“अबे दे। मेरी देर हो रही है। ”

“पहले बता स्साले, गुझिया लायेगा न?”

“खा कसम। ”

“किसकी?”

“उसकी।” उन लोगों ने इशारे से रुम की दीवार पर चिपकी हीरोइन की फोटो को दिखाया।

“उस बेचारी को क्यों बंबई से यहां घसीट रहा है? जरूर लाऊँगा मेरी जान, तेरी कसम। ” हँसते हँसते मैं ने रुम बंद कर दिया।

स्टेशन जानेवाले और तीन चार लोगों के साथ एक टेम्पो में बैठ कर मैं चल पड़ा।

घर पहुँचते ही मैं ने माँ से कह दिया था, 'माँ, जाते समय मेरे साथ गुजिया दे देना। वरना सब मुझे नोच खायेंगे।”

माँ ने मुस्का कर सर तो हिला दिया, मगर जन्माष्टमी का उपवास, फिर घर का काम- इन सब चककरों में बिल्कुल भूल ही गयी। वैसे मेरी माँ एक एक आदमी का खाने पीने का ख्याल रखा करती थी। छोटे चाचा को भिंडी की सब्जी लसलसी लगती थी। जिस दिन भिंडी बनती, उनके लिए अलग से परवल की भुजिआ बनाना न भूलती।

बाबूजी को अरहर की दाल पसंद न थी। सो, जिस दिन हम सभी अरहर की दाल से रोटी खाते, बाबूजी की कटोरी में मूंग ही रहती।

वापस आने के दिन मुझे सुबह की ट्रेन पकडनी थी। पहले दिन शाम को यूँ ही चाय पीते पीते जब माँ कह रही थी, 'तू ने अपना सामान ठीक से पैक कर लिया है न?”

“हाँ, माँ। अब कितनी बार पूछोगी? तुमने गुझिया बना दी है न?”

“हाय राम!” माँ परेशान हो उठी, 'तू ने तो एक बार भी याद नहीं दिलाया। खोआ मँगा लेती। अब क्या होगा?”

“क्या माँ, तुम भी-!” मैं झुँझला उठा। हाथ की चाय कड़वी लगने लगी। मैं उठ गया।

“अरे चाय तो पी ले -”

“नहीं रहने दो।” मुझे गुस्सा आ रहा था। मैं उबलने लगा, 'तुमने एक बार भी न सोचा दोस्तों के सामने मेरी मिट्टी पलीद होगी। अब?” फिर मैं जाने क्या क्या बक बक करता रहा।

माँ चुपचाप मुझे देखती रही। मेरी बकबक सुनती रही। आखिर रसोई की ओर जाते जाते उन्होने सिर्फ इतना ही कहा, “अपने बाप की तरह तू भी खाली मेरे ऊपर बरसेगा ही? तू भी तो खोवा ला सकता था।”

मुझे तैश आ गया, ”मुझे क्या मालूम कि खोवा चाहिए -?” अगर मालूम होता तो भी क्या मैं लाता? असली बात तो यह है कि मैं भी भूल ही गया था। मगर उस समय बेचारी माँ पर आग उगल रहा था।

माँ तो थी ही ऐसी। मैं ने सुना था बाबूजी की बहुत इच्छा थी कि माँ भी जाड़े में एक कार्डिगन पहने।

मगर माँ टालती रही। बुआ का नाम लेकर कहती, ”लोग क्या कहेंगे कि अनब्याही ननद बैठी है, और यह गुलछर्रे उड़ा रही है!”

रात का खाना मैंने ठीक से नहीं खाया। माँ उदास थी। मैं ने भी उन्हे नहीं मनाया। उनके गले लिपट कर कह सकता था, “अच्छा बाबा, अगली बार तुम ढेर सारी गुझ्िया बना देना। फाइन समेत!”

मगर मैं था कि अपनी झूठी 'प्रेस्टिज' के चक्कर में खाना खाकर लेट गया। भोर में उठना भी था।

अलार्म बजते ही मैं जल्दी जल्दी तैयार होने लगा। रात की बात याद आते ही दिमाग फिर से खट्टा हो गया। सभी दोस्त मुझे जरूर छेड़ेंगे, 'स्साले कंजूस!” और जाने क्या क्या कहेंगे।

पराठे खाकर, चाय पीकर, दादा दादी, और बाबूजी माताजी को प्रणाम कर मैं चलने लगा तो माँ ने एक पोटली अलग से मेरे हाथों में थमा दी, “सँभाल कर ले जाना। अभी भी गरम है।”

“यह क्या है?”

“तेरे दोस्तों के लिए गुझिया! रात ही में मैं ने तेरे बाबूजी को कहकर खोआ बाजार से खोवा मँगवा लिया था।"

मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ, “और तुम सारी रात बैठ कर गुजिया बनाती रही? मुझे पता भी न चलने दिया?”

माँ मुस्कुरा रही थी, 'तू क्या करता? मेरे साथ मैदा बेल देता?”

मैं ठगा सा खड़ा रहा। न माँ की ओर नजरें उठा कर देख पा रहा था। मेरी आँखें मुझे धोखा देने लगीं, 'धत्, तुम भी न-! पता नहीं क्या करती रहती हो!” कहते हुए मैं भाग खड़ा हुआ।

बेंगलूर में घर पहुँचते ही हमारे बच्चे अपनी दादी की बनायी गुझ्जिया पर टूट पड़े। मैं डाइंग रुम में बैठा था।

“पापा।” कहते हुए मेरी बेटी एक प्लेट में गुझिया लेकर आ गयी, ”लो, माँ ने कहा तुम भी खा लो!”

मैं ने उधर देखा और हँस दिया, “अच्छा, रख दे।”

“नहीं, पहले तुम खाओ। ”छह साल की सावनी अपने नन्हे से हाथ से एक गुझ्निया मेरे मुँह में दूँसने लगी।

“अच्छा, मेरी माँ, चल मैं खा लूँगा। पहले तू तो खा -!” वह अपने भैया के पास भागी। फिर मैं ने उनकी माँ को बुलाया, “रुचि, तुम भी इसमें से खाओ न -!” मैं एक गुझ्चिया उसके मुँह के पास ले गया।

“आप भी हद करते हैं।“ वह मानो झेंप गई, “बच्चे देखेंगे तो क्या कहेंगे?”

“धत् तेरी के-|खाओ न -!”

“जरा ठहरिए। अम्मांजी को फोन कर लूँ।" मेरी बगल में बैठे बैठे उसने मोबाइल से घर का नम्बर मिलाया, “अम्मां हम लोग ठीक ठाक पहुँच गये हैं।“ उसने स्पीकर लाउड कर दिया।

“तुमने सबको गुझ्चिया दे दी?”

“हाँ हाँ। बच्चे उस कमरे में हैं। और आपका मुन्ना तो यहीं बैठ कर खा रहे हैं।"

उसने मुझे मोबाइल थमा दिया - “हाँ माँ, बोलो -!”

“गुझिया ठीक बनी है?”

पता नहीं क्यों मेरा गला भर आया था, “हाँ माँ -!”

“क्या हाँ माँ, हाँ माँ कर रहा है?” माँ और कुछ बातें करना चाहती थी, “तेरी पसन्द की चीज है। इस बार चिरौंजी देना भूल गयी। और खोआ जरा ज्यादा भून गया था।"

“नहीं माँ, बहुत अच्छी बनी है। बहुत अच्छी -!” मैंने मोबाइल रुचि के हाथ में थमा दिया। आँखें फिर से धोखा देने लगी थी।

माँ इतनी दूर रह कर भी मेरे पास ही बैठी थी। अपने बेटे को गुझिया खिला रही थी।

डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी - फ्लैट नं. 304, चौथी मंजिल, टावर नं, मंगलम आनंद, फेज 3ए, हाज्यावाला कॉलोनी, रामपुरा रोड, सांगानेर, जयपुर, 302029.. मो. 945568359, 940244489. ईमेल: asrc.vns@gmail.com

कविता - दीपावली - सुश्री शन्नो अग्रवाल

ज्योति के नव-पुंज सी आ गयी दीपावली
न घर कोई उदास हो उजास हो गली-गली।

अहम भाव को जला ज्ञान दीप टिमटिमायें
कष्ट सबके दूर हों भेद-भाव को मिटायें।

हृदय द्वार पर भरे नेह कलश छलक जायें
हर निराश हृदय में आस का दीपक जलायें।

मार कर मन के निशाचर लोभ-स्वार्थ-बैर के
गीत हम गुनगुनायें शांति और धैर्य के।

प्रण सभी के साथ हों स्वर सभी के साथ हों
नव-ऊर्जा, नव-चेतना से सबके भरे पाथ हों।

प्यार और निस्वार्थ की भावना चहुँ ओर हो
उल्लास और उमंग की हर नई एक भोर हो।

इस धरा पर दीप बन हम जलें सब के लिये
यदि एकता हो सभी में तो जल पड़ें सारे दिये।

सुश्री शन्नो अग्रवाल

कविता - दीवाली का पुनरागमन - कर्नल प्रवीण त्रिपाठी

एक बार फिर द्वारे आया, पावन पर्व दिवाली का।
एक नया संदेशा लाया, खुशियों की दीपाली का।

द्वार-द्वार होगी रंगोली, स्वच्छ सभी आँगन होंगे।
बंदनवार सजें दरवाजे, उज्ज्वल सब दामन होंगे।
बड़ी जरूरत होगी इस दिन, आम्रपर्ण की डाली का।
एक बार फिर द्वारे आया, पावन पर्व दिवाली का। 1

जगह जगह दीपक दमकेंगे, छज्जों से लड़ियाँ लटकें।
तिमिर और अँधियारा भागे, पास नहीं उस दिन फटकें।
यादगार यह पर्व बनायें, रोपें वृक्ष तमाली का।
एक बार फिर द्वारे आया, पावन पर्व दिवाली का। 2

खील-खिलौने और बताशे, थाल सजेंगे भर-भर के।
मिष्ठानों से भोग लगा कर, मन प्रफुलित हों घर-भर के।
लक्ष्मी गणपति के पूजन में, हो प्रयोग गंधाली का।
एक बार फिर द्वारे आया, पावन पर्व दिवाली का। 3

कब छोड़ेंगे ढेर पटाखे, बच्चे यह सोचें मन में।
चुपके से जा बम्ब दगाते, नहीं बँधे मन बंधन में।
ध्यान प्रदूषण का भी रखते, जो दुश्मन खुशहाली का।
एक बार फिर द्वारे आया, पावन पर्व दिवाली का। 4

सुखसमृद्धि से जीवन भरता, नाश करे कंगाली का।
एक बार फिर द्वारे आया, पावन पर्व दिवाली का।

कर्नल प्रवीण त्रिपाठी - नोएडा/उन्नाव

कविता - आई दीवाली - सुश्री शेफालिका श्रीवास्तव

जगमग दीप जलाओ
आई दीवाली रे
ख़ुशियों के तुम गीत सुनाओ
आई दीवाली रे

आशाओं का दीप जलाओ
बाति लगाओ नेह की
तभी जागेगा स्नेह बंधन
डोर बँधेगी गेह की

हर आँगन में उजियारा हो
तिमिर हटे संसार का
हर दिल के सपने हो पूरे
दिया जलाओ प्यार का

प्रेरणा आशाओं का अब
मिल कर दीप जलाए सब
भीतर के अँधियारे को अब
मिल कर दूर भगायें हम

हर पड़ाव को मंज़िल समझो
दीया जलाओ प्यार का
आने वाले कल को ना भूलो
वर्तमान को जी भर जी लो

चुन्नू आओ , मुन्नू आओ
खूब पटाखे तुम चलाओ
नाचो गाओ ख़ुशी मनाओ
मिट्टी के तुम दीये जलाओ

हिल मिल खूब मिठाई खाओ
नयें नये कपड़े सब पहनो
पूजन अर्चन कर लो तुम सब
आई दीवाली रे

जगमग जगमग दीप जलाओ
आई दीवाली रे

शेफालिका श्रीवास्तव भोपाल

संस्मरण- हरिशंकर परसाई और उनके अर्थपूर्ण शब्द - श्री द्‍वारिका प्रसाद अग्रवाल

सन 1981 की बात है, श्री हरिशंकर परसाई को मैंने बिलासपुर निमन्त्रित करने हेतु पत्र लिखा तो उन्होंने पारिश्रमिक की मांग रखी तो उसके उत्तर में मैंने उन्हें याद दिलाया- 'हम आपको कवि सम्मलेन नहीं वरन भाषण देने के लिए आमन्त्रित कर रहे हैं' तो उन्होंने जवाब दिया- 'महोदय, न तो मैं कहीं नौकरी करता और न ही मेरी कोई दूकान है। लिखना और बोलना ही मेरा रोजगार है, इसे समझकर निर्णय लीजिए। '

हमने उनकी बात मानी और उन्हें बुलाया। राघवेन्द्रराव सभा भवन में सैकड़ों नागरिकों की उपस्थिति में वह कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय गर्ल्स कॉलेज के हिंदी विभाग की अध्यक्ष ने उनके कालेज में भी हरिशंकर परसाई का भाषण रखवाने का मुझसे अनुरोध किया। मैंने परसाई जी से बात की तो थोड़ी ना-नुकुर के बाद उन्होंने अगली दोपहर एक बजे का समय दे दिया।

गर्ल्स कालेज में प्रारंभिक संबोधन आदि की औपचारिकता के पश्चात परसाई जी ने कहा- 'बुजुर्ग होने के नाते तुम बच्चियों को मेरी सलाह है कि तुम लोग अपने माता -पिता की मर्जी से नहीं बल्कि घर से भागकर विवाह करना। '

उनके प्रथम वाक्य को सुनकर लड़कियों से भरा सभागार हँसी-ठहाके से सराबोर हो गया, मेरी जान सूख गई और मैं बाहर भागने के उपाय देखने लगा पर अपनी साँस थामे बैठे रहा।

शान्ति स्थापित होने के पश्चात परसाई जी ने बात आगे बढ़ाई - 'मैं जबलपुर के नेपियर टाउन में रहता हूँ। प्रत्येक सुबह मैं सैर के लिए जाया करता हूँ। मेरी ही उम्र के एक पड़ोसी भी मेरे साथ जाया करते थे। लौटकर पड़ोसी के घर में चाय और गपशप होती थी। उनकी विवाह योग्य दो कन्याएं थी जो कालेज में पढ़ती थी जो हमारे लिए चाय लाया करती थी। अचानक पड़ोसी महोदय ने सुबह घूमने जाना बंद कर दिया और लम्बे समय तक विलुप्त रहने के पश्चात एक सुबह फिर मिल गए। मैंने उनसे पूछा- 'कहाँ थे इतने दिन, दिखाई नहीं पड़े ?'

- मैं मुंह दिखाने लायक न रहा, परसाई जी। वे बोले।

- क्या हुआ ?

- कुछ न पूछिए, अपनी दुर्दशा क्या बताऊँ ?

- बताने लायक हो तो बताओ।

- अब आप से क्या छुपाना, दो लड़के मेरे घर आया जाया करते थे। मेरी दोनों लड़कियों ने घर से भागकर उनके साथ विवाह कर लिया।

- तो क्या गलत हुआ ? आपकी लड़कियों ने ठीक किया।

- आप क्या कहते हैं, परसाई जी ? एक तो मेरे घर इतना बड़ा काण्ड हो गया, आप उपहास कर रहे हैं

- नहीं, ऐसी बात नहीं, अच्छा, एक बात बताओ, लड़कियों की शादी के लिए कितना पैसा इकट्ठा किया था ?

- नहीं, पास में तो कुछ नहीं था लेकिन जरुरत पड़ने पर 'प्रॉविडेंट फंड' से कर्ज लेता।

- और गहने ?

- श्रीमती के जो आभूषण हैं, उन्हीं से काम चलाते।

- फिर तो आप की बच्चियों ने बहुत ही अच्छा काम किया, आपके पैसे और आभूषण दोनों बच गए और लड़के खोजने में दस-बीस घटिया लोगों के पैर पकड़ने पड़ते, आप उससे भी बच गए।

- वो सब ठीक है परसाई जी, लेकिन समाज में मेरी इज्जत चली गई, उसका क्या ? मेरी तो किसी से बात करने की हिम्मत नहीं होती।

- चलिए छोड़िए समाज को, बच्चियां कहाँ हैं?

- उनका तो नाम मत लीजिए, वे दोनों मर गई हमारे लिए

फिर किसी एक सुबह जब मैं अपने मित्र के साथ प्रातः भ्रमण के पश्चात उनके घर गया तो देखता हूँ कि उनकी दोनों लडकियाँ नास्ते और चाय की ट्रे लेकर चली आ रही हैं। लड़कियों के वहां से चले जाने के बाद मैंने उनसे पूछा-

- अरे ये क्या, आप तो कह रहे थे कि आपके लिए दोनों लड़कियां मर गई ?

- हाँ परसाई जी, उस समय मैं गुस्से में था लेकिन बाद में समझ आया कि मेरी लडकियों ने बुद्धिमानी की। कहाँ से मैं उनके लिए दहेज जोड़ता कहाँ मैं दो-दो लड़कियों के लिए वर खोजता ? सब मिलाकर ठीक ही हुआ।

इसीलिए मैंने तुम सब को घर से भागकर शादी करने की सलाह दी। मेरी इस बात को सुनकर तुम सबको जो हँसी आई तो वह 'हास्य' है और यदि मेरी बात पर तुम्हें लड़कियों के माँ-बाप की दयनीय स्थिति याद आए समाज में लड़कियों के विवाह में प्रचलित कुरीतियाँ याद आएं, वह मजबूरी याद आए जब घर से भागकर शादी करने वाली लड़की को उसका बाप बुद्धिमान माने आपको मेरी सलाह पर हँसी न आए, दिल कचोट जाए- तो वह 'व्यंग्य' है। '

जब हास्य और व्यंग्य का अंतर स्थापित हो गया, कुछ क्षणों के लिए सभागार में सन्नाटा छा गया। कुछ देर बाद एक ताली बजी और उसके बाद असंख्य तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा कालेज गूँज उठा। हरिशंकर परसाई अपने अर्थपूर्ण शब्दों के माध्यम से श्रोताओं के ह्रदय में उतर गए।

श्री द्वारिका प्रसाद अग्रवाल - गोलबाजार बिलासपुर

दोहे - नारी है अभिमान! - मनोहर चौबे आकाश

नारायण की शक्ति का, नारी है अभिमान !
नारी है साक्षात इस, प्रकृति का अभियान !!१

तप नारी का ही करे, पंच तत्व आव्हान
करे समादृत चेतना, जीवन को अभिदान !!२

प्रकृति का साकार ही, है नारी उपमान
उसमें होते समादृत, जीवन के सोपान !!३

अर्चन, पूजन, वन्दना, और पूर्ण सम्मान
कर के जग ने पाये हैं, सब इच्छित वरदान !!४

इच्छा अभिमत प्रेरणा, या सहयोगी काम
नारी ने जग को दिया,है सब कुछ निष्काम !!५

जप, तप, हर अभ्यर्थना, ईश यजन अभिराम
आशा आकांक्षा सहित, मन चाहे परिणाम !!६

तृण से गुरुतर वृक्ष तक, इस जग का हरधाम
जन्म और जीवन लिखे, नारी का ही नाम !!७

सरस्वती, लक्ष्मी, उमा, दुर्गा, काली नाम
ज्ञान भक्ति वैराग्य या, शौर्य तेज हर याम !!८

नर को ईश्वर ने दिया, महत् तत्व बेदाम

प्राणों सम रक्षण करे, और करे संग्राम !!९

जगती के जो भी चले, यात्रा के आयाम
नारी ने संवृत किये, सभी शीत और घाम !!१०

सृष्टि बिंदु से आदि कर, संवर्धित हर याम
प्रकट प्रबल अनुराग से,विरत विकट उपराम !!११

नर को जब जोभी मिला,अनुकूलित या वाम
इति अति संहृति परिणती, सब नारी के नाम !!१२

स्वप्न, कामना, वासना, या पूजा का नाम
नारी में ही समादृत, रहे सदा अविराम !!१३

गार्गी, घोषा, अपाला, लोपामुद्रा नाम
वेदऋचाओं की जनक,अतुलित विदुषि सुनाम !!१४

सीता, तारा, द्रौपदी, अनसुइया से नाम
राधा, रुक्मिणि,अहिल्या,से चरित्र अभिराम !!१५

कौशल्या या अंजना, या कुंती सम नाम
गांधारी मंदोदरी, सी माता दुख धाम !!१६

नारी के सम्मान पर, बना रहा उपराम
वह संस्कृति या देश फिर, नहीं रहा सुखधाम !!१७

नारी प्रकृति शक्ति है, आदि शक्ति सन्नाम
प्रगति,निरति,उपरति,विरति,रति,संवृत्ति,ललाम !!१८

मनोहर चौबे आकाश

व्यंग्य - समस्याएँ कम नहीं हैं मैकदा घर में बनाने में - श्री शांतिलाल जैन

कागजों में वे शिद्दत से कुछ ढूंढ रहे थे. पूछा तो बोले - पुराने इनकम टैक्स रिटर्न्स की कॉपी ढूंढ रहा हूँ. वजह ये कि कुछ दिनों पहले उत्तराखंड सरकार ने 'होम मिनी बार' योजना के अंतर्गत के लायसेंस देने की जो शर्तें रखीं हैं उनमें पहली शर्त यही रही कि पाँच साल के इनकम टैक्स रिटर्न दाखिल किए हुए होने चाहिए. वे आशावान हैं कि अपनी छत के नीचे आसवपान की जो योजना देवभूमि में लागू होने जा रही है वो एक दिन मध्यप्रदेश में भी लागू की जा सकती है. घर में मधुशाला उनका ड्रीम था, जल्द ही सच होता दीख रहा है. ये तो आचार संहिता लग गई श्रीमान वरना इन पंक्तियों के लिखे जाने तक कॉलोनी में कोई आगंतुक पूछ रहा होता - भाईसाहब, ये श्रीवास्तवजी कहाँ रहते हैं ?

कौनसे वाले श्रीवास्तवजी ? वोई जिनके घर में एक मैकदा है. आप ऐसे करें आगे से बायीं ओर की दूसरी गली में मुड़ जाईए. जैसे ही मुड़ेंगे मदहोश बयार आने लगेगी, राईट साईड में जिस मकान के बाहर जोर का भभका आने लगे बस वहीं रहते हैं श्रीवास्तवजी.' बहादुरशाह ज़फर होते तो ग़ज़ल का मिसरा बदल लेते - 'जिस तरफ उसका घर उसी तरफ मैकदा.'

खैर यह जब होगा तब होगा, फ़िलहाल समस्या ये भी है कि घर के किस हिस्से में बनाई जाए मधुशाला. वास्तुवाले कह रहे हैं ईशान कोण में ठीक रहेगा, दारू में बरकत रहती है. पूर्व दिशा की ओर बैठकर पीने से सुरूर अच्छा चढ़ता है. बीम के नीचे नहीं पीना चाहिए, अटैक आने का खतरा रहता है. सो उत्तर-पूर्व का कमरा तय रहा. किचन लगा हुआ ही है, एक इंट्री इधर से भी दे देते हैं - आईस, चखना वगैरह लाने में ठीक रहेगा.

मैंने पूछा - 'उल्टियाँ कहाँ करोगे ?'

वे बोले - 'उस कार्नर में, दो तीन बड़े और गहरे आकार के वाश-बेसिन लगवाने से हो जाएगा.' मैंने धीरे से मुआयना किया, इसी रूम के पीछे जो गली पड़ती है गिरने के लिए उसकी नाली मुफीद पड़ेगी. वे बोले - 'पूजा घर पीछे माँ के रूम में शिफ्ट कर देते हैं और गेट पर बायोमेट्रिक्स लॉक भी लगवा लेते हैं.'

'वो किसलिए?' - मैंने पूछा.

बोले - रूल है गौरमिंट का. होम मिनी बार में 21 वर्ष से कम के फेमेली मेम्बर्स की पहुँच नहीं रहनी चाहिए. चुन्नू, चिंकी और चिंटू के थम्ब इम्प्रैशन से खुलेगा नहीं - 'द हाउस ऑफ़ वाईंस'. अलबत्ता विक्की के इक्कीस बरस में चार महीने कम पड़ रहे हैं. लायसेंस आने तक वह भी पीने योग्य हो जाएगा.

मैंने पूछा -‘एट ए टाइम, कित्ता माल रख सकोगे?’

वे बोले - उत्तराखंड सरकार ने तो अधिकतम नौ लीटर इंडियन फॉरेन लिकर, 18 लीटर फॉरेन लिकर, 9 लीटर वाइन और 15.6 लीटर बीयर स्टोर करने की परमिशन दी है. एम.पी. में इससे तो कुछ बढ़कर ही समझो. ओवरऑल लिमिट हंड्रेड लीटर्स की हो जाए तो सोने में सुहागा. संयुक्त परिवार है, रिश्तेदारी है, यारी दोस्ती है इतना स्टॉक रखना तो बनता है. कल को आप ही मिलने आए तो पूछना तो पड़ेगा कि ट्वंटी एमएल चलेगी शांतिबाबू. मैंने कहा - आपको पता है मैं पीता नहीं हूँ. बोले - वो मैंने एक बात कही. हम नहीं पूछते तो आप कहते - लो साब श्रीवास्तव के घर गए और उनने दो घूँट का पूछा तक नहीं. बहरहाल, कंपोजिट लायसेंस मिल गया तो थोड़ी देसी भी रख लेंगे - घर में नौकर-चाकर भी तो हैं.

मैंने कहा - ‘आबकारी नीति के अनुसार ड्राई-डे पर मिनी होम बार बंद रखना पड़ेगा.’

वे बोले - मना तो ट्रेन में भी होती है. तो क्या कोल्ड्रिंक में लेकर गए नहीं कभी ? श्रीवास्तव को आप जानते नहीं हो शांतिबाबू, सरकार डाल-डाल तो अपन पात-पात.

इस बीच खबर आई कि उत्तराखंड सरकार ने कुछ दिनों के लिए अपना निर्णय स्थगित कर दिया है. श्रीवास्तवजी आशावान हैं निरस्त तो नहीं किया ना! अच्छा है तब तक पुराने आईटीआर भी ढूंढ लेंगे और बाकी तैयारियाँ पूरी करके रख लेंगे. मुझे मेराज फैजाबादी याद आए - ‘मैकदे में किसने कितनी पी, खुदा जाने. मयकदा तो मेरी बस्ती के कई घर पी गया..’

श्री शांतिलाल जैन उज्जैन मध्यप्रदेश

कविता - झिलमिलाते दीपक - मुकेश पोपली

उस रात
जब चारों तरफ
दीपक खिलखिला रहे थे
पटाखों की आवाज के साथ
बच्चे उछल-कूद मचा रहे थे
मैं निकल आया था दूर
सागर किनारे
यूं ही कुछ गुनगुना रहा था

नहीं था मुझे इंतजार किसी का
और न ही किसी
मन मीत को पुकार रहा था
निहार रहा था मैं शांत सागर को
डूब रहा था उसमें
उसका भीतर निकाल लाने को
नहीं थी चांदनी आकाश में
घना अंधेरा छाया था
न जाने कहां से
किस मोड़ से
बहारों का एक झोंका आया था
मेरे हाथों से तुम्हारा मुलायम
हाथ जरा सा टकराया था

दिल के मंदिर का दिया
अचानक जगमगाने लगा था
तुम्हें कोई बुलाने लगा था
न हाथ छूटना चाहता था तुम्हारा
न ही मेरा दामन
मदहोशी सी छा रही थी
कोई प्रेम-गीत जुबां पर आने लगा था
लहरें एक साथ अपने सुर मिलाने लगी थी

बहुत सी प्रेम कहानियां
दिल-ओ-दिमाग पर छाने लगी थी

छूटने लगे थे
रंग-बिरंगे अनार चारों ओर
लगने लगा था प्यारा
अंधेरा उस रात का
तमाम सलवटें
जीवन की हट गई थी
तस्वीरें जो बिखरी थी
अपने आप में सिमट गई थी
आंखों के भीतर
हुआ था आशा का संचार
शांत समंदर में जैसे
हलका-हलका उठ रहा हो ज्वार

नादान हैं जो प्यार की
ताकत नहीं समझते
दूसरे के दिल के
खयालात नहीं समझते
दीपक कभी
यूं ही नहीं मुस्कराते हैं
एक दूसरे से मिलने की खुशी में
वो हमेशा झिलमिलाते हैं
झूमते हैं और खिलखिलाते हैं।

मुकेश पोपली - 'स्वरांगन', ए-38-डी, करणी नगर, पवनपुरी, बीकानेर-334003 - मो: 7073888126 ई-मेल: swarangan38@gmail.com

गीत - आशाओं के दीप जलाकर... - श्री मनोज कुमार शुक्ल "मनोज"

आशाओं के दीप जलाकर,
हमने नित ही गीत लिखे......

आशाओं के दीप जलाकर,
हमने नित ही गीत लिखे।
हार न मानी है जीवन में,
पथ चलने मनमीत दिखे। ।

माना कठिन डगर है मंजिल,
सपने सब सच हो जाते।
काँटों में खिलकर गुलाब भी,
सौरभ तो बिखरा जाते। ।

इसीलिए तो जग कहता है,
मानव खुद ही जीत लिखे,
आशाओं के दीप जलाकर,
हमने नित ही गीत लिखे......

नैतिकता के पथ से भटके,
कभी किसे तकदीर मिली।
एक समय ऐसा भी आता,
फिर उसको बस जेल मिली। ।

लाख जतन कर ले कोई भी,
विधिना ने ही रीत लिखे।
आशाओं के दीप जलाकर,
हमने नित ही गीत लिखे......

जीवन में फल मिलता उनको,
जिसने कर्म किया अपना।
पथ को जिसने नहीं बुहारा,
नहीं हुआ पूरा सपना। ।

इनकी किस्मत के हिस्से में,
कभी नहीं नवनीत लिखे।
आशाओं के दीप जलाकर,
हमने नित ही गीत लिखे......

सफल वही होता है जग में,
जिसने जीना सीख लिया।
तूफानों में घिरकर अपनी,
नौका तट पर लगा लिया। ।

हर मुश्किल झंझावातों में,
कभी नहीं भयभीत दिखे।
आशाओं के दीप जलाकर,
हमने नित ही गीत लिखे......

हार न माना है जीवन में,
पथ गढ़ने श्रमगीत लिखे। ।
आशाओं के दीप जलाकर,
हमने नित ही गीत लिखे...

मनोज कुमार शुक्ल " मनोज " - 58, आशीष दीप, उत्तर मिलौनीगंज जबलपुर - मध्य प्रदेश - मो. 9425862550 mkshukla48@gmail.com

व्यंग्य - आठवीं पीढ़ी की व्यवस्था - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

इस दफे चुनाव और दीवाली साथ साथ ही होने थे। नेता जी ने सात पीढ़ीयों का इंतजाम तो पहले ही कर लिया था, इस बार चुनाव जीत कर लक्ष्मी मैया की कृपा से आठवीं पीढ़ी की व्यवस्था की जिम्मेदारी नेता जी अपने बेटे के कंधों पर डालना चाहते हैं। इसलिये जैसे ही बरसात बीती, त्यौहारी मौसम आते ही नेता जी ने दिवाली और चुनाव में टिकिट की तैयारियां शुरू कर दीं थीं। सारी हवेली की भीतर बाहर रंगाई पुताई करवा डाली। हर कमरे में छत से लेकर फर्श तक साज सज्जा में कोई कमी नहीं थी। लक्ष्मी मैया के स्वागत में हर कमरे में नई कालीन बिछा दी गईं थी। मुख्य द्वार से हवेली तक फैले भव्य लान और बगीचे में फूल खिले हुये नये विदेशी पौधे रोप दिये गये। गार्डन की रौनक देखते ही बनती थी। नेता जी प्रगतिशील विचारधारा के हैं। मिट्टी के पारंपरिक दियों में तेल भरकर रोशनी की बातें नेता जी को पुरानी लगने लगी हैं, खास शहर से बुलवाई गई एल ई डी के जलते बुझते छोटे छोटे बल्बों की झालरों से हवेली सजा दी गई। नेता जी को हरगिज पसंद नहीं था कि हवेली की हवा भी बाहर गांव के आम लोगों तक जाये, इसलिये हवेली के चारों ओर ऊंची ऊंची दीवार बनी हुई थी। नेता जी ने दरवाजे पर दुनाली बंदूकें थामें द्वारपाल बैठा रखे थे। हवेली का पानी बाहर न जाने पाये इसलिये नेता जी ने रेन वाटर हारवेस्टिंग सिस्टम लगवाया था। सूरज की धूप पकड़ने की कोशिश में छत पर सोलर पावर पैनल्स फिट किये हुये हैं। मतलब नेता जी ने इन कमिंग तो चालू रखी है पर आउट गोइंग पर हर तरह से नियंत्रण करने की कोशिश की है। आखिर आठवीं पीढ़ी की व्यवस्था का प्रश्न है। वो तो नेता जी का बस नहीं चलता वरना वे अपने आमोद प्रमोद के वक्त हवेली से निकलती संगीत की ध्वनि तक बाहर न जाने देते।

नेता जी पचहत्तर पार हो रहे हैं। उन्होंने युवावस्था से राजनीति देखी समझी है। उन्हें याद है कि अपने पहले चुनाव के समय वे तो स्कूल में एक अदद शिक्षक थे। किसी तरह गुजर बसर हो ही रही थी। फिर उन पर लक्ष्मी मैया की कृपा हुई। एक क्रांतिकारी पार्टी को, उनके क्षेत्र में, उनकी जाति का नेता चाहिये था। क्योंकि उनका क्षेत्र उनकी जाति के प्रतिनिधि चुनने के लिये आरक्षित कर दिया गया था। चुंकि अपनी जाति के वे ही थोड़ा पढ़े लिखे व्यक्ति थे। वे लोगों से मेल मिलाप रखने वाले कैंडीडैट थे, उन्होंने शिक्षक के पद से त्याद पत्र देकर पहले ही चुनाव में जीत हासिल कर ली। तब से वे लगातार उस पिछड़े वन क्षेत्र के महत्वपूर्ण नेता बन चुके हैं। हर चुनाव में वे कम से कम अपनी एक पीढ़ी का पूरा इंतजाम कर ही लेते हैं। गांव की कोठी, शहर का बंगला, दिल्ली में फार्म हाउस, विदेश में फ्लैट, पत्नी के नाम कारखाना, बेटे के नाम बिजनेस, खड़ा करने के लिये क्षेत्र के गरीब वोटर्स को कभी गरीबी हटाने के सपने दिखाने पड़ते हैं, कभी अंत्योदय की योजनायें लाने के वादे करने होते हैं, कभी देश के गौरव बढ़ाने की बातें बनानी पड़ती है, तो कभी जाति पर आये कथित संकट से निपटने के नाम पर वे जीत ही जाते हैं। लक्ष्मी मैया की कृपा बनी रहती है। नेता जी दिन दूनी रात चौगुनी करने का पहाड़ा जान गये हैं। नेताजी ने कई चुनाव चिन्ह देखे हैं, कई पार्टियों और कई नारों के वास्तविक यथार्थ से वे सुपरिचित हैं। उन्होंने

स्वस्तिक वाले ठप्पे की चुनावी पेटियों को इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनो में बदलते देखे हैं। नेता जी अपने मुकाबले किसी और को खड़े होने लायक नही बनने देते, इसके लिये वह गुर जो उन्हें आकस्मिक जातिगत आरक्षण के चलते हासिल हो गया था, उन तक ही बना रहना बेहद आवश्यक है। इसीलिये वे हवेली के चारों ओर ऊंची ऊंची दीवारों और गोपनीयता के पक्षधर हैं। अब उम्र का तकाजा है कि नेता जी समय रहते अपने युवा बेटे को राजनीति में अपने स्थान पर लांच कर दें। इसलिये इस बार बेटे के लिये टिकिट की व्यवस्था जरूरी है। हाई कमान से गणित बैठाना है। वोटर्स के साथ समीकरण बनाने हैं। नेता जी भागम भाग में लगे हैं। हम तो यही मनारहे हैं कि माँ लक्ष्मी ने जैसी कृपा नेता जी पर की है, सब पर करें।

श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

कविता - पर्यावरण बचाएं - सुश्री पूनम गुप्ता

आओ हम सब मिलकर पर्यावरण बचाएं
काट रहे जो पेड़ों को इनको इसके लाभ बताएं
उनको इसके महत्व के बारें समझाएं
धरा पर हम पहले जैसी खुशहाली लाएं

पेड़ काटकर काटकर कारखानें बनाते है
ऊँची ऊँची इमारत बनाकर हवा, धूप को रोकते है
जब हरियाली नहीं होगी धरा पर कैसे जी पाओगे
कैसे अपने लिए ऑक्सीजन को एकत्रित कर पाओगे

धरा जब हो जाएंगी बंजर शुद्ध हवा कहाँ से लाओगे
बिन ऑक्सीजन के कैसे जीवित रह पाओगे
जब हरियाली चारों तरफ जीवन में सुखी रह पाओगे

पानी को व्यर्थ न बहाओ आगे जल को तरस जायाओ
नदी, तालाब को दूषित न करें बीमारियों को पाओगे
कूड़ा, करकट नदी में डाले तभी जल को बचा पाओगे
नहीं तो एक दिन जल के लिए भी तरस जाआगे

सुश्री पूनम गुप्ता - भोपाल

लेख - हिंदू उत्सव शिरोमणि दीपावली - श्री सुरेश पटवा

दीपावली पर्व का भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और सामाजिक सभी दृष्टियों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात हे भगवान! मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलिए। यह उपनिषदों का दार्शनिक सूत्र है। यह पवमान मन्त्र या पवमान अभयारोह बृहदारण्यक उपनिषद में विद्यमान एक मन्त्र है। यह मन्त्र मूलतः सोम यज्ञ की स्तुति में यजमान द्वारा गाया जाता था।

ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

(बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28)

अर्थ

मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।
मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो॥

इस दार्शनिक मंत्र का व्यावहारिक अर्थ समझते हैं।

असत्य याने माया से सत्य ब्रह्म की ओर, अज्ञानी अंधकार से ज्ञान प्रकाश की ओर, मृत्यु भय से निर्भयता की ओर ले चलो।

मृत्यु से बचकर कोई भी अमर नहीं हो सकता लेकिन देह में अनश्वर ब्रह्म की प्राणसत्ता का ज्ञान मृत्यु भय से मुक्त करता है। देह समाप्त होती है और आत्मा परमात्मा में विलीन होती है। यही अनादि-अनंत सत्य अमरत्व की अनुभूति है।

हिन्दुओं के योग, वेदान्त, और सांख्य दर्शन में यह विश्वास है कि इस भौतिक शरीर और मन से परे वहां कुछ है जो शुद्ध, अनन्त, और शाश्वत है जिसे आत्मन् या आत्मा कहा गया है। दीपावली, आध्यात्मिक अन्धकार पर आन्तरिक प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान, असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई का उत्सव है।

दीपावली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों 'दीप' अर्थात 'दिया' व 'आवली' अर्थात 'क़तार' या 'श्रृंखला' के मिश्रण से हुई है। कुछ लोग "दीपावली" तो कुछ "दिपावली" ; वही कुछ लोग "दिवाली" तो कुछ लोग "दीवाली" का प्रयोग करते है। यहाँ यह जान लेना जरूरी है कि प्रत्येक शुद्ध शब्द का प्रयोग उसके अर्थ पर निर्भर करता है। शुद्ध शब्द "दीपावली" है, जो 'दीप'(दीपक) और 'आवली'(पंक्ति) से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है 'दीपों की पंक्ति'। 'दीप' से 'दीपक' शब्द की रचना होती है। 'दिवाली' शब्द का प्रयोग भी

गलत है क्योंकि उपयुक्त शब्द 'दीवाली' है। 'दिवाली' का तो इससे भिन्न अर्थ है। जिस पट्टे/पट्टी को किसी यंत्र से खींचकर खराद सान आदि चलाये जाते है, उसे दिवाली कहते है इसका स्थानिक प्रयोग दिवारी है और 'दिपाली'-'दीपालि' भी। दीपावली का अपभ्रंश रूप 'दीवाली' है दिवाली नहीं; परंतु विशुद्ध एवं उपयुक्त शब्द दीपावली है। इसके उत्सव में घरों के द्वारों, घरों व मंदिरों पर लाखों प्रकाशकों को प्रज्वलित किया जाता है।

दीपावली का धार्मिक महत्व हिंदू दर्शन, क्षेत्रीय मिथकों, किंवदंतियों, और मान्यताओं पर निर्भर करता है। भारत में प्राचीन काल से दीपावली को विक्रम संवत के कार्तिक माह में वर्षा काल के बाद के एक त्योहार के रूप में दर्शाया गया। पद्म पुराण और स्कन्द पुराण में दीपावली का उल्लेख मिलता है। माना जाता है कि ये ग्रन्थ पहली सहस्त्राब्दी के दूसरे भाग में किन्हीं केंद्रीय पाठ को विस्तृत कर लिखे गए थे। दीये (दीपक) को स्कन्द पुराण में सूर्य के हिस्सों का प्रतिनिधित्व करने वाला माना गया है, सूर्य जो जीवन के लिए प्रकाश और ऊर्जा का लौकिक दाता है और जो हिन्दू कैलंडर अनुसार कार्तिक माह में अपनी स्थिति बदलता है। कुछ क्षेत्रों में हिन्दू दीपावली को यम और नचिकेता की कथा के साथ भी जोड़ते हैं। नचिकेता की कथा जो सही बनाम गलत, ज्ञान बनाम अज्ञान, सच्चा धन बनाम क्षणिक धन आदि के बारे में बताती है। यह कथा पहली सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व उपनिषद में लिखित है।

कई हिंदु दीपावली को भगवान विष्णु की पत्नी तथा उत्सव, धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी से जुड़ा हुआ मानते हैं। दीपावली का पांच दिवसीय महोत्सव देवताओं और राक्षसों द्वारा दूध के लौकिक सागर के मंथन से पैदा हुई लक्ष्मी के जन्म दिवस से शुरू होता है। दीपावली की रात वह दिन है जब लक्ष्मी ने अपने पति के रूप में विष्णु को चुना और फिर उनसे शादी की। लक्ष्मी के साथ-साथ भक्त बाधाओं को दूर करने के प्रतीक गणेश; संगीत, साहित्य की प्रतीक सरस्वती; और धन प्रबंधक कुबेर को प्रसाद अर्पित करते हैं। कुछ दीपावली को विष्णु की वैकुण्ठ में वापसी के दिन के रूप में मनाते है। मान्यता है कि इस दिन लक्ष्मी प्रसन्न रहती हैं और जो लोग उस दिन उनकी पूजा करते है वे वर्ष भर दौरान मानसिक, शारीरिक दुखों से दूर सुखी रहते हैं।

प्राचीन हिंदू ग्रन्थ रामायण में बताया गया है कि, कई लोग दीपावली को 14 साल के वनवास पश्चात भगवान राम व पत्नी सीता और उनके भाई लक्ष्मण की वापसी के सम्मान के रूप में मानते हैं। कुछ प्राचीन हिन्दू महाकाव्य महाभारत अनुसार कुछ दीपावली को 12 वर्षों के वनवास व 1 वर्ष के अज्ञातवास के बाद पांडवों की वापसी के प्रतीक रूप में मानते हैं।

दीपावली के दिन अयोध्या के राजा राम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से प्रफुल्लित हो उठा था। श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है झूठ का नाश होता है। दीपावली यही चरितार्थ करती है- असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है। कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती हैं। लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का

कार्य आरंभ कर देते हैं। घरों में मरम्मत, रंग-रोगन, सफेदी आदि का कार्य होने लगता है। लोग दुकानों को भी साफ-सुथरा कर सजाते हैं। बाजारों में गलियों को भी सुनहरी झंडियों से सजाया जाता है। दीपावली से पहले ही घर-मोहल्ले, बाजार सब साफ-सुथरे व सजे-धजे नज़र आते हैं।

दीप जलाने की प्रथा के पीछे अलग-अलग कारण या कहानियाँ हैं। राम भक्तों के अनुसार दीपावली वाले दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे। उनके लौटने कि खुशी में आज भी लोग यह पर्व मनाते है। कृष्ण भक्तिधारा के लोगों का मत है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस राक्षस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीए जलाए। एक पौराणिक कथा के अनुसार विंष्णु ने नरसिंह रूप धारणकर हिरण्यकश्यप का वध किया था तथा इसी दिन समुद्रमंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए।

7वीं शताब्दी के संस्कृत नाटक नागनंद में राजा हर्ष ने इसे दीपप्रतिपादुत्सवः कहा है जिसमें दीये जलाये जाते थे और नव वर-बधू को उपहार दिए जाते थे। 9 वीं शताब्दी में राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इसे दीपमालिका कहा है जिसमें घरों की पुताई की जाती थी और तेल के दीयों से रात में घरों, सड़कों और बाजारों सजाया जाता था। फारसी यात्री और इतिहासकार अल बेरुनी, ने भारत पर अपने 11 वीं सदी के संस्मरण में, दीपावली को कार्तिक महीने में नये चंद्रमा के दिन पर हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार कहा है।

भारत के पूर्वी क्षेत्र उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में हिन्दू लक्ष्मी की जगह काली की पूजा करते हैं, और इस त्योहार को काली पूजा कहते हैं। मथुरा और उत्तर मध्य क्षेत्रों में इसे भगवान कृष्ण से जुड़ा मानते हैं। अन्य क्षेत्रों में, गोवर्धन पूजा (या अन्नकूट) की दावत में कृष्ण के लिए 56 या 108 विभिन्न व्यंजनों का भोग लगाया जाता है और सांझे रूप से स्थानीय समुदाय द्वारा मनाया जाता है।

दीपावली को विशेष रूप से हिंदू, जैन और सिख समुदाय के साथ विशेष रूप से दुनिया भर में मनाया जाता है। ये, श्रीलंका, पाकिस्तान, म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, फिजी, मॉरीशस, केन्या, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो, नीदरलैंड, कनाडा, ब्रिटेन शामिल संयुक्त अरब अमीरात, और संयुक्त राज्य अमेरिका। भारतीय संस्कृति की समझ और भारतीय मूल के लोगों के वैश्विक प्रवास के कारण दीपावली मनाने वाले देशों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। कुछ देशों में यह भारतीय प्रवासियों द्वारा मुख्य रूप से मनाया जाता है, अन्य दूसरे स्थानों में यह सामान्य स्थानीय संस्कृति का हिस्सा बनता जा रहा है। इन देशों में अधिकांशतः दीपावली को कुछ मामूली बदलाव के साथ इस लेख में वर्णित रूप में उसी तर्ज पर मनाया जाता है पर कुछ महत्वपूर्ण विविधताएँ उल्लेख के लायक हैं।

दीपावली के दिन नेपाल, भारत, श्रीलंका, म्यांमार, मारीशस, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम, मलेशिया, सिंगापुर, फिजी, पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया की बाहरी सीमा पर क्रिसमस द्वीप पर एक सरकारी अवकाश होता है।

पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दोनों दीपावली के दिन ही हुआ। इन्होंने दीपावली के दिन गंगातट पर स्नान करते समय 'ओम' कहते हुए समाधि ले ली। महर्षि दयानन्द ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया। इन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। दीन-ए-इलाही के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊँचे बाँस पर एक बड़ा आकाशदीप दीपावली के दिन लटकाया जाता था। बादशाह जहाँगीर भी दीपावली धूमधाम से मनाते थे। मुगल वंश के अंतिम सम्राट बहादुर शाह जफर दीपावली को त्योहार के रूप में मनाते थे और इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में वे भाग लेते थे। शाह आलम द्वितीय के समय में समूचे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था एवं लालकिले में आयोजित कार्यक्रमों में हिन्दू-मुसलमान दोनों भाग लेते थे।

दीपावली का त्यौहार भारत में एक प्रमुख खरीदारी की अवधि का प्रतीक है। उपभोक्ता खरीद और आर्थिक गतिविधियों के संदर्भ में दीपावली, पश्चिम में क्रिसमस के बराबर है। यह पर्व नए कपड़े, घर के सामान, उपहार, सोने और अन्य बड़ी ख़रीददारी का समय होता है। इस त्योहार पर खर्च और ख़रीद को शुभ माना जाता है क्योंकि लक्ष्मी को, धन, समृद्धि, और निवेश की देवी माना जाता है। दीवाली भारत में सोने और गहने की ख़रीद का सबसे बड़ा सीज़न है। मिठाई, 'कैंडी' और आतिशबाजी की ख़रीद भी इस दौरान अपने चरम सीमा पर रहती है। प्रत्येक वर्ष दीपावली के दौरान पांच हज़ार करोड़ रुपए के पटाखों आदि की खपत होती है।

मुगलकाल में विभिन्न हिंदू और मुसलिम त्योहार खूब उत्साह और बिना किसी भेदभाव के मनाए जाते थे। अनेक हिंदू त्योहार मसलन दिवाली, शिवरात्रि, दशहरा और रामनवमी को मुगलों ने राजकीय मान्यता दी थी। खासतौर से दिवाली पर एक अलग ही रौनक होती थी। तीन-चार हफ्ते पहले ही महलों की साफ-सफाई और रंग-रोगन के दौर चला करते।

सदियों से हमारे देश की प्रकृति कुछ ऐसी रही है कि जिस शासक ने भी सामंजस्यपूर्ण सहअस्तित्व की भावना से सत्ता चलाई, उसे देशवासियों का भरपूर प्यार मिला। देशवासियों के प्यार की ही बदौलत उन्होंने भारत पर 250 वर्षों राज किया। औरंगज़ेब की अत्याचारी नीतियों से दस साल में मुग़ल साम्राज्य ढह गया। मुगलकाल में औरंगजेब को यदि छोड़ दें, तो सारे मुगल शहंशाह सामंजस्यपूर्ण सहअस्तित्व पर यकीन रखते थे। उन्होंने कभी मजहब के साथ सियासत का घालमेल नहीं किया और अपनी हुकूमत में हमेशा उदारवादी तौर-तरीके अपनाए। यही वजह है कि उन्होंने भारत पर लंबे समय तक राज किया। मुगलों की हुकूमत के दौरान धार्मिक स्वतंत्रता अपना धर्म पालन करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने एक ऐसा नया माहौल बनाया, जिसमें सभी धर्मों को मानने वाले एक-दूसरे की खुशियों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। मुगलकाल में विभिन्न हिंदू और मुसलिम त्योहार खूब उत्साह और बिना किसी भेदभाव के मनाए जाते थे। अनेक हिंदू त्योहार मसलन दीपावली, शिवरात्रि, दशहरा और रामनवमी को मुगलों ने राजकीय मान्यता दी थी। मुगलकाल में खासतौर से दिवाली पर एक अलग ही रौनक होती थी। दीप पर्व आगमन के तीन-चार हफ्ते पहले ही महलों की साफ-सफाई और रंग-रोगन के दौर चला करते। ज्यों-ज्यों पर्व के दिन नजदीक आने लगते, त्यों-त्यों खुशियां परवान चढ़ने लगतीं। दीयों की रोशनी से समूचा राजमहल जगमगा उठता, जिसे इस मौके के लिए खासतौर पर सजाया-संवारा जाता था।

बादशाह अकबर के शासनकाल में पूरे देश के अंदर गंगा-जमुनी तहजीब और परवान चढ़ी। इस्लाम के साथ-साथ वह सभी अन्य धर्मों का सम्मान करते थे। जहांगीर ने अकबर के मुताल्लिक अपने तुजुक यानी जीवनी में लिखा है, 'अकबर ने हिंदुस्तान के रीति-रिवाज को आरंभ से सिर्फ ऐसे ही स्वीकार कर लिया, जैसे दूसरे देश का ताजा मेवा या नए मुल्क का नया सिंगार या यह कि अपने प्यारों और प्यार करने वालों की हर बात प्यारी लगती है। ' एक लिहाज से देखें, तो अकबर ने भारत में राजनीतिक एकता ही नहीं, सांस्कृतिक समन्वय का भी महान काम किया। इसीलिए इतिहास में उन्हें अकबर महान के रूप में याद किया जाता है।

अकबर ने अपनी सल्तनत में विभिन्न समुदायों के कई त्योहारों को शासकीय अवकाश की फेहरिस्त में शामिल किया था। हरेक त्योहार में खास तरह के आयोजन होते, जिनके लिए शासकीय खजाने से दिल खोलकर अनुदान मिलता। दिवाली मनाने की शुरुआत दशहरे से ही हो जाती। दशहरा पर्व पर शाही घोड़ों और हाथियों के साथ व्यूह रचना तैयार कर सुसज्जित छतरी के साथ जुलूस निकाला जाता।

राहुल सांकृत्यायन, जिन्होंने हिंदी में अकबर की एक जीवनी लिखी है, वे इस किताब में लिखते हैं, "अकबर दशहरा उत्सव बड़ी ही शान-शौकत से मनाता। ब्राह्मणों से पूजा करवाता, माथे पर टीका लगाता, मोती-जवाहर से जड़ी राखी हाथ में बांधता, अपने हाथ पर बाज बैठाता, किलों के बुर्जों पर शराब रखी जाती। गोया कि सारा दरबार इसी रंग में रंग जाता। "

अकबर के नौ रत्नों में से एक अबुल फजल ने अपनी मशहूर किताब 'आईना-ए-अकबरी' में शहंशाह अकबर के दीपावली पर्व मनाए जाने का तफसील से जिक्र किया है। अकबर दिवाली की सांझ अपने पूरे राज्य में मुंडेरों पर दीये प्रज्वलित करवाते। महल की सबसे लंबी मीनार पर बीस गज लंबे बांस पर कंदील लटकाए जाते थे। यही नहीं, महल में पूजा दरबार आयोजित किया जाता था। इस मौके पर संपूर्ण साज-सज्जा कर दो गायों को कौड़ियों की माला गले में पहनाई जाती और ब्राह्मण उन्हें शाही बाग में लेकर आते। ब्राह्मण जब शहंशाह को आशीर्वाद प्रदान करते, तब शहंशाह खुश होकर उन्हें मूल्यवान उपहार प्रदान करते। अबुल फजल ने अपनी किताब में अकबर के उस दीपावली समारोह का भी ब्योरा लिखा है, जब शहंशाह कश्मीर में थे। अबुल फजल लिखते हैं-"दीपावली पर्व जोश-खरोश से मनाया गया। हुक्मनामा जारी कर नौकाओं, नदी-तट और घरों की छतों पर प्रज्वलित किए गए दीपों से सारा माहौल रोशन और भव्य लग रहा था। " दिवाली के दौरान शहजादे और दरबारियों को राजमहल में जुआ खेलने की भी इजाजत होती थी। जैसा कि सब जानते हैं कि दिवाली के बाद गोवर्धन पूजा होती है, मुगलकाल में गोवर्धन पूजा बड़ी श्रद्धा के साथ संपन्न होती थी। यह दिन गोसेवा के लिए निर्धारित होता। गायों को अच्छी तरह नहला-धुला कर, सजा-संवार कर उनकी पूजा की जाती। शहंशाह अकबर खुद इन समारोहों में शामिल होते थे और अनेक सुसज्जित गायों को उनके सामने लाया जाता।

जहांगीर के शासनकाल में दिवाली के अलग ही रंग थे। वे भी दिवाली मनाने में अकबर से पीछे नहीं थे। किताब 'तुजुक-ए-जहांगीर' के मुताबिक साल 1613 से 1626 तक जहांगीर ने हर साल अजमेर में दिवाली मनाई। वे अजमेर के एक तालाब के चारों किनारों पर दीपक की जगह हजारों मशालें प्रज्वलित करवाते थे। इस मौके पर शहंशाह जहांगीर अपने हिंदू सिपहसालारों को कीमती नजराने भेंट करते थे। इसके बाद

फकीरों को नए कपड़े, मिठाइयां बांटी जातीं। यही नहीं, आसमान में इकहत्तर तोपें दागी जातीं और बड़े-बड़े पटाखे चलाए जाते।

इस दिन राजमहल को खासतौर से मुख्तलिफ तरह की रंग-बिरंगी रोशनियों से सजाया जाता था। जहांगीर रात में अपनी बेगम के साथ आतिशबाजी का मजा लेने निकलते। मुगल बादशाह शाहजहां जितनी शान-ओ-शौकत के साथ ईद मनाते थे ठीक उसी तरह दीपावली भी। दीपावली पर किला रोशनी में नहा जाता और किले के अंदर स्थित मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना की जाती थी। इस मौके पर शाहजहां अपने दरबारियों, सैनिकों और अपनी रिआया में मिठाई बंटवाते थे। शाहजहां के बेटे दारा शिकोह ने भी इस परंपरा को इसी तरह से जिंदा रखा। दारा शिकोह इस त्योहार को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते और अपने नौकरों को बख्शीश बांटते थे। उनकी शाही सवारी रात के वक्त शहर की रोशनी देखने निकलती थी।

किताब 'तुजुके जहांगीरी' में दीपावली पर्व की भव्यता और रौनक तफसील से बयां है।

मुगल वंश के आखिरी बादशाह बहादुर शाह जफर का दिवाली मनाने का अंदाज जुदा था। उनकी दिवाली तीन दिन पहले से शुरू हो जाती थी। दिवाली के दिन वे तराजू के एक पलड़े में बैठते और दूसरा पलड़ा सोने-चांदी से भर दिया जाता था। तुलादान के बाद यह धन-दौलत गरीबों को दान कर दी जाती थी। तुलादान की रस्म-अदायगी के बाद किले पर रोशनी की जाती। कहार खील-बतीशे, खांड और मिट्टी के खिलौने घर-घर जाकर बांटते। गोवर्धन पूजा जब आती, तो इस दिन दिल्ली की रिआया अपने गाय-बैलों को मेंहदी लगा कर और उनके गले में शंख और घुंघरू बांध कर जफर के सामने पेश करते। जफर उन्हें इनाम देते और मिठाई खिलाते।

मुगलकाल में हिंदू तथा मुसलिम समुदायों के छोटे-से कट्टरपंथी तबके को छोड़ सभी एक-दूसरे के त्योहारों में बगैर हिचकिचाहट भागीदार बनते थे। दोनों समुदाय अपने मेलों, भोज तथा त्योहार एक साथ मनाते। दिवाली का पर्व न केवल दरबार में पूरे जोश-खरोश से मनाया जाता, आम लोग भी उत्साहपूर्वक इस त्योहार का आनंद लेते। दिवाली पर ग्रामीण इलाकों के मुसलिम अपनी झोंपड़ियों व घरों में रोशनाई करते तथा जुआ खेलते। वहीं मुसलिम महिलाएं इस दिन अपनी बहनों और बेटियों को लाल चावल से भरे घड़े उपहारस्वरूप भेजतीं। यही नहीं, दिवाली से जुड़ी सभी रस्मों को भी पूरा करतीं।

श्री सुरेश पटवा - भोपाल

कविता - यह जीवन एक... - श्री राजन एस. एस. सक्सेना

यह जीवन एक रणभूमि है
द्वंद्व हो रहा हर एक मन में
सत्य असत्य की पृष्ठ भूमि पर
पाप पुण्य पर दांव लगा है
देखो पासे क्या कह रहे
सुनों गौर से कौन सागा है
यह जीवन एक...

झूठा बैठा पांव पसारे
और चीख कर व्यथा कह रहा
दोष घोस में संग फरेबी
सत्य सुकड़कर सदा सह रहा
यहां अनुभव सदा सत्य ले रहा
दिगदर्शक बन देव खड़े है
न्याय का डमरू रही रखा है
यह जीवन एक...

सत्य प्रतिक्षित अभिव्यक्ति को
कौन बारी को आनें देगा
डोंगी, दोषी, फ़ूहड़ मंडल
क्या सत्य को कुछ कह पानें देगा
यह धर्म भूमि है इसके *"राजन"*
शास्त्र पटे हैं सत्य विजय से
फिर भी झूठ का सगा दगा है
यह जीवन एक...

भीनी सी मुस्कान सत्य की
उस फरेब को सहरा देगी
त्रुटी पाप के मन विचार को
कुंठित कर दहला तो देगी
चाहें कितने स्वांग धरे हों
सौ पापों नें पाठ पढ़ें हों
सत्य सदा से शास्त्र जगा है
यह जीवन एक...

श्री राजन एस. एस. सक्सेना

कविता - बाँटने रोशनी जल रहे हैं दिये - प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध

नेह उर में लिये मिटाने अँधेरा, बाँटने रोशनी जल रहे हैं दिये
हर एक गहरी भयावह अमा रात में, हर कुटी, घर, भवन, राह सबके लिये।
जिंदगी है जहाँ, रोशनी हो वहाँ, आदमी ने सदा की यही कामना
चाह पावन है मन की मगर, जिन्दगी को करना होता अँधेरे से सामना।
जंब झलकती नहीं रात में चाँदनी, तभी तम में अधिक दमकता है गगन
राह में देख कठिनाईयाँ आई नई डर के हिम्मत कभी हार जाना न मन।
देने हर अनमने मौन मन को लगन, लड़ते काँटों से हर दम सुमन सब जिये ||1||
बाँटने रोशनी जल रहे हैं दिये......

मौन कर्त्तव्य जो भी निभाते सदा, मिला करता उन्हीं को है कल फायदा
लाख बाधायें आयें भले राह में, है सच्चाई और श्रम का यही कायदा।
सहन होती नहीं ग्रीष्म की जब तपन, सूख जाते सरोवर, लता, वृक्ष, वन
बस तभी एक दिन उठ अचानक उमड़ फैल जाते क्षितिज तक सघन कृष्ण घन।
झुलसते, त्रस्त, व्याकुल धराधाम को, बरस दे जाते जो जल अमन के लिये ||2||
बाँटने रोशनी जल रहे हैं दिये.......

सुख तो है जग में बस एक परिमाप में, दुख ही पर व्याप्त है शीत में, ताप में
खाके गम लोग चुप रहते, कहते नहीं, बातें करते हैं पर आप से आप में।
जहाँ जाती नजर यही लाती खबर, हर एक जीवन नदी की है लंबी कथा
घर में, परिवार में, सारे संसार में, राख में छुपी हुई आग सी है व्यथा।
इससे सुरभित हवा गुदगुदाती तो है, किन्तु रखती अपने अधर खुद सिये ॥3॥
बाँटने रोशनी जल रहे हैं दिये है.....

प्रकृति की व्यवस्था कि श्रम साधना को समय दिया करता है नित मधुर फल
किन्तु पाने बिना श्रम अधिक से अधिक आज दिखता है दुनियाँ में हर कोई विकल।
सारी सुख-शांति इससे हुई नष्ट है, बढ़ता जाता है हर क्षण प्रदूषण सघन
बढ़े टकराव, अलगाव, उलझाव हैं, हर जगह बिगड़ा दिखता है वातावरण ॥
नव सृजन के लिये सदा शिव चाहिये, बाँटे अमृत जो सबको गरल खुद पिये। । 4। ।
बाँटने रोशनी जल रहे हैं दिये ....

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध - ए २३३, ओल्ड मिनाल रेजीडेंसी, जे के रोड, भोपाल ४६२०२३

लेख - प्रेम जीवन का सार है - ई. अर्चना नायडू

सम्पूर्ण ब्रमांड में प्रेम ही एक ऐसी पवित्र भावना है जिस् में सृजन की क्षमता है. जब वह अपनी अदृश्य शक्तियों को पहचान जाता है तब सात्विक रूप को ग्रहण कर लेता है. जो कम और ज्यादा के परिमाण से परे होता है बल्कि सम्पूर्णता और संतृप्ति ही शुद्ध प्रेम के धोतक बन जाते है.

मनुष्य रूप में प्रेम का प्रवाह संवेदनाओं और भावनाओं की अद्भुत अनुभूति के रूप में प्रवाहित होता रहता है. संसार का सबसे अनुपम और आलोकिक अद्वितीय भाव 'प्रेम 'ही है जो मात्र ढाई अक्षरों में अपनी सम्पूर्णता प्रदान करता है.

प्रेम एक शब्द नही बल्कि परमानन्द की परम अनुभूति है. जिसके साथ देवतुल्य छबि का आभामंडल मंडराता रहता है. इसीलिए प्रेम को सत्यम शिवम् सुंदरम की उपमा दी गयी है और इसे सृष्टि में सृजन का आधार माना गया है. जहा अनुभूतियों को महसूस करने और अभिव्यक्त करने के लिए प्रेम स्थायी भाव के रूप में मन में रच बस जाता है.

जीवन के सत. और तत्व, सूक्ष्म और विराट रूप में प्रेम हर प्राणी में समाया है.

परमात्मा से जुड़कर विशुद्ध प्रेम भक्ति और आस्था, को अपना सब कुछ समर्पित कर ईश्वरीय सत्ता को प्राप्त कर लेता है और मोक्ष प्राप्ति का साधक बन जाता है. जहा आस्था और श्रध्दा के पवित्र फूल अपने इष्ट को अर्पित किये जाते है. वही ज्ञान के प्राकट्य रूप में वैराग्य और तप का मार्ग खोल देता है. जहा आत्मा के परमात्मा से जुड़कर सत्य के दर्शन सहज ही हो जाते है. इसीलिये प्रेम हमेशा निराकार, आलौकिक होते हुए भी हर प्राणी के हृदय का स्वामी होता है.

हमरे धर्म ग्रंथो में और संतो ज्ञानियों ने प्रेम को ईश्वरीय सत्ता के रूप में स्वीकार किया है. उन्होंने इसे 'अक्षय निधि' माना है जो खर्च करने से बढ़ता है और बाँटने से अक्षय हो जाता है.

प्रेम कही मुखर है कही मौन है, कही समर्पण है कही मोक्ष है. संतो, ज्ञानियों ने प्रेम को संसार का सबसे अनमोल और सुंदर भाव माना है वात्सल्य की मीठी अनुभूतियों के रूप में वह स्वर्गिक सुख देता है वही सच्चे साथी के रूप में प्रेम-प्रेरणा बनकर जीवन के दुर्गम मार्ग में भी पथ-प्रशस्त करता है।

कहा जाता है कि प्रेम हृदय के अंतर्मन में बसा होता है, कभी जब परिस्थिति हावी हो जाती है तो वह मन को छू कर निकर जाता है. कभी गीली भावनाओं के लय के साथ मन की गहराईयों में बैठ कर अनमोल मोती निकलता है, कभी मुस्कान बनकर खुशियाँ बिखेरता है तो कभी दर्द को गले लगाकर मौन हो जाता है कभी मन की कोमल संवेदनाओं की आंच पाकर शब्दों की साधना कर प्रेम पुजारी बन जाता है. कहा जाता है कि प्रेम वाणी, स्पर्श, और अभिव्यक्ति से भी परे है, जो सिर्फ अनुभूति में ही व्यक्त है. तभी हर जीव प्राणी में उसका प्रादुर्भाव पाया जाता है. प्रेम जब सकारात्मक भावनाओं का स्वामी होता है.

तब उसका दृष्टिकोण दार्शनिकता से भरा होता है. जिसमे दया, करुणा, क्षमा, समर्पण, त्याग, जैसे इन्द्रधनुषी भावनाए मिलती है. वही जब प्रेम नकारात्मक भावनाओं का अधिकारी बन जाता है, तब, अहंकार, दंभ, स्वार्थ, ईर्ष्या जैसे अवगुणों का स्वामी बन जाता है. उसका अज्ञान ही उसका मार्ग भ्रमित कर देता है और मिथ्या वश वह दुसरो के प्रेम को देख नही पाता.

प्रेम हमेशा अनुभूतियों में ही विधमान होता है. इसमें जीवन के सारे सत्व और तत्व समाहित है, सच्चा आलंबन पाकर प्रेम कब प्रेरणा बन जाता है और दुर्गम मार्ग तय कर लेता है पता ही नही चलता, जैसे गोस्वामी तुलसी दास की आसक्ति ने भक्ति के नये मार्ग खोल दिए थे. शबरी के जूठे बेर सिर्फ भक्ति भाव को ही पहचानते थे भरत का भाई प्रेम त्याग समर्पण की नई गाथा लिख गया. वह मीरा का पवित्र प्रेम ही था जिसके कारण रणछोड़दास जी के मंदिर में श्रीकृष्ण जी की मूर्ति में सशरीर समा गयी थी. परमात्मा से एकाकार होने के लिए जुलाहे कबीर के दोहे ही पर्याप्त थे जिन्होंने शरीर के स्थान पर अपने पुष्प स्वरूप को प्रकट किया था प्रेम और भक्ति के अनुपम मिसाल बने भक्त हनुमान जिन्होंने ' राम ' को पाया और धरती पर अमरत्व होने का वरदान पाया. शिर्डी के साईं बाबा ने निस्वार्थ प्रेम की सुंदर परिभाषा रची, जिसमे न तो आडम्बरी शब्द थे न ही स्तुति के गीत थे, फिर भी लोगो में आपसी प्रेम और सद्भावना की मौन सीख थी. तभी वे स्वयं भू प्रकट हुए और समाधिस्थ हो गये.

सदियों से प्रेम निराकार और अगोचर ही माना गया है. इस खुबसूरत अहसास को आलंबन की आवश्यकता नही होती...

इसीलिए कहा जाता है कि प्रेम कभी अकेला नही होता, प्रेम एक संवेदना की भावना है, एक अदृश्य शक्ति है जो हर निर्बल का प्रथम बल बन जाता है. अपने अज्ञान और अहंकार के कारण इंसान प्रेम के आन्तरिक स्वरूप को देख ही नही पाता. उसे बाह्य रूप से भोतिकता और धन ही दिखता है इसी मिथ्या को वह प्रेम का पर्याय मानने की भूल करता रहता है.

प्रेम की व्याख्या 'राधा कृष्ण' के पवित्र प्रेम के बगैर अधूरी है। जो अवर्चनीय है, अनोखी है, और गंगाजल की तरह पवित्र है. सात्विक प्रेम की ऐसी मिसाल दुनिया के किसी धर्म ग्रन्थ में नहीं है इसीलिए राधा कृष्ण सदियों से पूजनीय है।

प्रेम की सम्पूर्णता उसकी अनुभूति में निहित है। और राधा कृष्ण का अध्याय खोले बिना प्रेम के अर्थ अधूरे है. जिसमे श्रृंगार भी विरह है और मोह भी समर्पण है. क्षीर की तरह निर्मल, निश्छल है और पुण्य की प्राप्ति का गंगाजल है। जो त्याग और तपस्या से उपजा है, जिसमे ज्ञान और आस्था का दर्शन छुपा है। आँसुओं में भी विशुद्ध प्रेम है। राधा कृष्ण के इसी सात्विक प्रेम की सारी दुनिया वंदना करती है। जो विकारो से परे है। और सिर्फ भावनाओं के आधीन है। गीता के ज्ञान में राधा नहीं है फिर भी अध्याय की समाप्ति पर राधे राधे कहकर परायण किया जाता है... प्रेम के इस शाश्वत, प्रेम को कोटिश: प्रणाम, जहा प्रेम ईश्वर के रूप में विद्यमान है।

श्रीकृष्ण ने अपनी योग विद्या को भी प्रेम के समतुल्य खड़ा कर रखा है। योग के प्रभाव से ही महाभारत की रचना हुई है और पांडवो की विजय हुई है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन को दिया गया 'गीता का ज्ञान "जीवन के वास्तविकता का दर्शन है। जिसमे जीवन के सारे सत् और तत्व सूक्ष्म और विराट रूप में उपस्थित है।

जहा प्रेम अदृश्य रूप में ज्ञान और प्रकट रूप में वैराग्य बन जाता है। और यही प्रेम प्रेरणा बनकर जीवन के दुर्गम मार्ग में भी पथ प्रशस्त करता है। और भक्ति बनकर परम दुर्लभ मोक्ष की प्राप्ति का साधन बन जाता है। और आत्मा को परमात्मा से जोड़ कर जीवन के सत्य का दर्शन करता है।

जीवन की क्षणभंगुरता पर किसी को भी संदेह नही है। नाशवान शरीर से प्रेम मिथ्या मात्र है, जीव से ही जीवन है जगत है, और संसार में प्रेम ही शाश्वत रहता है। अटल सत्य है। श्री कृष्ण ने सारे संसार को प्रेम की बोली से जीता है। भक्ति, आस्था, ज्ञान -विज्ञानं वैराग्य -वात्सल्य राग- विराग, क्षमा करुणा

त्याग समर्पण आदि सभी में प्रेम का ही अंश छुपा है। जब तक जीवन है तब तक प्रेम के इस दीपक में इन भावनाओं का तेल डालते रहना चाहिए, ताकि इस प्रेम दीपशिखा का आलोक कभी भी कम न हो सके।

जब कोई व्यक्ति प्रेम में लीन होता है, तब वह बाह्य संसार से अछूता और आन्तरिक प्रेम सौन्दर्य से परिपूर्ण होता है. भीड़ में भी रहकर एकाकी, बैरागी और एकांत में भी रहकर भी प्रेम के अलौकिक अनुभूतियो को जी लेता है.

हर धर्मग्रंथ में प्रेम को ईश्वर, अल्लाह, गॉड का नाम दिया गया है. इसीलिए प्रेम को भगवान् और भगवान् को प्रेम कहा गया है. प्रेम को शिवेन्दु का गंगा जल, तुलसी के मानस को राम का पुण्यफल, कहा जाता है नीर से पवित्र प्रेम को मंदिर का दीपक और सहरी का अज़ान कहा जाता है.

समय की गति हमेशा परिवर्तन चाहती है शायद उच्च कोटि का प्रेम धीरे धीरे कम होता जा रहा है. विशुद्ध प्रेम की ऊष्मा का अभाव और व्यावहारिक महा माया ने सच्चे प्रेम की महिमा को मंडित कर दिया है. सत्य, धर्म, आध्यात्म, ज्ञान, और प्रेम रस की सौन्दर्यानुभूति को भुला कर केवल स्त्री पुरुष के बाह्य आकर्षण को प्रेम मान लेना सबसे बड़ी भूल है. दैहिक आकर्षण प्रेम का सच्चा स्वरूप हो ही नही सकता. संसार के रचयिता ने रिश्तो की गरिमा से प्रेम पुष्प पल्लवित किया है. सृष्टि की रचना के लिए स्त्री पुरुष का प्रेम ही आधार बना है. तब प्रेम की पवित्र अनुभूतियां महसूस की गयी होंगी. वहा आकर्षण से पहले समर्पण हुआ होगा, वैराग्य से बड़ा राग प्रकट हुआ होगा, और श्रृंगार रस की पूर्णाहुति हुई होगी, और प्रेम के अपरिमित सौन्दर्य की रहस्यानुभूति हुई होगी, वही से सृजन का बीजारोपण हुआ होगा, तभी सृष्टि के विस्तार का शुभारम्भ हुआ होगा.

प्रेम कल भी सौन्दर्य युक्त था आज भी अपने शाश्वत सत्य की गरिमा से अलौकिक है, बस देखने वालो के नजरिये में बदलाव आता गया है जिसे परिवर्तन का नियम कहकर आगे बढ़ा जाये और प्रेम के नये आकार का स्वागत किया जाये, यही आज का सत्य है, शिव है, सुंदर है।

ई. अर्चना नायडू - साई विला 131, दुर्गेश विहार कॉलोनी, भोपाल मो 9575675193

लघुकथा - ज्ञानदीप...- श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय'

"यार चंदू! इन लोगों के पास इतने सारे पैसे कहाँ से आ जाते हैं, देख न कितने सारे पटाखे बिना जलाये यूँ ही छोड़ दिए हैं। ये लछमी माता भी इन्हीं पर क्यों, हम गरीबों पर मेहरबान क्यों नहीं होती"

दीवाली की दूसरी सुबह अधजले पटाखे ढूँढते हुए बिरजू ने पूछा।

"मैं क्या जानूँ भाई, ऐसा क्यों होता है हमारे साथ। "

"अरे उधर देख वो ज्ञानू हमारी तरफ ही आ रहा है, उसी से पूछते हैं, सुना है आजकल उसकी बस्ती में कोई मास्टर पढ़ाने आता है तो शायद इसे पता हो। "

"ज्ञानु भाई ये देखो! कितने सारे पटाखे जलाये हैं इन पैसे वालों ने। ये लछमी माता इतना भेदभाव क्यों करती है हमारे साथ बिरजू ने वही सवाल दोहराया। "

"लछमी माता कोई भेदभाव नहीं करती भाई! ये हमारी ही भूल है। "

"हमारी भूल? वो कैसे हम और हमारे अम्मा-बापू तो कितनी मेहनत करते हैं फिर भी..."

"सुनो बिरजू! लछमी मैया को खुश करने के लिए पहले उनकी बहन सरसती माई को मनाना पड़ता है। "

"पर सरसती माई को हम लोग कैसे खुश कर सकते हैं" चंदू ने पूछा।

"पढ़ लिखकर चंदू। सुना तो होगा तुमने, सरसती माता बुद्धि और ज्ञान की देवी है। पढ़ लिख कर हम अपनी मेहनत और बुद्धि का उपयोग करेंगे तो पक्के में लछमी माता की कृपा हम पर भी जरूर होगी। "

"पर पढ़ने के लिए फीस के पैसे कहाँ है बापू के पास हमें बिना फीस के पढ़ायेगा कौन?"

"मैं वही बताने तो आया हूँ तम्हे, हमारी बस्ती में एक मास्टर साहब पढ़ाने आते है किताब-कॉपी सब वही देते हैं, चाहो तो तुम लोग भी उनसे पढ़ सकते हो। "

चंदू और बिरजू ने अधजले पटाखे एक ओर फेंके और ज्ञानु की साथ में चल दिए।

श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' - अलीगढ़/भोपाल 9893266014

कविता - आई है दीवाली - डॉ मीरा सिंह "मीरा"

देखो आई है दीवाली
जगमग करती खुशियों वाली।
तारे उतरे हैं अंबर से
दुनिया लगती बहुत निराली। ।

जगमग-जगमग रात हुई है
खुशियों की बरसात हुई है।
गली गली में धूम मचा है
बहुत सुहानी बात हुई है। ।

बजे पटाखें धूम धड़ाके
बच्चें हंसें ताली बजाके।
आज तिमिर को जाना होगा
सब कहते हैं ढोल बजाके। ।

बाबा दादी चले दिलाने
माटी के कुछ नए खिलौने।
खिले-खिले मुखड़े बच्चों के
बात खुशी की अब क्या कहने।

डॉ मीरा सिंह "मीरा" - डुमराँव, जिला-बक्सर, बिहार - मोबाइल -9304674258

कविता - हाँ वो ही! - श्री कृष्ण गोप

सर्दी में
सुबह सुबह
धुप वो ही लाता है
काँटों की झाड़ी में
फूल जो खिलाता है..

उषा की लाली में
उसका ही नूर है
जो दिल में रहता है
लगता है दूर है..

चिड़ियों के कलरव में
उसका ही शोर है
सर्द स्याह रातों की
उससे ही भोर है..

गर्मी में भाप बना
जल जो उड़ा देता है
पहरों बरसातों की
झड़ी वही देता है..

पत्तों को कलियों को
रंग वही देता है
बिन वादा सब कुछ दे
ऐसा वो नेता है..

उसके ही सात गगन
और सारी धरती है
हवामान बन पसरी
सब उसकी मर्जी है..

जीजस
वाहेगुरु वो
अल्ला वो राम है
प्रभु कुछ भी
कहलाए
रब का ही नाम है..

श्री कृष्ण गोप - स्वास्तिक (एस.के.आर.) रेसिडेन्सी, विजन महल होटल के समीप, तिलहरी, जबलपुर (म.प्र.)

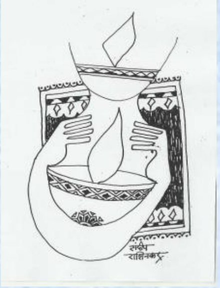

शब्दचित्र - आसान नहीं है "सुमित्र" जैसा बनना - श्री प्रतुल श्रीवास्तव

स्वयं की यश-कीर्ति बढ़ाने, स्वयं को स्थापित करने, पुरस्कार-सम्मान प्राप्त करने के प्रयत्न में तो सभी लगे रहते हैं किंतु अपने मित्रों को, आने वाली पीढ़ी को निःस्वार्थ प्रोत्साहित करने, उनके कार्य में सुधार करने, उनको उचित मार्गदर्शन देने के लिए अपना समय और शक्ति खर्च करने वाले लोग बिरले ही होते हैं। वरिष्ठ शिक्षाविद्, पत्रकार, साहित्यकार डॉ.राजकुमार तिवारी "सुमित्र" ऐसे ही बिरले लोगों में से एक हैं। डॉ."सुमित्र" ने श्रम और साधना से न सिर्फ स्वयं "सिद्धि" प्राप्त की वरन प्रेरणा और मार्गदर्शन देकर न जाने कितने लोगों को गद्य-पद्य लेखन में पारंगत कर प्रसिद्धि के शिखर तक पहुंचाया। मुझे याद है जब मैं कक्षा दसवीं का छात्र था तब एक कविता लिखकर उसे प्रकाशित कराने नवीन दुनिया प्रेस गया था। "सुमित्र जी" ने मेरी कविता प्रकाशित कर मुझे और और लिखने की प्रेरणा दी थी। 50 वर्ष पूर्व "सुमित्र जी" से वह मेरा पहला परिचय था। उन दिनों और उसके बाद भी सुमित्र जी के पास पहुँच कर उनका समय बर्बाद करने वाला मैं अकेला नहीं था, मुझ जैसे अनेक लोग थे, किन्तु सुमित्र जी सबसे बहुत आत्मीयता से मिलते उन्हें पर्याप्त समय देते। मुझे लगता है कि यदि सुमित्र जी स्वार्थी होते, उन्होंने नई पीढ़ी को प्रोत्साहित करने में अपने जीवन का कीमती समय खर्च न करके उसका उपयोग सिर्फ स्वयं के लिए किया होता तो शायद उन्होंने लिखने-पढ़ने का जितना काम अब तक किया है उससे कहीं दस गुना ज्यादा कर लिया होता, किन्तु वे ऐसा नहीं कर सकते थे क्योंकि वे "सुमित्र" हैं और अगर उन्होंने ऐसा किया होता तो सम्भवतः इतनी संख्या में पढ़ने-लिखने वाले लोग तैयार न होते। साहित्यकारों की नई पीढ़ी तैयार करने में जितना योगदान सुमित्र जी का है उतना उनके समकालीन साहित्यकारों में शायद ही किसी का हो।

डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र'

हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि, पत्रकारिता एवं शिक्षण में पत्रोपाधि प्राप्त करके सुमित्र जी ने पी.एच डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ सुमित्र जी ने अपना जीवन स्कूल शिक्षक के रूप में प्रारम्भ किया फिर खालसा कॉलेज में अध्यापन किया। उन्होंने दैनिक नवीन दुनिया में संपादन कार्य कर पत्रकारिता में यश-कीर्ति प्राप्त की। वे दैनिक जयलोक के सलाहकार संपादक हैं, पत्रिका "सनाढ्य संगम" के परामर्शदाता हैं। उन्होंने अपने संपादन से अनेक पुस्तकों-स्मारिकाओं को स्मरणीय-संग्रहणीय बना दिया। वे शासन द्वारा

अधिमान्य वरिष्ठ पत्रकार हैं। डॉ.सुमित्र ने अनेक छात्र-छात्राओं को शोध कार्य हेतु सहयोग एवं परामर्श प्रदान किया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त वि वि के अकादमिक सलाहकार एवं कोयला व खान मंत्रालय हिंदी सलाहकार समिति तथा आकाशवाणी सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य डॉ. राजकुमार तिवारी "सुमित्र" साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था "मित्रसंघ" के संस्थापक सदस्य हैं उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में मित्रसंघ ने बहुत यश कमाया। देश भर की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में डॉ.सुमित्र की सैकड़ों गद्य-पद्य रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। उनकी रचनाओं, आलेखों, रेडियो रूपकों का प्रसारण आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से जब-तब होता रहता है। डॉ. सुमित्र की संभावनाओं की फसल, यादों के नागपाश (काव्य संकलन), बढ़त जात उजियारो (बुन्देली काव्य), खूंटे से बंधी गाय-गाय से बंधी स्त्री (व्यंग्य संग्रह) सहित काव्य, कथा, चिंतन परक गद्य निबंध, रेडियो रूपक, व्यंग्य एवं उपन्यास सहित 40 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। भारत भारती, श्रेष्ठ गीतकार एवं शंकराचार्य पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित-अलंकृत डॉ.सुमित्र को श्रेष्ठ साहित्य सृजन पर साहित्य दिवाकर, साहित्य मनीषी, साहित्य श्री, साहित्य भूषण, साहित्य महोपाध्याय, पत्रकार प्रवर, विद्यासागर (डी.लिट्.), व्याख्यान विशारद, हिंदी रत्न, साहित्य प्रवीण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सुधाकर आदि सम्मानोपाधियां प्राप्त हो चुकी हैं। सुमित्र जी ने साहित्य समारोहों में शामिल होने न्यूयार्क (अमेरिका), इंग्लैंड, रूस आदि देशों की यात्राएं कीं और सम्मानित होकर नगर का गौरव बढ़ाया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने डॉ. सुमित्र के व्यक्तित्व-कृतित्व पर आलेख प्रकाशित किये। देश के अनेक छोटे-बड़े नगरों में उन्हें सम्मानित-अलंकृत किया गया। वे पाथेय संस्था और पाथेय प्रकाशन के संस्थापक-निदेशक हैं। उल्लेखनीय है कि पाथेय द्वारा अब तक स्थानीय एवं देश-प्रदेश के साहित्यकारों की 700 से अधिक कृतियों का प्रकाशन किया जा चुका है जो एक कीर्तिमान है। डॉ.राजकुमार तिवारी "सुमित्र" जी की धर्म पत्नी स्मृति शेष डॉ.गायत्री तिवारी समर्पित शिक्षिका और श्रेष्ठ कथाकार थीं। उनके सुपुत्र डॉ. हर्ष तिवारी अपने यू ट्यूब चैनल "डायनेमिक संवाद" के माध्यम से साहित्य, कला, संस्कृति और सेवा में रत लोगों को प्रभावशाली ढंग से समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं।

अपने सद्व्यवहार, आशीष वचनों, शुभकामनाओं और सहयोग से लोगों के हृदय में बसने वाले डॉ. राजकुमार तिवारी "सुमित्र" जी के जन्म दिवस 25 अक्टूबर को उनके सभी मित्रों, परिचितों, शुभचिंतकों, प्रसंशकों सहित समस्त साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं की ओर से उनके स्वस्थ, सुदीर्घ, यशस्वी जीवन की बहुत-बहुत शुभकामनायें। सादर प्रणाम।

श्री प्रतुल श्रीवास्तव - जबलपुर - मध्यप्रदेश

कविता - दीया जलाना है - डॉ राकेश चक्र

एक दीया जलाना है
प्यारमय प्रकाश का।
एक दीया जलाना है
अंधकार के विनाश का। ।

एक दीया जलाना है
उपकार का विश्वास का।
एक दीया जलाना है
सत्कार रास हास का। ।

एक दीया जलाना है
अपने वीर जवानों का।
एक दीया जलाना है
सच्चे प्रिय इंसानों का। ।

एक दीया जलाना है
नफरत और भेद मिटाने का।
एक दीया जलाना है
हिंदी राष्ट्र भाषा बनाने का। ।

एक दीया जलाना है
मित्रों में प्रेम बढ़ाने का।
एक दीया जलाना है
मन के शत्रु हटाने का। ।

एक दीया जलाना है
मन को गीत सुनाने का।
एक दीया जलाना है
उपवन बाग लगाने का। ।

एक दीया जलाना है
धरती को स्वर्ग बनाने का।
एक दीया जलाना है
सपनों में खो जाने का। ।

एक दीया जलाना है
आलस्य को भगाने का।
एक दीया जलाना है
अच्छी सोच बनाने का। ।

डॉ राकेश चक्र (एमडी, एक्यूप्रेशर एवं योग विशेषज्ञ) 9456201857

व्यंग्य - विश्व का आठवाँ आश्चर्य - डॉ मीरा सिंह "मीरा"

यकीन मानिए --आजकल मुझे अक्सर ही विश्व का आठवाँ आश्चर्य देखने के लिए मिल जाता है। अनुभव कहता है कि इस दौर में हर व्यक्ति को इस आश्चर्य से रुबरू होता है। पता नहीं कभी आपने नोटिस किया कि नहीं किया?अब किसी स्थल पर गगनभेदी ठहाकों की गूँज गूँजती नहीं सुनाई देती। जबकि पांच या उससे ज्यादा महिला/ पुरुष एक स्थान पर उपस्थित रहते हैं। अरे साहब, क्या सोचने लगे? मैं भी मानती हूं आजकल सबको काम का प्रेशर रहता है। पर ऐसा नहीं कि लोग दिनभर काम में ही डूबे रहते हैं। काम से जब कभी भी दो पल के लिए फुर्सत पाते हैं, वो किसी से हालचाल पूछने या बात करने के बजाय, बेचैनी से अपने प्रिय मोबाइल के पास पहुँच जाते हैं--- उतावलापन मत पूछिए। अपने प्रिय की एक झलक देखने की चाह लिए किसी दीवाने प्रेमी की तरह हसरत भरी आंखों से मोबाइल को देखते हैं। आंखों में असंख्य जुगनू झिलमिला उठते हैं। हाथों में ले एकांत तलाशते हैं। फिर एकटक उसे निहारते रहते हैं। कभी मुस्कुराते हैं, कभी दुखी हो जातें हैं। मुखमंडल पर तरह-तरह की रेखाएं बनती-बिगड़ती हैं। इस बीच आस-पडोस में क्या घटित हो रहा है या हुआ, उन्हें सुध नहीं रहती। अगर कोई हस्तक्षेप नहीं करे तो घंटों सुध-बुध खोकर उससे नैन गड़ाए उसे निहारते रहते हैं। महामिलन की इस शुभ बेला में कान भी कोई खलल नहीं डालते। कर्णपट में आवाजरोधी एक यंत्र ठूंस दिया जाता है या यूं समझिए कानों को ड्यूटी से मुक्त कर दिया जाता है इसलिए इर्द-गिर्द की गतिविधियों से प्रेम क्रीड़ा में कोई खलल नहीं पड़ता। इस दौर में यदि भूलवश कहीं कृष्ण भगवान आ जाएं तो चकराएंगे जरूर। उन्होंने तो सिर्फ वृंदावन में रास रचाया पर यह मुआ मोबाइल कहीं भी / कभी भी किसी के साथ रास रचाते दिखता है। स्त्री, पुरुष, बच्चे, बड़े, बुजुर्ग, अमीर, गरीब, हर जाति, धर्म, संप्रदाय का व्यक्ति इसके इश्क में गिरफ्तार है। यह साम्यवादी है। सबसे नेह करता है। सब पर प्यार लुटाता है। किसी का महबूब बना है तो किसी की महबूबा -- बेशक इंसान के लिए इंसान के पास आज मिनट भी नहीं है, पर मोबाइल के लिए सबके पास भरपूर समय है। मोबाइल और इंसान का रिश्ता दिनों दिन इतना मजबूत और प्रगाढ़ होते जा रहा है कि दुनिया के अन्य रिश्ते उसके समक्ष गौण लगने लगे हैं।

डॉ मीरा सिंह "मीरा" - डुमराँव, जिला-बक्सर, बिहार - 802119

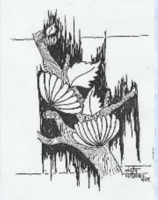

नारी सशक्तिकरण [चार कवितायें] - डॉ. पद्मा शर्मा

[1]

महिलाओं का शासन

अब महिलाओं का शासन
होगा देश में
रसोई और खेतों के अलावा भी
किन्तु ...
लिखी गयी जो गाथा
बरसों पुरानी
लगेगा समय बदलने में

फार्म भरने के बाद
वे सब फिर से
लग गयी हैं काम पर
पार्षद, नगरपालिका अध्यक्ष,
महापौर और सरपंच पद की प्रत्याशी

कुछ स्वयं चालित हैं
बांकी पति द्वारा संचालित

उनके पार्षद पति,
अध्यक्ष पति,
मेयर और
सरपंच पति हैं

लेने हैं उनको ही निर्णय
यहाँ तक कि
हो रहे हैं उनके ही स्वागत
दे रहे हैं वे भाषण
पहन रह हैं फूल माला

महिलाएँ तो बैठी हैं
अब भी

घर में,
रसोई में,
आँगन में
बच्चे पालतीं, खाना बनातीं,
झाड़ू बुहारतीं
कण्डे पाथतीं हुई

रंच मात्र
शासन नहीं कर पायीं
घर पर भी

फिर ...
कैसे करेंगी शासन देश पर
पुरुष प्रधान समाज पर

----

[2]

खजाना

स्त्रियों के मन में होता है खजाना
अहसास का...
अनुभूति का...
कजरी के खजाने जैसा

बचपन से वृद्धावस्था तक तिनका-तिनका जमा करती हैं खजाने में...
बहुत छुपाती हैं स्त्रियां

उनके मन में बातों का एक खजाना भरा रहता है
उस पोटली से जब निकल नहीं पाता सब
तो उनींदी आँखों में सपने बन
रात भयावह कर देता है

बचपन में नहीं बता पाई वह पिता को
बगल के चाचा
जिन्हें आप अपने भाई से बढ़कर मानते थे
जब से उसके अंग विकसित हुए हैं
देखते हैं उसे घूर घूर कर
पास बुलाकर फेरते हैं सिर पर हाथ

अब लाड दुलार पहले जैसा नहीं रहा...
अपने गले लगाना चाहते हैं भींचकर
कई बार तो चीखने का मन होता है

नहीं बोल पाई अपने भाई को...
जिस दोस्त को आप मुझे स्कूल छोड़ने भेजते हैं
वह छूना चाहता है मेरे उन अंगों को
जो मेरे स्त्री होने का अहसास दिलाते हैं

नहीं बता पाई माँ को
बस में पिछली सीट पर बैठे व्यक्ति ने
अपने अंगूठे से मेरे जिस्म को छूने का प्रयास किया
मैं खिसकती चली गई अपनी सीट पर
आगे और आगे ...
तब तुम भी मुझ पर चिल्लाई थीं
ठीक से नहीं बैठ सकती क्या

मेरे ठीक से ना बैठने में
पीछे वाले का पांव था माँ

इस तरह के पांव तो
पिक्चर हॉल की सीट पर भी मुझे परेशान करते रहे

नहीं बोल पाई किसी को
आते-जाते चौराहे पर
खड़े लड़कों की फब्तियां

जो गालियों से भी घिनौनी होती हैं
उनके हाथों के गंदे इशारे उनके मुंह से निकली
तोपों के गोले
छलनी करती हैं तन को भी मन को और ज्यादा ...

आज भी चस्पा हैं
वो मन के कोने पर बैनर बन

अपने पुरुष मित्र को भी नहीं बताए पायी
कि उसका दोस्त मेरे लिए गलत बातें फैला रहा है

जो मेरे अस्तित्व की धरोहर को
नष्ट करने में तुली है

नहीं बता पायी
अपने पति को
तुम्हारे बॉस ने मुझे मैसेंजर पर
भेजे थे कई लिजलिजाते मैसेज
उनकी पैनी बेहूदा खूंखार नजर
चिपक गई थी पार्टी में
मेरे पीछे और आगे
जो नहाते वक्त भी अलग ना हो सकी

मेरे मुंह खोलने पर पिता भाई मां के संबंध बिगड़ जाएंगे
यह लगा देंगे मेरे पैर में जंजीर रोक देंगे मेरी ही उड़ान

इन बाधाओं से पार करती आज मैं खुद एक बच्ची की माँ हूँ

मैंने खजाने का मुँह खोल लिया है अपने पिटारे से

बढ़ती हुई बच्ची को एक-एक नसीहत देती जाती हूँ

उसे उसके खास अंगों की कराती हूँ पहचान ...
समझाती हूँ कोई गलत तरीके से छुए तुम्हारे स्त्रीत्व को
तो बताना मुझे
मैं अरावली पर्वत सी रक्षा करूंगी तुम्हारी
तोड़ दूंगी उन हाथों को
अपनी दुर्गा खड्ग से काट दूंगी हाथ
शाहजहां ने काटे थे हाथ कारीगरों के
अपनी कारीगरी को
मिटाने वालों के हाथ काट दूंगी मैं
कोई फब्तियां कसी तो बता देना मुझे
मैं प्रतिकार का तीर चला कर कर दूंगी उसका मुँह बंद
जैसे एकलव्य ने किया था कुत्ते का मुँह बन्द
देखे जो कोई गलत निगाहों से मैं दुर्गा बन दुष्ट आंखों का संहार करूंगी

पर कैसे बचेगी बस ट्रेन की सीट पर
पिक्चर हॉल की सीट पर
मैं बताती हूं सदा साथ रखना पिन
तुम्हारी तरफ बढ़ते पांवों में जोर से पिन चुभा देना
उन पावों से रक्त के साथ उसका कलुष भी बह जाएगा
पर पति के साथ जब रहोगी मैं कैसे बचा पाऊंगी तुम्हें

मैं तुम्हें दुर्गा रूप से अवगत कराऊंगी
काली की कथा सुनाऊंगी और पैदा करूंगी तुम्हारे अंदर स्वाभिमान की ज्वाला
कि तुम्हें कभी कहना ना पड़े *मी टू*

----

[3]

स्त्री सशक्तिकरण

गैस पर चढ़ी भगौनी में
उबलते दूध की तरह
खदक रहे हैं विचार
मन में मन्थन, बौध्दिक चिन्तन
शाम को है वक्तव्य
विषय है स्त्री सशक्तिकरण

मम्मी लन्च बाक्स दो
बेटे की आवाज से
टूट गयी तन्द्रा
विचार छिन्न-भिन्न

बच्चों के जाते ही
फिर से विचारमग्न
पानी की मोटर की
घन्न .... घन्न ...
गुम हो गये विचार
मस्तिष्क हुआ सुन्न

कुकर की सीटी से
लौटी विचार बीथी से
खाना बना क्या ?

पति की आदेश भरी पुकार
इन सबके बीच बचे नहीं
सब्जी की तरह कट गये विचार
गुंथ गये आटे में नमक की तरह
दाल के बघार की तरह
ऊपर ही ऊपर, तितर-बितर

पति के ऑफिस जाते ही
विचार पुनः हावी
कपड़े धोने थे
क्योंकि
बिजली की अभी आमद थी
मशीन की घिर्र-घिर्र
दिमाग से धुल गए
तथ्य और विचार

फिर कुछ सोच पाती
उससे पहले ही
महरी की तुनक
बर्तन की घिटपिट

ऐसे ही गुजरे पल
मन को मिला न संबल

दरवाजे की दस्तक
बच्चों की आवक
भोजन, होमवर्क
कई काम थे

शाम को उसे जाना है
आॅफिस से पति लौटे
उसके बाद का समय
दिया है उसने
वक्तव्य देने के लिए

उसके पास समय ही कहाँ

देने के लिए
कहने को तो 'हाउस वाइफ' है
सही तो है 'घरेलू पत्नी'
पर पत्नी का घर है क्या ?

वह करती है घर की देखभाल
पर उसकी करेगा कौन ?

वह देती है भाषण
स्त्री सशक्तिकरण पर

फूला है पति का मुँह
बच्चों की शिकायतें
उनकी फरमाइशें
बदलती है लौटकर कपड़े
घुस जाती है रसोई में
रात्रि के भोजन की तैयारी में

----

[4]

मेरा होना

मैं नदी हूँ और तुम समुद्र
कैसे समा पाओगे मुझमें
मैं ही विलीन हो जाऊँगी तुममें

मैं हवा हूँ और
तुममें है एक झंझावात
जो मेरे अस्तित्व को ही उड़ा ले जाएगा

मैं पृथ्वी हूँ और तुम आकाश
इतनी ऊँचाई पर कैसे होगा मिलन
तुमसे मिलने छोड़ना होगी अपनी जमीन

मैं रात्रि हूँ तुम हो दिवस
एक दूसरे की अनुपस्थिति में ही आते हैं

जब बन जाएंगे हम चप्पू और नाव
एक दूसरे को सहारा देकर होंगे समुद्र से पार

या समुद्र में ही

मैं सीप बन जाऊंगी
तुम बूँद बनकर मुझमें समा जाना
फिर होगा नए हीरक का सूत्रपात

नहीं तो

तुम वंशी बन जाना
मैं उसके छिद्र बनकर ही सुख
अनुभव करूँगी

तुम्हारी कमियों को निकालती रहूँगी बाहर
फिर शेष रहेगा मधुर संगीत
जीवन का गीत

डॉ. पद्मा शर्मा - प्राध्यापक, हिन्दी, एम एल बी महाविद्यालय, ग्वालियर, मो. 9406980207

कविता - अब के दीवाली में... - श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय'

अब के दीवाली में,
हम कुछ ऐसा कर जाएँ
जहाँ अँधेरा हो उस देहरी,
दीपक बन जाएँ।

बुझे-बुझे चेहरे हों उनमें
आशा का संचार करें
रहे तिरस्कृत जो अब तक
हम गले लगाकर प्यार करें,
आँसु उनके पोंछें,
जो अबतक न मुस्काएँ
जहाँ अँधेरा हो......

जो वंचित हैं शिक्षा से
उनको हम विद्या दान करें
आडम्बर में उलझे हैं जो
उनका हम अज्ञान हरें,
दुर्व्यसनों से बचा, सही पथ
उनको दिखलाएँ
जहाँ अँधेरा है......

बनें सहायक उनके हम
जो हैं अशक्त और दीन-हीन
उन्हें स्वच्छता पाठ पढ़ाएँ
जिनके तन-मन है मलिन,
कैसे रहे निरोगी निर्मल,
उनको समझाएँ
जहाँ अँधेरा है.....

फोड़ें वहाँ पटाखे हम
हो जहाँ कीटाणु रोगों के
फटे बही-खाते वे, जिन पर
लगे अँगूठे लोगों के,
बनकर हम बारूद,
सबक अब उनको सिखलाएँ
जहाँ अँधेरा है...

श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' अलीगढ़/भोपाल 9893266014

लेख - देव दीपावली : देवताओं का पर्व - सुश्री आकांक्षा यादव

मानव जीवन में प्रकाश की महत्ता किसी से छुपी नहीं है। दुनिया के कई देशों में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकाश-पर्व मनाये जाते हैं। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अंधेरे से ज्योति अर्थात प्रकाश की ओर जाइए' यह भारतीय संस्कृति का मूल है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में दीवाली मनाने के कारण एवं तरीके अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है। यह पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है।

हर वर्ष कार्तिक अमावस्या तिथि पर दीपावली का त्योहार मनाया जाता है और इसके 15 दिनों के बाद कार्तिक पूर्णिमा तिथि पर देव दीपावली का उत्सव मनाया जाता है। दीपावली तो केवल नश्वर लोगों के लिए है; देव दीपावली देवताओं का पर्व है। हिंदू धर्म में पूर्णिमा का विशेष स्थान होता है और इनमें कार्तिक माह में आने वाली पूर्णिमा का तो विशेष महत्व है। ऐसी मान्यता है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन देवी-देवता पृथ्वी पर आकर दीपावली मनाते हैं। इस मौके पर गंगा घाटों को सजाया जाता है और खूबसूरत रंगोली व लाखों दीये जलाकर इस त्योहार को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। धार्मिक ग्रंथों की मानें तो देव दीपावली के दिन गंगा नदी में स्नान ध्यान करने से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

देव दीपावली मनाने के पीछे मान्यता है कि एक समय में तीनों लोकों में त्रिपुरासुर नामक राक्षस का राज चलता था। उसके अत्याचार से पीड़ित देवतागणों ने भगवान शिव के समक्ष त्रिपुरासुर राक्षस से उद्धार की विनती की। भगवान शिव ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन उस राक्षस का वध कर उसके अत्याचारों से सभी को मुक्त कराया और त्रिपुरारी कहलाये। इससे प्रसन्न देवताओं ने स्वर्ग लोक में दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया था, तभी से कार्तिक पूर्णिमा को देव दीपावली मनायी जाने लगी।

देव दीपावली मुख्य रूप से काशी में गंगा नदी के तट पर मनाई जाती है। इस दिन काशी नगरी में एक अलग ही उल्लास देखने को मिलता है। हर ओर साज-सज्जा की जाती है और गंगा घाट पर हर ओर मिट्टी के दीपक प्रज्वलित किए जाते हैं। उस समय गंगा घाट का दृश्य भाव विभोर कर देने वाला होता है। लोकाचार की परंपरा होने के कारण वाराणसी में इस दिन गंगा किनारे बड़े स्तर पर दीपदान किया जाता है। देश-विदेश से तमाम श्रद्धालु और पर्यटक इसमें शामिल होने और इसका साक्षी बनने के लिए

पहुँचते हैं। विभिन्न घाटों विशेषकर दशाश्वमेघ घाट पर पर इस दिन भव्य गंगा आरती देखते ही बनती है।

वाराणसी या बनारस (जिसे काशी के नाम से भी जाना जाता है) दुनिया के सबसे पुराने जीवित शहरों में से एक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, काशी नगरी की स्थापना भगवान शिव ने लगभग 5, 000 वर्ष पूर्व की थी। काशी की भूमि सदियों से एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। ये हिन्दुओं की पवित्र सप्तपुरियों में से एक है। प्राचीनतम वेद ऋग्वेद से लेकर स्कंद पुराण, रामायण एवं महाभारत सहित कई ग्रन्थों में इस नगर का उल्लेख आता है। बनारस की भूमि सदियों से एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। अंग्रेजी साहित्य के लेखक मार्क ट्वेन, जो बनारस की किंवदंती और पवित्रता से रोमांचित थे, ने एक बार लिखा था: “बनारस इतिहास से भी पुराना है, परंपरा से पुराना है, किंवदंती से भी पुराना है और सभी के साथ दोगुना दिखता है। ”

वाराणसी अपनी प्राचीन विरासत के साथ-साथ अध्यात्म, साहित्य, संस्कृति, कला और उत्सवों के लिए भी जाना जाता है। ज्ञान, दर्शन, संस्कृति, देवताओं के प्रति समर्पण, भारतीय कला और शिल्प यहाँ सदियों से फले-फूले हैं। भारत की पवित्र नदी गंगा भी यहाँ से प्रवाहित होती है, जिसके किनारे घाटों पर दीप प्रज्ज्वलन एवं दीप दान करके लोग आलोकित होते हैं। दीपावली के 15 दिन बाद वाराणसी में गंगा घाटों पर 'देव दीपावली' मनाने की परंपरा रही है। ऐसी मान्यता है कि कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन देवतागण स्वर्गलोक से उतरकर दीपदान करने पृथ्वी पर आते हैं, इसलिए इस दिन को देव दीपावली के नाम से भी जाना जाता है। देवताओं के साथ इस उत्सव में परस्पर सहभागी होते हैं- काशी, काशी के घाट, काशी के लोग। देवताओं का उत्सव देव दीपावली, जिसे काशीवासियों ने सामाजिक सहयोग से महोत्सव में परिवर्तित कर विश्वप्रसिद्ध कर दिया।

काशी में देव दीपावली उत्सव मनाये जाने के सम्बन्ध में मान्यता है कि राजा दिवोदास ने अपने राज्य काशी में देवताओं के प्रवेश को प्रतिबन्धित कर दिया था। ऐसे में कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान शिव ने रूप बदल कर काशी के पंचगंगा घाट पर आकर गंगा स्नान कर ध्यान किया। यह बात जब राजा दिवोदास को पता चला तो उन्होंने देवताओं के प्रवेश प्रतिबन्ध को समाप्त कर दिया। इस दिन सभी देवताओं ने काशी में प्रवेश कर दीप जलाकर दीपावली मनाई थी। एक अन्य मान्यतानुसार, देव उठनी एकादशी पर भगवान विष्णु चातुर्मास की निद्रा से जागते हैं और चतुर्दशी को भगवान शिव। इसी खुशी में देवी-देवता काशी में आकर घाटों पर दीप जलाते हैं और खुशियाँ मनाते हैं। इस उपलक्ष्य में काशी में विशेष आरती का आयोजन किया जाता है।

काशी में देव दीपावली का वर्तमान स्वरूप पहले नहीं था। पहले लोग कार्तिक पूर्णिमा को धार्मिक माहात्म्य के कारण घाटों पर स्नान-ध्यान को आते और घरों से लाये दीपक गंगा तट पर रखते व कुछ गंगा की धारा में प्रवाहित करते थे, घाट तटों पर ऊँचे बाँस-बल्लियों में टोकरी टाँग कर उसमें आकाशदीप जलाते थे जो देर रात्रि तक जलता रहता था। इसके माध्यम से वे धरती पर देवताओं के आगमन का

स्वागत एवं अपने पूर्वजों को श्रद्धांजलि प्रदान करते थे। धीरे-धीरे देव दीपावली ने एक दिव्य व भव्य त्यौहार का रूप धारण कर लिया। पंचगंगा घाट पर चंद दीपों की टिमटिमाहट के साथ शुरू हुई काशी की देव दीपावली अब लोकल से ग्लोबल हो चुकी है। आसमान के सितारों के जमीं पर उतर आने का आभास देने वाली काशी की देव दीपावली को देखने देश-दुनिया से बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। इस दिन, धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी काशी के ऐतिहासिक घाटों पर कार्तिक पूर्णिमा को माँ गंगा की धारा के समानांतर असंख्य दीप प्रवाहमान होते हैं। असंख्य दीपकों और झालरों की रोशनी से रविदास घाट से लेकर आदिकेशव घाट और वरुणा नदी के तट एवं घाटों पर स्थित देवालय, महल, भवन, मठ-आश्रम जगमगा उठते हैं, मानो काशी में पूरी आकाश गंगा ही उतर आयी हो। गंगा आरती के बीच मिट्टी के लाखों दीपक गंगा नदी के पवित्र जल पर तैरते हैं। विभिन्न घाट और आसपास के राजसी आलीशान इमारतों की सीढियाँ, धूप और मंत्रों के पवित्र जाप के आह्वान से लोगों में एक नए उत्साह का निर्माण करती हैं।

काशी की देव दीपावली न सिर्फ सांस्कृतिक और धार्मिक, बल्कि पर्यटन के लिहाज से भी महत्त्वपूर्ण है। देश-दुनिया से तमाम लोग इस दिन काशी में गंगा घाटों के अद्भुत दृश्य को निहारने और आत्मसात करने आते हैं। विभिन्न घाटों पर वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच गंगा आरती, दीप दान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बीच यह कल्पना करके ही हृदय हर्ष और उल्लास से भर जाता है कि जब काशी में गंगा के 84 घाटों पर एक साथ लाखों दीप प्रज्वलित होते होंगे तो यह दृश्य कितना मनोरम होता होगा। देव दीपावली सिर्फ उत्सव भर नहीं है, बल्कि प्रकृति के सान्निध्य में दीपों के प्रज्ज्वलन के साथ-साथ यह स्वयं को भी आलोकित करने का पर्व है। तभी तो यहाँ से कुछ दूर स्थित सारनाथ में भगवान बुद्ध ने भी ज्ञान देते हुए कहा था- अप्प दीपो भव:।

सुश्री आकांक्षा यादव , पोस्टमास्टर जनरल आवास, नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी-221002
मो.-09413666599 ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

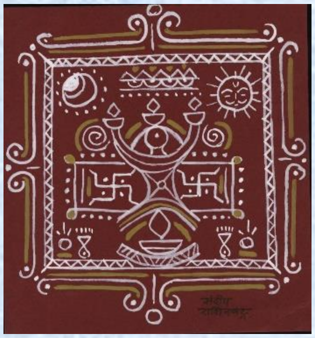

हाइकु - श्री तुकाराम पुंडलिक खिल्लारे

1

लों लौट आयी
गरीब की खुशियाँ -
बासी रोटियाँ

2

वर्षा में धूप -
चल रहा मनुष्य
इंद्रधनुष्य

2

नदीयाँ सुखी
पत्थर ही पत्थर -
बिखरे पर

3

दाना पानी लें
पंछी घौंसले लौटे -
दूजे गायब

4

सितार स्वर -
जमी भीगी पलकें
दीवार पर

5

रिसाले खत्म
खत्म हुआ आदाब-
हॅल्लो क्लिक पे

6

लब तुम्हारे
यूँही थरथराये-
बोलती आँखे

7

कई जाती की
बढ़ी है वनस्पति-
एक सी माटी

8

निर्जन ताल
पंछी स्नान करते -
फूल गिरते

9
झरे है पत्ते -
झुरमूट को बचे
केवल काँटे

10
शिशु का स्पर्श
जाग उठी ममता -
पोंछे कतरे

श्री तुकाराम पुंडलिक खिल्लारे - 57, 'पार्वती निवास', गणपती मंदिर के पास, लोकमान्यनगर, परभणी - 431 401 (महाराष्ट्र) मोबाईल : 8830599675 ईमेल : tukaram.khillare57@gmail.com

लघुकथा - आनंद की बारिश - श्री राजकुमार बरूआ

वर्मा जी अब बड़े खुश नज़र आ रहे थे, मंत्री जी ने उन्हें अपने साथ भोजन करने के लिए बुलाया था वर्मा जी फूलें नहीं समा रहे थे उन्हें लग रहा था अब तो मंत्री जी के साथ याराना हो जाएगा, और हो भी क्यों ना, वर्मा जी मौसम विभाग में उच्च अधिकारी थे उन्हीं की सुचना पर मंत्री जी ने प्रदेश के बड़े से मंदिर में पूजा-पाठ का कार्यक्रम रखा, बारिश की प्रार्थना की, फिर क्या था पूरे प्रदेश में ही जोरदार बारिश होने लगी, मंत्री जी की पूजा का प्रताप बताकर उनके चमचों ने इसे खूब प्रसारित किया, और मंत्री जी ने भी चुनावी माहौल को देखकर इसे खूब भुना रहे थे, अब मंत्री जी भी वर्मा जी से प्रसन्न थे, उन्हें अब अपने यहां भोजन के लिए बुलाया था, और दोनों ही अब इस आनंद की बारिश में तर-बतर हो रहे थे।

श्री राजकुमार बरूआ, भोपाल

समसामयिक लेख - महत्वकांक्षा की मुंडेर - श्री अनूप श्रीवास्तव

महत्वकांक्षा की मुंडेर ने साहित्य को भी कहीं का नहीं छोड़ा। हम भी उसी मुहाने पर पहुंच गए जहां राजनीति धूल धूसरित हो रही थी। पद-लिप्सा, सम्मान, उत्कोच और पुरस्कार की हवस में साहित्यकारों को भी जकड़ लिया। चाटुकारिता चमचागिरी ने अपने सारे कीर्तिमान ध्वस्त कर दिया।

महत्वकांक्षा के मुखौटों ने दैदिप्यमान चेहरों को विदूषक बना दिया।

ऐसा नहीं है महत्वकांक्षा का वायरस पहले नहीं था, लेकिन तब फफूंदी की तरह कहीं - कहीं नजर आती थी। जो नजर अंदाज कर दी जाती थी।

कविता, कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में लाग डांट तो थी लेकिन मर्यादा की लक्ष्मण रेखाओं में बंधी हुई थी। संस्कार आड़े आ ही जाते थे। उक्ति वैचित्रय के बहाने छेड़छाड़ की जाती थी। साहित्य में नवें रस हास्य पर व्यंग्य शालीनता के परिवेश में था। हास्यपद से बचने के लिए उपलब्ध कटाक्ष को लेकर अपनाकर व्यंग्य आगे बढ़ा और शैलीगत विद्या सराही जाने लगी। व्यंजना और लक्षणा को रचना का गुण मानते हुए भी हिंदी में हरदम और व्यंग की अवधारणा भारतेंदु युग के पहले नहीं हो सकी। इसके कई कारण हो सकते हैं। पर प्रमुख कारण है, समाज में उभरने वाले विरोधाभास की समझ का अभाव, भारतेंदु युग के लेखकों भारतेंदु, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, और बालमुकुंद गुप्त ने अपने समय की पहचान विकसित होने पर व्यंग वैसे ही झलक उठा जैसे स्वस्थ मुख पर प्रसन्नता झलकती है। वस्तुतः व्यंग्य व्यंजना का सहज धर्म है। यह शब्दों का खेल नहीं है। मध्य कालीन कविता में जहाँ कविता प्रयत्नसाध्य थी। स्वच्छ व्यंग्य की गुंजाइश नहीं थी। ज्यों-ज्यों रचनाकारों की मुठभेड़ अपने समय के समस्याओं से गहराती गई। त्यों-त्यों हमारी भाषा के तेवर बदलने लगे।

पहले हास्य व्यंग के कमजोर जाल में बहुत छोटी मछलियां पकड़ में आती थी। धीरे-धीरे वह इतना मजबूत हो गया कि बड़े-बड़े मगरमच्छ तो क्या पूरी संसद को घेर लेने के काबिल हो गया।

हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रविंद्र नाथ त्यागी, अजातशत्रु, कृष्णा चराटे, अजात शत्रु, लतीफ घोंघी, गोपाल चतुर्वेदी, ईश्वर शर्मा, डा. ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय, हरीश नवल, सुरेश कांत, अरविंद तिवारी से लेकर सुभाष चन्दर, श्रवण कुमार उर्मलिया, आलोक पुराणिक, सुधीर ओखदे और यशवंत कोठारी से यशवंत व्यास तक यह परंपरा बेलौस बेरोक टोक चलती दिखाई दी।

आज यह चुनौती कथाकार सूर्य बाला, स्नेह लता पाठक, कथाकार बलराम, गिरीश पंकज, धर्म जैन, जयप्रकाश पांडे, रमेश सैनी, शांति लाल जैन, राम किशोर उपाध्याय, फारूकअफरीदी, अशोक व्यास, मलय जैन, मुकेश नेमा, डॉ कीर्ति काले, डॉ आभा सिंह, समीक्षा तैलंग, वीना सिंह, भारती पाठक, सूर्य कुमार के

के अस्थाना, संजीव जायसवाल, मुकुल महान, अलंकार, प्रसून के सामने है। यही नही व्यंग्यकारों की लंबी कतार एक आश्वस्ति के रूप में है। वरिष्ठ व्यंग्यकार रामस्वरूप दीक्षित के साथ व्यंग्य की नई पौध भी जुड़ती दिखाई देती है। व्यंग्य के डिजिटलीकरण की अवस्थापना पर अभी कोई टिप्पणी करना जल्दबाजी होगी। अनुराग बाजपेयी में भी दम खम दिखता है। व्यंग्य की अवधारणा को स्पष्ट करने में वरिष्ठ साहित्यकार और सम्पादक के रूप में सुभाष राय जी का योगदान उल्लेखनीय है। दैनिक जनसंदेश टाइम्स व्यंग्य लेखन का एक मजबूत मंच के रूप में माना जा रहा है।

लेकिन बाद में व्यंग्य की पीढ़ियों में द्वंद नजर आने लगा। नए-नए मठ बन गए। सबने व्यंग्य विमर्श के बहाने अपने-अपने दारुल उलूम खोल लिए। जहाँ फतवे जारी करने की फैक्ट्री लग गई। और छल कबड्डी की तर्ज पर व्यंग्य लीला का खेल शुरु हो गया।

यह भी हम भूल गए, कि व्यंग्य को उपहास का मुखौटा नहीं पहनाया जा सकता, इससे व्यंग्य लेखन ही हास्यपद हो जाएगा। गाली गलौज को जबानदराजी का जामा पहनाने वाले यह भी भूल गए। कि गाली भी तमीज के साथ दी जाती है। और इससे भाषा अपना नैसर्गिक गुण खो देती है।

व्यंग लेखन की पीढ़ियों में चल रहे द्वंद की आपाधापी से हमें उबरना ही होगा। अपना उत्तरदायित्व समझना होगा। आज जब व्यंग्य की तीन पीढ़ियां सामने हैं, तो उनके बीच समझ विकसित करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है।

कुछ ही पहले जो हाशिए पर थे, वह आज केंद्र में है इस सफलता से हास्य व्यंग के रचनाकारों का अहंकार नहीं बढ़ना चाहिए, इससे उनका उत्तरदायित्व बढ़ जाता है क्योंकि आज जब वह चकाचौंध के केंद्र में है। हजारों निगाहें उन पर टिकी हुई है। उन्हें ना केवल दो टुक बेलौस रचनाएं करनी होंगी। सोशल मीडिया के व्यामोह से भी बचना होगा।

श्री अनूप श्रीवास्तव - सीपी-5, पत्रकार कालोनी, अलीगंज, लखनऊ - मो. 9335276946

कविता - मन का दीप - श्री सदानंद आंबेकर

बाहर है जगमग उजियारा
अंतस में छाया तम घोर,
आओ मन का दीप जलाकर
चलो नई सुबहा की ओर।

चढ़ विकास की उंची सीढ़ी
जीवन को इतना विकसाया,
है विनाश अंधे विकास में
अंतर कोई समझ न पाया,

अपने सुख के हित में हमने
नदियां रोकी जंगल छांटे,
प्रकृति के निश्छल जीवन के
पथ में बोये सबने कांटे,

छोड़ी अपनी देव संस्कृति
पश्चिम को स्वीकार किया,
निर्मल निश्छल जीवन त्यागा
असुरत्व अंगीकार किया,

उजला बाना अच्छी बोली
किंतु सोच तो छोटी है,
ऊंच नीच निज स्वार्थ के लिये
सबकी करनी खोटी है,

आया है यह दीप पर्व
इसमें ऐसा कुछ कर पायें,
आत्मदीप बन उजियारा दें
जग प्रकाश से भर जायें,

माटी की इस दीपमाल से
द्वार भले शोभा पाये
पर अपना सर्वस्व गलाकर
जीवन सार्थक कर जायें,

खुद बदलें तो जग बदलेगा
नवनिर्माण की होगी भोर
आओ मन का दीप जलाकर
चलो नई सुबहा की ओर।।

श्री सदानंद आंबेकर, भोपाल - मध्यप्रदेश

कविता - रोशनी की सुरुवात है - श्री श्याम खापर्डे

दिये की लौ को
कुछ देर यूं ही जलने दो
स्याह अंधेरे को
कुछ देर आंख यूं ही मलने दो
रोशनी बादलों में
छुपी हुई है कहीं
यह रात का आखिरी प्रहर है
कुछ देर यूं ही टलने दो

यह रात आंसूओं से भीगी भीगी है
सहर के इंतजार में जागी जागी है
अंतिम प्रहर और सहर का अटूट प्रेम
जैसे सीने में आग लागी लागी है

रात के सीने में कितने छेद हैं
उनमें छिपे कितने भेद हैं
मुखौटे लगाकर घूमते षड्यंत्रकारी
अंदर से काले, ऊपर से सफेद हैं

रात धीरे धीरे ढल रही है
नयी सुबह की आस पल रही है
तम का साम्राज्य खतरे में है
टिमटिमाते दिये की लौ जल रही है

नये जीवन का यह सूत्रपात है
दंभी तम के लिए आघात है
अब घर घर जलेंगे
छोटे छोटे दिये
रोशनी की हर दिल में
यह सुरुवात है /

श्री श्याम खापर्डे - भिलाई जिला दुर्ग छत्तीसगढ़

व्यंग्य - सपने में परसाई - श्री राजशेखर चौबे

अगस्त का महीना परसाई जी की याद का होता है। इस वर्ष (2023) का दूसरे सावन वाला अगस्त माह विशेष है। हम सभी व्यंग्यकार शताब्दी वर्ष के बहाने बिसराए जा चुके हरिशंकर परसाई जी को याद करने में लगे हुए हैं। परसाई जी ने हम साहित्यकारों को एक टास्क दे दिया है। अचानक परसाई जी मेरे सपने में आ गए और बोले - उठो, उठो। कुछ तो लिखो, कुछ अच्छा लिखो।

इतने बड़े लिक्खाड़ के सामने मेरी बोलती बंद थी। मैं पूरी तरह जाग गया था फिर भी सोने की एक्टिंग करता रहा।

परसाई - जो सो रहा है उसे जगाया जा सकता है परंतु जो सोने की एक्टिंग कर रहा है उसे जगाया नहीं जा सकता।

मैं डर गया मुझे लगा कि वे अंतर्यामी है। मैं तुरंत उठ गया और उनकी टूटी टांग के चरण स्पर्श किए। उनकी टांग ही नहीं टूटी थी बल्कि पूरा शरीर जर्जर प्रतीत हो रहा था। वे सौ बरस के ही लग रहे थे।

मैं - क्या आज देश भी सोने का नाटक कर रहा है ?

परसाई - नहीं सोने का नाटक व्यंग्यकार कर रहे हैं। मैं किस-किस को जगाऊं। आजकल मुद्दों की नहीं फेक न्यूज़ की चर्चा होती है।

मैं - नहीं सर। आज भी एक से बढ़कर एक समर्थ व्यंग्यकार हैं और वे लिख भी रहे हैं। उन्हें सैकडों लाइक और कमेंट मिलते हैं।

परसाई - कहां, फेसबुक पर।

मुझे आश्चर्य हुआ मैंने कहा आप फेसबुक व्हाट्सएप आदि के बारे में जानते हैं।

परसाई - स्वर्ग में सब सुविधा है पर व्यंग्य के विषय नहीं हैं। फिर भी मुझे लगता है कि काश आज मैं इंडिया में होता।

मैं (डरकर) - सर इंडिया नहीं भारत बोलिए अन्यथा मेरे यहां ई डी, सी बी आई आ जाएगी। आप तो स्वर्ग में बैठकर मजे लेंगे।

परसाई - मैं न पहले डरा न अभी होता तो डरता। वैसे डरने वाले को व्यंग्य लिखना ही नहीं चाहिए। क्यों क्या ख्याल है? उन्होंने व्यंग्यकारों की दुखती रग पर उंगली रख दी थी।

मैंने बचाव की मुद्रा अख़्तियार कर ली।

मैं - आज अधिकतर लोग डरे हुए हैं। खैर आप यह बताइए आपने ऐसा क्यों कहा कि काश आज आप भारत में होते। परसाई (हंस कर) आप भी इंडिया से भारत पर आ गए। यह कोई पूछने वाली बात नहीं

है। आज जितनी भी विसंगतियां समाज और देश में है उतनी कभी भी नहीं रही। यह आप लोगों के लिए स्वर्णिम अवसर है। इस मौके पर मैं भरपूर और जरूर लिखता और शरद भी पूरी शिद्दत से लिखते।

मैं - आज हम व्यंग्यकार क्यों लिख नहीं पा रहे हैं और विरोध लोकगायकों, कवियों, कार्टूनिस्टों एवं एक्टिविस्टों द्वारा ही किया जा रहा है। ऐसा क्यों?

परसाई - इसके लिए आप लोगों को अपने गिरेबां में झांकना चाहिए। आप लोगों ने अपने गोल पोस्ट बदल दिए हैं। आगे आप समझदार हैं।

मैं - हम लोग अभी भी आपको शिद्दत से याद करते हैं। पूरे देश में आपका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जाएगा। आपके स्तुतिगान में कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता। क्या आप इससे प्रसन्न नहीं होते?

परसाई - मैं इससे दुखी रहता हूं कि ऐसे ऐसे लोग मेरी पूजा कर रहे हैं जो सत्ता की भी अर्चना कर रहे हैं। उन्होंने तल्ख़ लहज़े में कहा - मेरे शब्दों में कहूं तो सत्ता की दलाली कर रहे हैं।

मैं (वातावरण को हल्का करने के लिए)- अपने "इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर" लिखी थी लेकिन संयोग देखिए आपके सौवें जन्मदिन पर चंद्रयान -3 चांद पर सकुशल उतरने वाला है। यह सरकार अच्छा काम कर रही है।

परसाई (हंसकर)- एक दल ने "सदाचार का तावीज़" पहन रखा है और जो भी भ्रष्ट उनके दल में शामिल होता है उसे भी यह तावीज़ पहना दिया जाता है। यह तावीज़ केंद्रीय एजेंसियों से उनकी रक्षा करता है।

मैंने भी उनकी हां में हां मिलाई। आपने तो पहले ही लिख दिया था "कर कमल हो गए"।

परसाई - आपने मेरे मुंह की बात छीन ली। अब कर लोटस हो जाते हैं और वहां जाकर लेट जाते हैं।

मैं - आपने लिखा है स्वतंत्रता दिवस भीगता है और गणतंत्र दिवस ठिठुरता है। इस स्वतंत्रता दिवस पर घोषणा हुई है कि देश उनके तीसरे टर्म में तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

परसाई - देश भले ही तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाए। क्या गरीब का भला होगा ? देश को आज गांधी की जरूरत है लेकिन गोडसे को ढूंढा जा रहा है। देश धीरे-धीरे 2047 की ओर नहीं 1947 की ओर बढ़ रहा है। मैंने पहले ही लिखा है - "दंगे से अच्छा गृह उद्योग इस देश में दूसरा है ही नहीं"। यह गृह उद्योग अब काफी फल फूल रहा है। हमारा गणतंत्र लगातार सिकुड़ रहा है। आज मैं होता तो ठिठुरता हुआ गणतंत्र नहीं सिकुड़ता हुआ गणतंत्र लिखता।

मैं - क्या आप निराश हैं?

परसाई - नहीं बिल्कुल नहीं। हाँ मुझे व्यंग्यकारों से कोई उम्मीद नहीं है परंतु देश की जनता पर पूरा भरोसा है कि वह सही समय पर सही फैसला लेगी। इतना कहकर परसाई जी अंतर्ध्यान हो गए। मुझे लगा कि उनका व्यक्तित्व कितना विशाल है और हम व्यंग्यकार उनके सामने कितने छोटे हैं।

श्री राजशेखर चौबे - रायपुर

कहानी - स्वर्गलोक में चुनाव - सौ. उज्ज्वला केळकर

मूल मराठी कथा - स्वर्गलोंकात इलेक्शन

हिन्दी भावानुवाद - श्री भगवनदास वैद्य 'प्रखर'

स्वर्गलोक में सुख का सागर लहरा रहा था। इस सुख की बाढ़ में सारे देव तैर रहे थे। चारो दिशाओं मे आनंद ही आनंद था। इसलिए देव अब उस खुशी से ऊब चुके थे। कहीं कोई चिंता नहीं, दु:ख नहीं, वेदना नहीं, कही चहलपहल, हलचल कुछ नहीं। चित्तवेधक, चित्तथरारक ऐसी कोई घटना स्वर्गभूमीं मे नहीं घट रही थी। संगीत, नृत्य, अमृतपान, अमृतपान, नृत्य, संगीत घुमाफिराकर वहीं आतें। इसमें थोड़ा बदलाव मतलब अमृतपान की जगह सुरापान भीं होता था।

श्री भगवनदास वैद्य 'प्रखर'

पहले ठीक था। मर्त्यलोग के मानवो में से कोई इंद्र पद के लिए तपस्या करता। फिर उसकी तपस्या में विघ्न कैसे ड़ाला जाए इसके लिए इंद्र बाकी देवगणों के साथ विचार विमर्श करता। देवगण अपनी बुद्दी को सान देते। कट-कारस्थान किए जाते। पूरा स्वर्ग लोक हिल जाता। किसी रंभा मेनका का चयन होता। तप करनेवाले साधक का विनयभंग... आय मीन तपोभंग किया जाता। जिसके ऊपर तपोभंग की जिम्मेदारी सौंपी जाती वह अपने काम में विजयी होकर आ जाती। स्वर्गलोक में आनंद की लहरे उमड पडती। पहले मनको होनेवाली चिंता, डर आदि भावनाओं की पार्श्वभूमी पर उस आनंद की लज्जत और ही बढ़ जाती। पर ऐसा कुछ हुआ नहीं था। मृत्यूलोग के मानव पाखंडी हो गए थे। देवदेवता, देव लोग इन बातों पर से उनका विश्वास उड़ गया था। उनका आस्तित्व तक मानने को वे तैयार नहीं थे। फिर क्यूं तपसाधना जैसे कष्ट उठाकर इंद्रपद हासिल करनेकी सोचे? कोई तपस्या नहीं करता था। तो इंद्र को भी छलकपट, कारस्थान करनेकी नौबत नहीं आती थी। स्वाभाविक है इंद्रकी बुद्धीको जंग लग चुकी थी। सारा सुख अरूचिकर, फीका लगने लगा था। नौशिया आ गया था।

देवपत्नीयोंकी स्थिती भी इससे अलग नहीं थी। आजकल भूलोकपर किसी सती सावित्री ने जनम नहीं लिया था। वटवृक्षके फेरे लगानेके नाटक सिर्फ लोगोंकी आँखमें धूल झोंकने के लिए किए जाते थे। फेरे लगाते वक्त वे प्रार्थना करती, 'इस जनममें जितना भुगत रही हूँ, काफी है। फिरसे उनका संग नहीं चाहिए। अगले जनममें भी यही पती... नहीं चाहिए भैया। 'ऐसी अवस्थामें किसी सती का सत्वहरण करने के लिए सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती को ब्रह्मा-विष्णू-महेश को तकाना लगाने का या झकझक करने का सवाल ही नहीं पैदा होता था। इसलिए इस अघाडी पर कोई खलबली या हलचल नहीं थी। चारो ओर सुख और आनंद। इस सुखके कारण देव बोअर हो गए थे। इस बोअरडमपर क्या इलाज इस बारेमें चर्चा शुरू

थी। चलो इसी बहाने सुखकी बाढ़ पर फैली आनंद की परत थोड़ी इधर उधर हो रही थी। बस इतनाही। उपाय नहीं मिल रहा था।

स्वर्ग का वातावरण चैतन्यमयी कैसे बनाया जाए इसपर चर्चा करते करते किसीने सुझाया, 'नारद त्रिलोकगामी है, उन्हे इसपर उपाय सूझानेके लिए कहा जाए। नारद अभी अभी भूलोककी सफ़र करके आ गए थे। कोई पौराणिक नाटक उस समय चल रहा था। पुरानी कथाको नया आयाम देनेवाला। नारदकी एंट्री आ गई तब भूमिका करनेवाला नट बेसुध था। शायद सुरापान जादा हो गया होगा।

नाटक कंपनी को मदद करने की सदिच्छासे नारद खुद रंगभूमीपर अवतीर्ण हो गए। पर लेखकव्दारा लिखे संवाद न बोलकर खुद के संवाद बोलने लगे। तो प्रेक्षकोने प्याज, आलू, अंडे फेंके। पहला अंडा लेखकने फेंका। इस मार से नारद थोडे घायल हो गए। अपनी जख्मोंपर अश्विनीकुमारसे मरहम लगवाकर वह अपने शयनकक्ष में विश्राम कर रहे थे। नारद अविरत संचारी और अब विश्राम कर रहे? कलयुगकी महिमा और क्या? पर नारदकी यह स्थिती देखकर कुछ लोगोंको संतोष भी हुआ। "अच्छा सबक मिला" किसी ने कहा। "हर वक्त झगडे लगाता फिरता है। " किसीको नारद से ईर्ष्या हो गई क्योंकि इतना चित्तथरारक अनुभव नारद ने लिया। देवगणों को दु:ख इसलिए हुआ कि वह विहंगम दृष्य देखने के लिए वे उपस्थित नहीं थे। नारद ठीक हो गए। तब इंद्रने उन्हें चर्चाके लिए बुलाया। नारदने इपाय सुझाया। स्वर्गलोक में खलबली मचानेके लिए 'स्वर्गभूमी' नामका समाचारपत्र शुरू किया जाए। भूलोक में पहले अमृतपानके वक्त समाचारपत्र न हो तो वहाँके लोग अमृत का लज्जत नहीं उठा सकते।

"क्या! वहाँ भी आजकल अमृत मिलने लगा है?" इंद्रने आश्चर्यसे पूछा। "हाँ, पर वे उसे चाय कहते है और चायके एक एक घूँटके साथ दुनियाभरकी खबरोंका एके एक एक घूँट निगलते है। इन चीजोंसे उनके जीवनमें खलबली मच जाती हैं। "

सब देवोंकी अनुमति से 'स्वर्गभूमी' नामका समाचारपत्र प्रकाशित करना तय हो गया। संपादनकी जिम्मेदारी नारदने खुशी से स्वीकार की।

'आज विष्णूलोक में रंभाका दिलखेचक नृत्य।

'ब्रह्मलोक में गंधर्व का गायन।'

इस तरहकी खबरें 'स्वर्गभूमी' में प्रकाशित होने कगी। पर धीरे धीरे देवगणोंके ध्यानमें आने लगा कि खबरोंमे कोई बदलाव नहीं है। नाम और स्थल बदल कर वहीं खबरे बार बार छप रही है। रंभाका नृत्य परसों विष्णूलोकमें, कल कैलाशपर तो आज इंद्रके दरबारमें। उसीतरह दूसरी ओर उर्वशी का नृत्य। कभी कभार 'लक्ष्मी पार्वती का कड़ाकेका झगड़ा' या 'सौंदर्यस्पर्धामें पक्षपात का मेनकाका आरोप। ' ऐसी कुछ खबरें पढ़नेको मिलती। थोडे समयके लिए उसपर बातें होती। बस इतनाही। स्वर्गलोकके जीवनमें 'स्वर्गभूमी' के कारण जादा कुछ बदलाव नहीं आता था। अब चित्तवेधक, या चित्तथरारक खबरें कैसे दी जाए या उनका निर्माण कैसे किया जाए इसका प्रशिक्षण लेनेके लिए नारदको किसी वृत्तपत्रके कार्यालय में भेजनेकी बात तय हो गई। प्रशिक्षणके दौरान वहाँके लोगोंके नाविन्यपूर्ण, नवरसमय ज़िंदगीको देखकर

उसका अहवाल तैयार करनेको भी कहा गया। नारद हमेशा पदयात्रा करते थे पर उन्होंने जाहीर किया कि वे इस बार इंद्रके विमानसे जाएँगे। आफ्टर ऑल यह स्वर्गभूमीकीअस्मिताका, संपादक पदके प्रेस्टीजका सवाल था। लोग जान जाएँगे तो क्या कहेंगे! 'स्वर्गभूमी' का संपादक और पैदल! नारदने इंद्र के विमानसे जाने का तय किया। पर उस विमानका लंबे समय तक उपयोग न किया जानेके कारण उसकी मशीनरीपर जंग लगी थी। विश्वकर्माने मरम्मत की।

"इससे कम समयमें और कम खर्चे में नया विमान तैयार हो जाता। " विश्वकर्माने कहा। सभी देवोंकी शुभेच्छा और समर्थन लेकर, नारद भूलोक आ गए।

नारद जब पृथ्वीपर अवतीर्ण हुए तब 'जनवाणी' वृत्तपत्र ने 'वार्ताहर चाहिए' ऐसा विज्ञापन दिया था। नारद इंद्रका सिफारिशपत्र लेकर कार्यालय पहुँचे। नीचे 'इंद्र' ऐसे हस्ताक्षर देखकर यह इंद्रकुमार गुजरालक सिफारिशपत्र होगा यह सोचकर और झंझट पैदा न हो जाए इस विचारसे 'जनवाणी' के मालिकने नारद को तुरंत अपॉईंटमेंट लेटर दे दिया। नारद वार्ताहर के पदपर हाजिर हो गए। भारतवर्षमें वह समय बडे ही गहमागहमी का था। सर्वत्र लोकसभाके और कहीं कहीं विधानसभाके चुनावोंकी घोषणा हो चुकी थी। उम्मीदवारोंके आरोप प्रत्यारोप चरण सीमातक पहुँच चुके थे। सामान्य जनताके पल्लूमें या कुर्तेमें अश्वासनोंके नजराने पड़ रहे थे। हर उम्मेदवार अपने किए या ना किए हुए कामकी टिमकी - टिमकी क्या डूम बजा रहा था। पूरी भारतभूमी में सर्वत्र धांधली, खलबली या तूफान मच गया था। नारदको वातावरण सेन्सेशनल बनानेका रहस्य मिल गया। उन्होंने चुटकी बजाते हुए कहा, "नारायण... नारायण..."

यह सुनते ही कचहरी के बाहर स्टूल पर बैठे बैठे उँघनेवाला नारयण सिपाही हडबड़ाकर जग गया और अंदर की ओर आया। नारद को अपनी भूल का अहसास हो गया। 'कुछ नहीं, तुम जाओ' कहकर नारदने उसे वापस भेजा। इस नये साहबने खालीपीली नींद खराब कर दी ऐसा कहकर चडफड़ाते हुए वह फिर बाहर आकर, स्टूलपर बैठे उँघने लगा।

इलेक्शन - स्वर्गमें चुनाव - स्वर्गका वातावरण सेन्सेशनल बनानेका उपाय नारदको मिल गया था। नारद खुद इतने उद्दिपित हो गए थे कि उन्हें यहाँ की नौकरीकी कालावधी समाप्त होने तक एक महिना रूकनेका भी सब्र नहीं निकला। उन्होंने अपना प्रतिवेदन इंद्रको भेज दिया।

"स्वर्गमें चैतन्य निर्माण करना हो, मुरदनी को नष्ट करना हो तो चुनावको कोई पर्याय नहीं। स्वर्गमें लोकशाही आनी चाहिए। इंद्र और उसका मंत्रीमंडल चुनावसे बनना चाहिए। युगयुगसे इंद्रही देवोंका राजा बना बैठा है। देवगणोंने अब अधिपति वोट देकर चुनना चाहिए। "

स्वर्गका वातावरण चैतन्यमयी हो ऐसा इंद्रको लगता था जरूर पर इसके बदलेमें वह अपने इंद्रपद को दाँवपर लगाना नहीं चाहता था। इसलिए नारदका प्रतिवेदन उसने दबाकर रखा।

भारत में चुनाव समाप्त हो गए। नतीजे निकले। अब इस नए वार्ताहरकी 'जनवाणी' को ज़रुरत नहीं थी। जनता अपने नित्य क्रियाकालायोमें इतनी व्यस्त हो गई की अपनी 'वाणी' को भूल बैठी। नारद 'जनवाणी'

से बाहर आकर वापस स्वर्ग में दाखिल हो गए। उनका मूल हेतू सफल हो गया था। नारद जब स्वर्गलोक पहुँचे तब इंद्रका दरबार लगा हुआ था। नारदने उनके व्दारा भेजे प्रतिवेदन बारेमें पूछा।

"मुझे वह उतना स्वीकाराहे नहीं लगा।" इंद्रने कहा। बाकी देवोंको उसके बारेमें जानकारी नहीं थी। उन्होंने नारदका प्रतिवेदन देखनेकी माँग की। इंद्रने टालमटोल करनेकी कोशिश की पर देवगणोंके दबाव के आगे उसका कुछ चल न सका। उसे प्रतिवेदन जाहीर करना पड़ा। प्रतिवेदनमें सूचना की गई थी कि स्वर्गमें लोकशाही मतलब देवशाही आनी चाहिए और इंद्रपद और उसका मंत्रीमंडल चुनावव्दारा निश्चित किया जाए। सबने तालियाँ बजाकर इस सूचनाका स्वागत किया। कुछ दोवोने तो अत्यानंदसे नारदपर पुष्पवृष्टी की। देवोंको वोट देनेकी आदत नहीं। यहाँ कभी चुनाव हुए ही नहीं आदि कारण इंद्रने दिए। पर कोई सुननेकी स्थितिमें नहीं था। खुले वातावरणमें निष्पक्ष चुनाव कैसे ले, आचारसंहिताका क्या मतलब है? वह कैसे लागू की जाती है? इसके प्रशिक्षणके लिए शुक और सनकादिक को शेषन के पास भेजा जाय ये तय हो गया। ज़रुरत पडे तो चुनाव के सदस्य शेषन को स्वर्गमें लानेके लिए विमान भेजेनेकी तैयारी देवोने की। स्वर्गमें चुनाव जाहिर हो गए।

ब्रहमा, विष्णू, महेश इन त्रिदेवोन अपनी उम्मीदवारी तुरन्त जाहिर की। 'नाग' यह चुनावी चिन्ह हर और हरी दोनोंको चाहिए था। हरी याने विष्णू शेषशायी तो हर गलेमें नाग ड़ालनेवाला नागनाथ। कोई पीछे हटनेको तैयार नहीं। तब चुनाव आयोगने 'नाग' चिन्ह निरस्त किया। तब हरीने गरूड और हरने नंदी चिन्ह ले लिया।

अश्विनीकुमार जुडवा भाई। वे अपने खरल-बट्टा इस चिन्ह के साथ चुनावके आखाडेमें उतर गए। एक ही जगहके लिए खडे रहकर जैसे वे एकसाथ देवोंके आरोग्य का जतन करते है वैसे ही इंद्रपदका जतन करके देवोंका राज्य सुदृढ़ बनाएंगे ऐसा कहने लगे। पर एकही जगहके लिए दो लोग कैसे चुनाव लडेंगे यह कैसे हो सकता? इसके बारेमें क्या निर्णय किया जाय यह निर्वाचन अधिकारियोंकी समझमें नहीं आ रहा था। उन्होंने शेषनसे राय माँगी। एक पद के लिए दोनों संयुक्त रूपसे अर्जी नहीं भर सकते ऐसा शेषनने नि:संदिग्ध रूपसे कहा। अब दोनो एक दुसरेको अर्जी न भरनेके लिए मनाने लगे। पर किसीने किसीकी नहीं सुनी और दोनो भाई चुनावी आखाडेमें एक दूसरेके विरूद्ध खडे रहे। आखिर बडे भाईको खरल और छोटेको बट्टा चिन्ह मिला।

चुनावके लिए अर्जी भरनेकी धूमधाम शुरू थी। बीचमें नारद एक बार विष्णू लोक गए थे। विष्णूदेव गरूडपर सवार होकर कहीं बाहर गए थे। लक्ष्मीदेवी अकेली थी। बातें करते करते नारदने उन्हें भारतकी और पूरे विश्वमें चल रही स्त्री मुक्ती आंदोलन की जानकारी दी। भारतमें कई साल 'इंदिरा' नाम की स्त्रीने कुशलतासे और कूटनीतीसे राज्य शासन कैसे सम्हाला था और चैकडियाँ भरनेवाले राजनीतीज्ञोंको और उनकी महत्वाकांक्षा को कैसे काबूमें रखा था इसका मन:पूत और दिलचस्प वर्णन नारदने किया। भारतके ईर्दगीर्द के राज्योमें जैसे पाकिस्तान, श्रीलंका, बांगलादेश आदि देशोमें स्त्रीयोंके हाथो पूरी सत्ता है इसका 'चक्षुर्वैसत्यम' वर्णन नारदने किया। यह सब सुनते सुनते लक्ष्मीदेवीके मनमें इच्छा जागृत होने लगी।

"पक्का तय हुआ! लक्ष्मीदेवी बोली।"

"क्या?"

"मैं चुनाव लडुंगी। "

"ऐसा क्यों कर रही है आप!" नारद प्रार्थना के स्वरमें बोले!

"आपके पतिदेव भगवान विष्णू चुनाव लड रहे है नां?"

"होंगे, मैं उनके खिलाफ खडी रहुँगी। कैसी यह हमारि ज़िंदगी! युगोयुगोंसे हम बेगारी करते आए हैं! देव घूमेंगे, फिरेंगे, मजे लूटेंगे और मै बेचारी उनके पैर दबाते रहुँगी। मुझसे वह पार्वती कितनी नसीबवाली"

"वो कैसे?"

"शंकरदेव उनके साथ सारिपाट खेलते है। उनका मनोरंजन करते है। "

"बीचबीचमें कोन जीता इसपर लडते हैं, झगड़ा करते हैं। एक दूसरेसे बात नहीं करते। "

"पर बादमें नंदीपर बिथाकर या विमानमें बिठाकर उन्हें घुमा लाते है। नहीं तो मेरा नसीब। "

ऐसा कहते हुए लक्ष्मीदेवीने अपना जरतारी पल्लू (सिलवर न पडे ऐंसे) अपनी आँखोंको लगा लिया।

"मैं लक्ष्मी, मैं धनश्री, मैं उनके पैरोंपर धनराशी ड़ालती हूँ, उसका उपयोग करके वह जगतका भरणपोषण करते है, पालनहार नामसे शेखी बधारते हैं उसकी उपेक्षा मेरे धनके उपयोगसें मैं ही पालनकर्ती क्यों न बनू?"

पर इस प्रश्नका उत्तर देने के लिए नारद वहाँ थे ही नहीं। लक्ष्मीदेवीने विष्णूदेव के घर आनेसे पहलेही अपनी अर्जी दाखिल की। स्त्री देवता हूँ अत: पार्वती और सरस्वतीका समर्थन जरुर मिलेगा ऐसा उनका विश्वास था। चुनावकी बातको लेकर नारदने फिरसे पतीपत्नीमें झगड़ा कराया ऐसा स्वर्गमें सब लोग बोलने लगे। पर यह तो उनकी पुरानी आदत थी। यम, कुबेर जैसे और महत्त्वपूर्ण उम्मीदवार चुनावके आखाडेमें थे।

यम ने कहा, "पृथ्वीपर सजीव सृष्टीमें मेरे कारण समतोल बना रहता है। नहीं तो उन्होंने स्वर्गलोकपर कबका कब्जा किया होता। स्वर्गपर अतिक्रमण न होनेमें मेरी महत्त्वपूर्ण भूमिका है अत: मैं ही इंद्रपदका सच्चा उत्तराधिकारी हूँ।

कुबेर का कहना था कि स्वर्ग में जो सुख समृद्धी दिखाई देती है वह मेरे कारण है। क्योंकि देवोंका खजाना में सम्हालता हूँ। इसलिए स्वर्गमें विकास कार्यके लिए जरुरी धन उपलब्ध होता है। इंद्रपद जैसा अहम पद मुझे मिल जाए तो विकासकी गति बढ़ सकती है।

भारत में, जैसे आरक्षण होता है, वैसे कुछ क्षेत्र हमारे लिए आरक्षित रखे ऐसी माँग यक्ष, किन्नर और अप्सराऔंने की। चुनावके बाद नेता के चयन के वक्त और इंद्रपद पाते वक्त उनका समर्थन पाना आसान होगा इस विचारसे कुछ उम्मीदवारोने इंद्रका विरोध होते हुए भी उनकी माँगसे सहमती जताई।

स्वर्गलोक में चुनाव लेकर देवशाही शासनपद्धती शुरु करनेकी खबर सुरवरोने गुप्त रखनेका प्रयास किया फिर भी पता नहीं कैसे पाताललोकके एक असुरको उसकी जानकारी मिली। चुनावकी भनक पडतेही उसने पाताल में और सप्तनर्क में खुब सारे लोगोंसे मुलाकात की। अगर वह सत्तामें आ गए तो सभी पापात्माओंकी नरकयातनाओं से बिना शर्त छुट्टी करेगा और उन्हें सुधरनेका अवसर देगा ऐसा उसने अभिवचन दिया। खूब समर्थकोंका समर्थन लेकर और कुछ लोगोंको साथ लेकर वह असूर बडे बाजेगाजेके साथ, रोबमें, उत्साहमें अर्जी भरनेके लिए आ गया। पर उम्मीदवारी अर्जी भरने का समय समाप्त हो गया ऐसा कहकर उसकी अर्जी अस्वीकृत की गई। “कैसे चुनाव संपन्न होते हैं मैं देखता हूँ। ” ऐसे धमकाकर अपने कार्यकर्ताओं के साथ वह वहाँसे निकल पड़ा।

नारद ने ‘स्वर्गभूमी’ में से हर उम्मीदवाला और उसके कार्यकर्तृत्व का परिचय क्रमश: देना शुरू किया। इंद्रको लगा नारद विष्णू के बारेमे पक्षपार करेगा। उसक कर्तृत्व बढ़ाचढ़ाकर कहेगा। अत: उसने ‘इंद्रचाप’ नामका वृत्तपत्र निकालकर बाकी उम्मीदवारोंपर शरसंधान करना शुरू किया। उसके बाद ब्रह्मावर्त, कैलासवार्ता, रासगान, अमृतकुंभ ऐसे वृत्तपत्र विशिष्ठ उम्मीदवारके प्रचारके लिए एकके बाद एक निकलने लगे। पर उसमें वार्ता, गान, मधुधारा ऐसे कुछ नहीं होता था। उसमें सिर्फ एक दूसरे पर आर्प प्रत्यारोपोंका शाब्दिक युद्ध चलता था।

‘इंद्रचाप’ में इंद्रके प्रचारार्थ उसकी लोकोत्तर प्रतिमा रंगाते हुए कहा था, ‘इंद्र सहस्त्राक्ष होता है। इसलिए उसके कई नेत्र खुले होते हैं। अत: वह अधिक दक्षतासे प्रशासन सम्हाल सकता है।”

दूसरे दिन ‘तपोभूमि’ में उसका उत्तर छपा।

“सहस्त्र नेत्रोंसे इंद्रको जो नहीं देखना चाहिए वह जादा दिखता है। ये सहस्त्र अक्ष इंद्र किसी वरदान की तरह दिखाते फिरता है, असलमें वह शाप है। शरीरपर जैसे काढ़ फैलता है वैसे उसके शरीरपर आँखे फैली है। जिनको इच्छा है, ज़रुरत है जाननेकी वे जरूर पढे, अहिल्याख्यान या गौतमका शाप। अगले अंकसे हम क्रमश: छापेंगे। इंद्रके आँखोंकी कहानी उसमें आप पढ़ सकेंगे।”

‘स्वर्गभूमी’ छोड़कर बाकी सारे वृत्तपत्रोमें विष्णू के दशावतारोंकी और उस हर अवतारमें किए छलकपटकी पूरी ज़ानकारी आ गई। वैसे देवगणोंको सब मालुम था पर इस चरित्रकथामें कुछ रायडर्स या पहेलियाँ है यह उनकी समझमें नहीं आया था। भूतलके अनेक विद्वानोंने, विवेचकोने इन पहेलियोंको पहले ज़ान लिया। अर्थात उन्हेंभी पूरी ज़ानकारी नहीं थी।

उत्पत्ती, स्थिती, विलय ये काम युगोंयुगोंसे ब्रह्मा, विष्णू, महेश पर सौंपे गए थे। विलयका काम शिवशंकर अपने अनुयायी यमके व्दारा पूरा करते थे। एकदिन फॅक्ससे पृथ्वीकी वार्ता आ धमकी, ‘तेजी से ज़ानेवाले ट्रकके सामने एक भैंस आ गई। ड्रायवरने उसे बचाने के लिए ट्रक बायी ओर लिया। इससे भैंस

तो बच गई पर दो बकरियोंको प्राण गँवाने पडे। ' इस वार्ता के आधारपर 'स्वर्गभूमी' में खबर प्रसिद्ध हुई, 'यमदेवके भ्रष्ट्राचार की जाँचपड़ताल के लिए एक कमिशन नियुक्त किया जाए। इस संदर्भमें हमारे वार्ताहरने बताया है कि अगर यमदेवने एक भैंसके प्राण लिए तो उनके भैंसेने हडताल करनेकी धमकी दी है। अब पैदल चलकर पृथ्वीपर प्राण हरण करनेके लिए जाना असंभव है यह जानकर उसने भैंसे के आगे घुटने टेंके और भैंसको मारना स्थगित किया। उसके बदले दो बकरियोंके प्राण ले लिए। अपनी इस भूलके लिए वह अपने पदसे इस्तिफ़ा दे दें। उसी तरह अपना वोट देते वक्त मतदाता यह बात ध्यानमें रखें।'

'सुदर्शन' साप्ताहिक ने कहाँ कि शिवशंकरको बिलकुल वोट न दें। उन्होंने लिखा, 'शिवशंकर ठहरे भोले सांब। किसीने थोड़ी सराहना की तो तुरंत खुश होते है। अपने भक्तोंको वरदान देते वक्त उन्हें आगेपीछेकी कोई सोच नहीं रहती। उनका वरदहस्त पाक़र सभी सरज़ोर होते हैं। देवगणोंको, मनुष्यलोगोंको त्राही त्राही करके छोडते हैं। 'त्राहि माम् नारायण' ऐसा कहते हुए उन्हें विष्णूके पास भागना पडता है। देवगण हिरण्यकश्यपू, रावण, भस्मासूर इनको याद करें। शिवशंकर सत्ता में आ गए तो ऐसा फ़ुसफ़ुसा कारोबार चलता रहेगा और देवगणोंको त्राही त्राही कहते हुए फिरसे भागना पडेगा। आगे उन्होंने ऐसा भी लिखा था,

'शंकर ने गुंडोंको एक ओर अभय दिया तो दूसरी ओर सत्प्रवृत्त, सती, साध्वीयोंकी, सत्वशील भक्तोंकी ऐसी सत्वपरीक्षा ली की वे खुद भी उसमें उत्तीर्ण नहीं हो सकते थे। पुण्यशील महानंदाकों कितनी तकलीफ हुई वह एक बार याद कीजिए।'

उम्मीदवार के व्यक्तित्वके नए नए पहलू रोज अलग अलग समाचारपत्रमें प्रकाशित होने लगे। इलेक्शन डिक्लेअर हो गए और तुरंत आचारसंहिता जारी हो गई। इससे अप्सराओंका नृत्य, गंधर्वोका गायन, सुरापान इन सारी बातोंपर पाबंदी लग गई। जो देवगण चुनावमें खड़े नहीं थे वे पहले वृत्यगायन के कार्यक्रमों से ऊब चुके थे। पर अब वे कहने लगे कब चुनाव खत्म होंगे और आचारसंहिता हट जाएगी।

चुनाव का दिन आ गया। चुनाव खुले वातावरणमें हों, देवगणोंपर किसी बातका दबाव न आ जाए यह देखनेके लिए शेषनको यहाँ लानेके लिए विमान भेजा गया। पर भारतमेम हाल ही में एक लोकसभा और विधानसभा चुनावों का उनपर काफ़ी तनाव आ चुका था। अत: प्रकृती अस्वास्थ्य के कारण मैं वहाँ नहीं आ सकता इसलिए क्षमाप्रार्थी हूँ ऐसा उन्होंने कहाँ। इंद्रबन में व्ही.आय.पी. के लिए बनाए हुए महल में शेषन को रखकर उन्हें पूरी सुखसुविधाएँ दी जाय और उनके ईदगिर्द ऐसा मोहमयी धुंध निर्माण किया जाए की 'नि:पक्षपाती' यह शब्द भी वे भूल जाए। इंद्रका ऐसा इरादा था। पर शेषनके न आनेसे वह मिट्टी में मिल गया।

आखिर चुनाव हो गए। कुछ सेवक स्वर्ग के निर्वाचन अधिकारीयों की निगरानी में मतपेटीयाँ सुरक्षित रखने का काम कर रहे थे। इतने में शोर मचा, 'मतपेटियाँ चोरी हो गई, मतपेटियाँ चुराई गई। देवो ने जिसे धमकी दी थी वह असुर अपने कार्यकर्ताओं के साथ सेवक के भेसमें वहाँ आ गया था। उन्होंने हर मतपेटी को अग्नेयास्त्र बाँधकर, हिमालय की चोटी से, कश्मीर के नंदनवन में उन्हें फेंक दिया। नीचे गिरते ही अग्नेयास्त्र के कारण विस्फोट हो गया और मतपेटियाँ मतों सहित जल गई। भारतीय वृत्तपत्रों में दूसरे दिन बडे बडे शीर्षकों से समाचार प्रसिद्ध हुए। कश्मीर में दस अलग अलग स्थानोंपर बमविस्फ़ोट

हो गए। इसमें जो स्फ़ोटक इस्तेमाल किए थे वे पूराने युगों में प्रयोग में लाए जाते थे ऐसा इतिहास संशोधकों का मानना है। किसी भी अतिरेकी संगठन ने इसकी जिम्मेवारी नहीं ली है। वह स्वाभाविक था। मानवी नहीं अमानवी ऊग्रवादियों ने वह विस्फ़ोट कराया था। फ़िर से चुनाव आचारसंहिता किसी को भी नहीं चाहिए थी। स्वर्गमें जो है वही व्यवस्था कायम रखने की बात सर्वानुमति से तय की गई। पर उसके बाद लंबे समयतक देवगण चुनाव की और चुनाव के समय के तूफ़ानी वातावरण की यादें ताजा करते रहते थे।

सौ. उज्ज्वला केळकर - १७६/२ 'गायत्री' प्लॉट नं १२, वसंत दादा साखर कामगारभवनके पास सांगली - ४१६४१६ - मो. 9403310170, e-id - kelkar1234@gmail.com

कविता - मैं दीपक था - डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र'

मैं दीपक था किंतु जलाया
चिंगारी की तरह मुझे
इतना बहकाया है तुमने
छल लगती है सुबह मुझे ।

तुमने समझा हृदय खिलौना
खेल समझ कर छोड़ दिया
कभी देवता सा पूजा तो
कभी स्वप्न-सा तोड़ दिया ।

जन्म मृत्यु की आंख मिचौनी
और ना अब मुझसे खेलो
बहुत बहुत पीड़ा तन मन की
कुछ मैं ले लूं कुछ तुम झेलो।

डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र', जबलपुर मध्यप्रदेश

कविता - आई है दीपावली... - सुश्री योगिता चौरसिया 'प्रेमा'

आई है दीपावली, सदा बिखेरो प्रीत।
देकर के शुभ कामना, मिल गा प्रेमिल गीत ।।1!!

दीपमाल में ज्योति सज, करें जगत उजियार।
तम का घेरा दूर कर, दें प्रकाश शुचि सार ।।2!!

लक्ष्मी गणपति पूज कर, मना रहे त्योहार।
जग मग रोशन दीप को, वंदन बारंबार ।।3!!

भारत का त्योहार यह, है प्रकाश मय पर्व।
ज्योति प्रज्ज्वलित हिय करें, सुखद बने जन सर्व ।।4!!

सुखद-शुभद यह पर्व है, चारों तरफ प्रकाश।
आशा धारी ज्योति ही, तम का करती नाश ।।5!!

धर्म-कर्म करते चलें, मिलता शुभद सुलाभ।
दीनों के सब मर्म को, जाने वहीं अमिताभ ।।6!!

विष्णुप्रिया लक्ष्मी सदा, करिए पूजन नित्य।
इनके ही आशीष से, रोशन हिय आदित्य ।।7!!

गढ़ता चला कुम्हार जब, माटी सतत अनूप।
दिया बनाकर दे अकृति, ज्योति संग खिल रूप ।।8!!

रात अमावश पूजते, लक्ष्मी संग गणेश।
धन वैभव सुख शांति हो, दूर सदा सब क्लेश ।।9!!

विधि विधान से पूजिए, जीवन लक्ष्मी मात।
दान पुण्य करके सतत, मिले ईश सौगात ।।10!!

सुश्री योगिता चौरसिया 'प्रेमा' - मंडला (मप्र.)

लेख - भू देवी की आराधना का पर्व–दीवाली - सुश्री इन्दिरा किसलय

सृष्टि के आदि क्षण से अंधेरे उजाले का समर जारी है। जीत हार के फैसले से बेपरवाह मिट्टी के दीये का हौसला आज भी देखते ही बनता है। सचमुच जब पहला पहला दीप धरा पर उतरा होगा, सूरज ही नहीं चाँद भी कसमसाया होगा। कितनी मायूस हुई होगी अमा निशा। ये कौन हमें अणुकाया में चुनौती देने निकला है!

21 वीं सदी की उन्नत तकनीक के इलाके में मिट्टी का दीया, कविता या चित्र दीर्घा की परिधि में सिमटता हुआ सा दिखता है। पर यह मानवीय श्रम का, मन का उद्घोषक है। दीये की देह बेशक मिट्टी की है पर इसमें प्रकाश दिव्य सत्ता का है। ऋग्वेद और सामवेद की ऋचाओं का गान है।

भू देवी की आराधना का पर्व है यह। हड़प्पा मोहनजोदाड़ो से लेकर आज तक मृत्तिका मूर्तियां शक्ति एवं शिवता के संयोग की कथा कह रही हैं।

कथितव्य है कि दीप पर्व की प्रमुख आराध्या देवी लक्ष्मी को दैत्यराज बली ने अन्य देशों के साथ कैद कर रखा था। भगवान विष्णु ने वामनावतार धारण कर, तीन डग से धरती नापी और देवी लक्ष्मी को बली की कारा से मुक्त किया। इस तरह यह लक्ष्मी की रिहाई का उत्सव है। वर्तमान परिदृश्य भी ऐसा ही है। चन्द हाथों में सिमट गई है सारी संपदा। उसे मुक्त करने के लिये काश कोई वामन धरती पर आये। यह शास्त्रोक्त कथा भू देवी के साथ भी है। एक संदेश की गूँज उत्पन्न करती हुई कि धरती के सारे संसाधनों पर कुबेरों का नहीं हर धरतीपुत्र का हक है।

उलूकया उल्लू, देवी का वाहन है, जिसे गहन तमस में भी देख सकते की सामर्थ्य प्राप्त है। देवी अष्टदल-कमल पर भी आसीन होती हैं। समुद्र मंथन से जन्मी देवी को यूनानी गाॅडेस एफ्रोडाइट की तरह माना जाता है। उनके चार हाथ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, को परिभाषित करते हैं। शुभंकर गणेश एवं वाग्देवी उनके पार्श्व में स्थित होते हैं, इस आशय के साथ कि शुभता एवं ज्ञान के संयोग के बिना धन प्राप्त नहीं होता या धन सुधन नहीं कहलाता। देवी प्रसन्न नहीं होती।

बंगालियों के लिये यह 'कालीपूजा, है तो 'महावीर स्वामी का मोक्ष दिवस' जैनियों के लिये। सनातनी इसे राम की लंका विजय तथा पांडवों के वन से लौटने की तिथि कहते हैं। कामसूत्र में इसे "यक्षरात्रि" कहा गया है। "कार्तिक अमायां दीपमाला वर्णनम्-"-पुराण कुछ ऐसा वर्णन करते हैं।

धन नहीं तो गृहशोभा एवं अस्तित्व का सम्मान नहीं। "धनत्रयोदशी" दीवाली का पहला दिन इसी सूक्त का उद्गाता है। धन्वंतरि और यमराज को दीपदान करना होता है इस दिन। "रूप चौदस" दैहिक शोभा निखारने का दिन ताकि उत्सव पर न केवल मन वरन तन भी प्रफुल्लित रहे। गोवर्धन पूजा अन्नकूट एवं यम द्वितीया भी दिव्य संदेशवाहक हैं।

शास्त्रोक्त दीवाली सदा मनाई जाती है। भारतीय मानस उत्सवप्रिय है। पर मात्र परंपरा का संवहन ही इसका उद्देश्य नहीं होना चाहिए। दीपशिल्पी, श्रमिक, कारीगर, विपन्न कृषक, अशक्त जनों के घरों तक भी थोड़ा सा उजाला पहुँचे। प्रयास तो यही हो। विकराल महंगाई से त्रस्त जनता के मन में, धनपतियों के बेहिसाब उजालों और चकाचौंध के कोई मानी नहीं हैं।

अंधेरे और गाढ़े हो रहे हैं। मिट्टी का मासूम दीया चीनी लट्टुओं के सामने निरीह सिद्ध हो रहा है। जब तक कुबेरों और देश के अंतिम जन तक उजालों का पुल नहीं बनेगा। समृद्धि का आवागमन नहीं होगा। उजाले प्राणों में धारण करने होंगे। बुद्ध ने यूं ही नहीं कहा- "अप्प दीपो भव"। सौंदर्य शुभता एवं आलोक की त्रिवेणी प्रवाहित होगी तभी भूमंडल पर सच्ची दीवाली होगी।।

सुश्री इन्दिरा किसलय - नागपुर (महाराष्ट्र)

कविता - जीना है मुश्किल - श्री अशोक भांबुरे

आये तो आँसू खुशी के आये
पलक पे मोती ये मुस्कुराये

जीना है मुश्किल भरम तुम्हारा
आँखो से ऐनक जरा हटाये

सूरज की गर्मी से था परेशाँ
मिले तेरे गेसुओं के साये

गमों के काटों को यूँ न देखो
महक हवा की जीना सिखाये

डरो ना तुम यूँ काली घटा से
बारिश का पानी उसे भगाये

हैं आँसमाँ में जो चाँद तारे
सितारे देखे खुशी मनाये

जो लाडले थे घरो के अंदर
वही हुए हैं अभी पराये

श्री अशोक भांबुरे - धनकवडी, पुणे ४३ - मो. ९८२२८८२०२८ - ashokbhambure123@gmail.com

लघुकथा - अहिंसा - श्रीमति गौरी गाडेकर

तैयार होकर मैं पार्टी के लिए निकलनेवाली थी. रसोईघर की खिडकी बंद करने गई, तब अचानक एक तिलचट्टा उडता हुआ अंदर आ गया. मैंने उसे झाडू से फटकारा. वह मर गया, इसकी खातिरजमा करके मैं उसे कागज में लपेट कर पुडिया बांधने लगी. सोच रही थी, 'बेचारा! घर में आया, तब उसे कल्पना भी नहीं होगी कि दो मिनटों के बाद वह मौत का शिकार होनेवाला है. आखिर उसे भी तो अपनी जान प्यारी होगी. किसने दिया मुझे उसकी जान लेने का अधिकार?' हमेशा की तरह तब भी मैं अपराध बोध तले दब गई. लेकिन मैं भी हतबल थी. उसे 'सॉरी' कहके मैंने वह पुडिया कचरे के डिब्बे में फेंक दी.

पार्टी में मेरे पति ने मेरी पहचान उनके एक सहकर्मी से कर दी और वे किसी और से मिलने चले गए.

सहकारी ने तुरंत ही मुझसे पूछा, 'आप नॉनवेज खाती हो?' बाकी सब छोडके उनका यह पूछना मुझे अजीब-सा लगा. मेरा नकार सुनकर वे इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने मुझे 'जीवित जानवर को खाना कितना अमानुष है, उसमें कितना क्रौर्य है' वगैरह भाषण देना चालू किया.

'लेकिन नॉनवेज खानेवाले लोग जिंदा जानवर को उठाके थोडे ही मुंह में डालते हैं?'

वे तो सुनने को तैयार ही नहीं थे. 'हम लोग तो जमीन के नीचे उगी सब्जी भी नहीं खाते. क्योंकि उसके साथ जमीन के अंदर के कीडें भी आएंगे ना?'

'लेकिन वह सब्जी तो हम धोते है ना? फिर वे कीडे कैसे जाएंगे पेट में?'

'लेकिन बेचारे पानी में मर जाएंगे ना?'

'यह तो बताइए, सर. जमीन के उपर पैदा होनेवाली सब्जियां खाते हैं आप?'

'हां.'

'उनमें भी तो जान होती है, ना? सजीव ही हैं वे. सब्जी, फल ...'

'नहीं.......मेरा मतलब है, वे जिंदा लगते नहीं. कीडे तो हिलते हैं ना!'

वेटर स्टार्टर्स लेके आया. सहकारी ने उसे बहुत सारे सवाल पूछे और एक स्टार्टर के तीन-चार टुकडे लेके खाने का आनंद लेने लगे.

मुझे भास हुआ कि आसपास के सारे लोग पापकर्म कर रहे हैं और पुण्यवान सहकारी का चेहरा तेजोवलयांकित हुआ है.

'एक बात पूछूं, सर?'

'हां. जरूर.' स्टार्टर खाने के बाद मानो उनकी आवाज़ खुल गई थी.

'आप पेस्ट कंट्रोल करवाते हैं?' बहुत देर से यह विचार मेरा दिमाग खाएं जा रहा था.

'पेऽस्ट कंट्रोऽल?'

'हां. पेस्ट कंट्रोल. आप अपने घर में करवाते हैं ?'

'पेस्ट कंट्रोल...,' वे अवनधा निगल गए और फिर बोले, 'करते है. करना तो पडता ही है. दुनियादारी है ना.'

किसीसे मिलने के बहाने वे तुरंत वहां से चल पडे.

श्रीमती गौरी गाडेकर - 1/602,कैरव,जी.ई.लिंक्स,राम मंदिर रोड, गोरेगाव(पश्चिम),मुंबई 400104. मो. 9820206306.

कथा - व्यथा कथा एक पेंशनर की - डॉ कुंवर प्रेमिल

मैं आपको एक खुशखबरी सुनाऊं। मैं नौकरी से रिटायर्ड हो गया हूं और मैं बड़े मजे में हूं।

'ऐसा हो ही नहीं सकता'-आप कहेंगे और मैं आपको मुंह चिढ़ाता रह जाऊंगा।

आप यह भी कह सकते हैं - अजी कैसे जी?

और मैं कहूंगा - वह ऐसे जी। दफ्तर में आदमी काम के बोझ से घोड़ा, गधा, खच्चर सब बन जाता है।

रोज रोज 'जी हां', 'जी हजूरी'। तन कुर्सी पर होता है तो मन हरी, नीली, कई फाइलों में बंद हो जाता है जी।

'और ससुरी यह फाइलें कभी बंद हुई है क्या? ये फूलती जाती हैं। इनमें न जाने कौन-कौन से राज छुपे रहते हैं। आप इनसे कभी उब्रेंगे ही नहीं। तभी न दफ्तरों के बाबू और अफसर मुटियाये रहते हैं - जो है सो'।

'अजी बिस्तर पर रात बीबी के संग गुजराती है पर मन दफ्तर की फाइलों में बंद रहता है। बीबियां भी खुखियायी रहती हैं। इसलिए ना मैं कहता हूं कि मैं अब बड़े मजे में हूं और चादर ओढ़ कर सोता हूं।'

'मेरी दिनचर्या से केवल धर्मपत्नी जी खुश नहीं है! जब तब बड़बड़ाती रहती हैं। खामखां सर दर्द पैदा करती रहती है'।

अपने हाथ नचाकर कहती हैं-अजीब बेतुके हो जी। जो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हो जी। तनख्वाह की चौथाई इस निगोड़ी पेंशन से मुझे बड़ी टेंशन है। खुद तो लंबी तानकर सोते हो और महीने का बजट मेरे सिर पर थोप देते हो।

लाज शर्म सब बेच खाई है क्या?'

'नंगा धोएगा क्या और निचोड़ेगा क्या? खरीदने को ही कुछ नहीं है तो बेचूंगा क्या भागयवान!'

कहकर मैं बड़ी सी चादर ओढ़कर मंद मंद मुस्कुरा लेता हूँ।

पत्नी भिन्नाकर कहती है - घर का खर्च, तुम्हारा निगोड़ा अखबार, ऊपर से तुम्हारी मित्र मंडली। सबके सब यहां चाय ढकोसने चले आते हैं। उनकी बीबियां उन्हें चाय नहीं पिलाती है क्या? सुबह-सुबह मुंह उठाए यहां चले आते हैं जो है सो'।

'भैये, इन पत्नियों में एक बड़ी कमी है। वे इतनी व्यवहारिक बन जाती हैं कि सामाजिक नहीं रह जाती है। वह हंसती भी हैं तो परामर्श देती हुई सी। ना खुद खाती है ना हम गरीब पतियों को ही खाने देती हैं। खुदा ना खास्ता रोने लगी तो वर्तमान ही बिगाड़ देती है। भविष्य को भी आज कचरा बना देती हैं। ताने देती है, ताने खिलाती हैं, तानों के बिस्तर पर ही सुलाती हैं।'

मैंने अपनी अर्धांगिनी जी से कहा - देखो जी, बड़ी मुश्किल से मुझे यह नींद मयस्सर हुई है। चादर तान कर सोने दो। सोने में जो मजा है वह संसार की किसी भी वस्तु में नहीं है जी। मैं इस चादर को मैली होने से बचाता रहूँ यही क्या कम है जी?'

'इनकी एक अलग ही रामलीला है जी। रुपया-रुपया चिल्लाती हैं। जिस दिन पेंशन मिलती है बस उसी दिन उनके चेहरे पर मुस्कान खिलती है। अजी दिन में पत्नी जी नहीं सोने देती रात में चोर उचक्के।'

कहती हैं-खांसा खकारा करो। कोई घुस गया तो सब ले जाएगा, फिर इस मुई पेंशन से क्या-क्या खरीदोगे जी।'

'बस बस मुझे सोने दो जी - 'कहकर मैं लंबी तानकर सो जाता हूं। फिर नाक भी जल्दी बजने लगती है। यह इन्हें सहन नहीं होता। चादर खींच कर लोटा भर पानी डाल देती हैं। कोई सुनामी लहर मेरे ऊपर चढ़ गई हो मानकर मैं भाग खड़ा होता हूं।

एक रात सौभाग्यवती जी ने मुझे लगभग जगा दिया। बोली - 'बगल की पुलिया से चोर भाग रहे हैं और तुम हो कि घोड़े गधे बेचकर सो रहे हो। कोई घुस गया तो!'

मैंने कहा - मैडम, घर के सामने रिटायर्ड की नेम प्लेट पढ़कर ही चोर भाग खड़ा होगा। वह क्या जानता नहीं है कि रिटायर्ड आदमी के घर से उसे मिलेगा क्या? अपना समय तो व्यर्थ में बर्बाद करेगा नहीं। तुम भी ना, कभी-कभी तो ललिता पवार बन जाती हो---हां नहीं तो!'

वह तो मैं संभल गया नहीं तो वह मेरा मुंह नोच लेतीं।

मैंने कहा - तुम चैन की नींद सो जाओ, मैं बिस्तर पर पड़े पड़े ही घर की रखवाली कर लूंगा। संजय बनकर बिस्तर पर पड़े पड़े ही में चोरों के कुत्तों के, पड़ोसियों के हाल-चाल जान लेता हूं। सफेद चोर काले चोर मुझसे बच नहीं सकते हैं जो है सो।'

मैं अब आप सब पंचन को बताऊं, पुलिया से निकली चोर टुकड़ी को मोहल्ले के कुत्तों ने घेर लिया है। एक चोर उन कुत्तों के सामने बिस्किट डालकर पटा रहा है।

कुत्तों ने कहा है - रिश्वत दे रहे हो हमें क्या तुमने आदमी समझ रखा है?

दूसरे चोर ने हड्डियों भरा पैकेट निकला। एक बूढ़ा कुत्ता बोला - ऐसा कोई समझौता मत करना जिससे हमें बाद में पछताना पड़े। मोहल्ले का सवाल है नाक नहीं कटना चाहिए। कुत्तेपन पर कमीनेपन के गंदे छींटे नहीं पडना चाहिये।

चोर और कुत्ते दम साधे एकदम आमने-सामने खड़े थे। तभी बूढ़ा कुत्ता फिर बोला - सारे पैकेट्स हमारे हवाले करो तो समझौता हो सकता है।

मैं अपनी आंखों से खुला खेल फर्रुखाबादी देख रहा था।

पोटलियां खुल गई थी। कुत्ते पोटलियां लूट रहे थे। उधर चोर मोहल्ला लूट रहे थे। सुबह होने तक मोहल्ला पूरी तरह लुट चुका था।

मुझे खुशी हो रही थी। साले मोहल्ले वाले अपने आप को पता नहीं क्या समझते थे हां नहीं तो! मेरी बराबरी पर आ गए थे लुट लुटा के, ब्लो स्टैंडर्ड कहीं के।

मैंने पत्नी जी से कहा - देखा आपने पेंशनर होने का फायदा। पूरा मोहल्ला लुट गया और हम लोग सही सलामत रहे।

दूसरे दिन सुबह-सुबह बवाल मच गया। हर कोई चिल्ला रहा था, हाय लुट गए। कुत्ते चोरों से जा मिले थे। एक पड़ोसी हमसे गिलास उधार मांग रहा था, क्योंकि उसके सारे बर्तन ही चोर ले उड़े थे। कुछ लोग बाहर बतिया रहे थे - बेचारे रिटायर्ड मैन के पास होता ही क्या है जो चोर लूटते।

मीडिया और पुलिस वाले मोहल्ले में आ जा रहे थे सिवाय मुझे छोड़कर। मेरे घर में कोई कुत्ता भी नहीं आ रहा था। मैं लुटता तो पुलिसिया लाव लश्कर मेरे घर भी आता, अखबार में नाम आता। इस ससुरी पेंशन ने मुझे कहीं का नहीं रखा था।

अजी, होली दिवाली का चंदा मांगने वाले भी मुझे इग्नोर करते हैं। मुझे यह सब भुखमरा समझते हैं। कोई मुझे भाव नहीं देता है।

एक पेंशनर की व्यथा कथा को कोई पेंशनर ही समझ सकता है जी। है ना भाई जी---है ना बुआ जी। मेरी तो बड़ी छीछा लेदारी हो गई है जी।

डॉ कुंवर प्रेमिल - विजय नगर जबलपुर

कविता - दीप का व्यवहार - श्री जयप्रकाश श्रीवास्तव

दीप का व्यवहार
बाती के सहारे
नेह के बिन है अधूरा।

लौ भभकती उम्र
जीवन में उजाला
कम नहीं तम
एक हल्की- सी किरन
रचती रही है
रोज़ ही भ्रम

मुठ्ठियों में दिन
लिए सूरज उसारे
धूप ने आ चौक पूरा।

रँगोली के रंग
लिखकर रामरज से
लिपे आँगन
बना गोबर पूजते
गनपति पहले
दिए पावन

झिलमिलाती शाम
खड़ी आहट निहारे
झाँकता छत से कंगूरा।

खील के संग में
बताशे की महक
घुल रही है
अमावस की रात
तारों की नदी में
धुल रही है

मादलों पर पाँव
थिरके गाँव भुंसारे
बजाता चौपाल तंमूरा।

श्री जयप्रकाश श्रीवास्तव - आई.सी. 5, सैनिक सोसायटी शक्ति नगर, जबलपुर, (म.प्र.) - मो.07869193927,

कविता - भारत की नारी - सुश्री प्रणिता खंडकर

मैं भारत की नारी हूँ,
कितनी भाग्यशाली हूँ!
रानी लक्ष्मी, जिजाऊकी,
परम्परा का हिस्सा हूँ |
शिवछत्रपती ने किया सदा,
नारी का सम्मान,
सती प्रथा को रोकने,
लडे थे राजाराम |
सावित्री ने झेले पत्थर,
छेडा, स्त्री-शिक्षा अभियान,
कर्वे, तिलक, आगरकर ने,
बढाया आत्मसम्मान!
भारत के हर क्षेत्र में,
बनाया अपना स्थान,
तभी तो आज की नारी करें,
अवकाश में उडान!

फिर क्यूं अखबार की खबरें,
करती है मन उदास?
दिन-दहाडे, खुली सडक पे,
हो रहा नारीत्व का अपमान |
गर्भजल चिकित्सा ने ली,
कितनी कलियों की जान,
दहेज की लालच में हो गए,
कितने सपने खाक |

कानून और कडी सजा से,
सिर्फ न होगा काम,
नारी-शिक्षा, नारी-संगठन पर,
देना होगा ध्यान |
माँ दुर्गा, माँ काली को,
होना होगा साकार,
स्वसुरक्षा का, हर नारी को,
पढना होगा पाठ |
अपने घर से करनी होगी,
इस परिवर्तन की शुरूआत,
समाजमन का विचारोत्थान ही,
रखेगा, इन्सानियत की शान!

सुश्री प्रणिता खंडकर - मो. 98334 79845.

व्यंग्य - उल्लू की उलाहना - श्री जय प्रकाश पाण्डेय

घर के सामने लगे बड़हल के पेड़ पर बिन बुलाए एक उल्लू आकर बैठ गया है।समधन और उल्लू का आगमन एक साथ हुआ। दीवाली जब भी आती है तो दुनिया भर के तंत्र मंत्र, भूत-प्रेत की बातों का माहौल बन जाता है। सो समधन ने उल्लू के खिलाफ पत्नी को खूब भड़काया। पत्नी हमारे पीछे पड़ गई कि उल्लू को जल्दी भगाओ, हालांकि कि पत्नी हमको भी जीवन भर से उल्लू कहती है, इसीलिए पत्नी को बहुत समझाया कि पहले पता तो कर लें कि अचानक उल्लू क्यों आकर बैठ गया है,भूखा - प्यासा होगा, या किसी ने उसे सताया होगा, किसी सेठ ने उसे पकड़ने की कोशिश की होगी। या हो सकता है कि लक्ष्मी जी ने पहले से अपने घर का जायजा लेने भेजा हो,.... हो सकता है कि इस बार वो इसी उल्लू में सवार होकर अपने घर आने वालीं हों, पर पत्नी एक भी बात नहीं मान रहीं हैं समधन की बात को बार-बार दुहरा रही है।

रात भर हम आंगन में बैठे रहे... उल्लू हमें देखता रहा, हम उल्लू को देखते रहे। एक चूहा भी मार के लाए कि भूखा होगा तो पेड़ से उतर के चूहा खा लेगा पर वो भी टस से मस नहीं हुआ। हमने पहल करते हुए उससे कहा कि हम भी तो उल्लू जैसे ही हैं सबई कोई तो हमें उल्लू बनाता रहता है। प्रेम में वो ताकत है कि हर कोई पिघल जाता है सो हमने बड़े प्यार से उल्लू से कहा - उल्लू बाबा, यहां क्यों तपस्या कर रहे हो कोई प्रॉब्लम हो तो बताओ ?

उल्लू अचानक भड़क गया बोला - सुनो.. हमें बाबा - आबा मत कहना.... बाबा होगा तुम्हारा बाप... समझे, हम महालक्ष्मी के सम्मानजनक वाहन हैं और यहां इसलिए आये थे कि चलो इस दीवाली में कुछ फायदा करा देते पर ये तुम्हारी पत्नी और समधन मिलकर मुझे भगाना चाहती है अंदर की बात ये है कि इस दीवाली में लक्ष्मी जी का इधर से गुजरने का शैय्डूल बना है पर ये तुम्हारी बड़बड़ाती पत्नी को देखकर लक्ष्मी जी नाराज हो जाएंगी, अब बताओ क्या करें ? हालांकि थोड़ी देर में हमको समझ आ गया कि तुम बहुत सीधे-सादे सहनशील आदमी हो,तो बताओ क्या करना है ?

-- हम हाथ जोड़ के खडे हो गये बोले - गुरु महराज... ऐसा न करना, पचासों साल से लक्ष्मी जी के आने के इंतजार में हमने लाखों रुपये खर्च कर चुके हैं, प्लीज इस बार कृपा कर दो... लक्ष्मी जी को पटा कर येन केन प्रकारेण ले ही आओ इस बार.... प्लीज सर,

-- उल्लू महराज को थोड़ा दया सी आयी बोले - चलो ठीक है विचार करते हैं, पर जरा ये पत्नी को समझा देना हमारे बारे में समधन से बहुत ऊटपटांग बात कर रही है।समधन को नहीं मालुम कि हमें

धने अंधेरे में भी सब साफ-साफ दिखता है रात को जहां जहां लफड़े-झफड़े होते हैं उनका सब रिकॉर्ड हमारे पास रहता है।

तंत्र मंत्र करके बड़े उद्योगपति और नेताओं के सब तरह के लफड़े - झपड़े रात को अंधेरे में देखे हैं ये बाबा जो अपने साथ राम का नाम जोड़ के जेल की हवा खा रहे हैं इन्होंने हजारों उल्लूओं के अंगों के सूप पीकर अपनी यौन शक्ति को बढ़ा- बढ़ाके रोज नित नयी लड़कियों की जिंदगी खराब की है। यों तो तरह-तरह की किस्म के उल्लू सब जगह मिलते हैं जैसे गुजरात तरफ पाये जाने वाले झटके मारने में तेज होते हैं हमें आज तक समझ नहीं आया कि लोग अपने आप को उल्लू के पट्ठे क्यों बोलते हैं कई नेताओं की चांद में कमल का निशान बना रहता है कमल के ऊपर लक्ष्मी जी को बैठने में सुविधा होती है ऐसे लोगों के पुत्र लक्ष्मी जी को प्रसन्न करके मालामाल हो जाते हैं। उल्लू पहले तो बोलता नहीं है और जब बोलना चालू होता है तो रुकता नहीं है।

- बीच में रोक कर हमने पूछा - महराज आप ये लक्ष्मी जी के पकड़ में कैसे आ गये और परमानेंट उनके वाहन बन गए

- तब पंख फड़फड़ा के उल्लू महराज ने बताया कि असल में क्या हुआ कि शेषशैय्या पर लेटे श्रीहरि आराम कर रहे थे और लक्ष्मी जी उनके पैर दबा रहीं थीं, भृगु ऋषि आये और विष्णु जी की छाती में लात मार दी, लक्ष्मी जी को बहुत बुरा लगा विष्णु जी बेचारे तो कुछ बोले नहीं पर लक्ष्मी जी तमतमायी हुई क्रोध में विष्णु जी पर बरस पड़ीं, अपमान को सह नहीं सकीं और श्रीहरि को भला बुरा कहते हुए उनको छोड़ कर भूलोक पहुंच गईं, रात्रि में जब जंगल में उतरीं तो कोई वाहन नहीं मिला हम धोखे से सामने पड़ गये तो गुस्से में हमारे ऊपर बैठ गईं। मुंबई के ऊपर से गुजर रहे थे तो गुस्से में सोने का हार तोड़ कर फेंक दिया और मुंबई अचानक मायानगरी बन गई।

लक्ष्मी जी एक बड़ी बहिन अलक्षमी भी है दोनों बहनें आपस में झगड़ती रहतीं हैं, जहां लक्ष्मी जातीं हैं ये बड़ी बहन नजर रखती है और अपने सीबीआई के भाई को चुपके से मोबाइल लगा देती है और सारा कालाधन पकड़वा देती है। कभी-कभी ये अलक्ष्मी उल्लू को अपना वाहन बताने लगती है कहती है कि लक्ष्मी और विष्णु का वाहन गरुड़ है तो ये काहे उल्लू में सवार घूमती है। दीवाली में ये दोनों बहनें कई पड़ोसी औरतों को लड़वा भी देतीं हैं, दिवाली का दिया रखने के चक्कर में पड़ोसी महिलाएं मारा पीटी में उतारू हो जातीं हैं।

बहनें सगी जरूर हैं पर एक दूसरे को पसंद नहीं करतीं।जे लक्ष्मी तो धनतेरस के एक दिन पहले तंत्र साधना करके हवा में लोभ लालच और मृगतृष्णा की तरंगें छोड़ देती है, चारों तरफ धनतेरस, छोटी दिवाली, बड़ी दिवाली की रौनक चकाचौंध देख देख कर ये खूब खुश होती है, सबकी जेबें खाली कराती हुई स्वच्छता का सघन अभियान चलाती है, लोग जीव हत्या करके पाप के भागीदार बनते हैं घर के सब मच्छड़, मकड़ी, कॉकरोच, चूहे आदि की आफत आ जाती है। लोग दीपावली की शुभकामनायें देते हैं कुछ फारमिलिटी निभाते हैं, नकली मावे की मिठाई लोग चटखारे लेकर खाते हैं फिर बात बात में सरकार को दोषी ठहराते हैं। चायना की झालरें और दिये जगमग करते हुए हिंदी चीनी भाई भाई के नारे लगाते हैं।

फटाकों की आवाज से कुत्ते बिल्ली गाय भैंस दहक दहक जाते हैं, अखबार वालों की चांदी हो जाती है पर हम तुम उल्लू थे और उल्लू ही रह जाते हैं हमे समझ नहीं आया ये लक्ष्मी ने हमें अमीर क्यूँ नहीं बनाया, जबकि तंत्र साधना में हमारी जाति को इतना महत्वपूर्ण माना गया।

अच्छा सुनो राज की एक बात और बताता हूं यदि दिवाली में लक्ष्मी जी को वास्तव में आमंत्रित करना है तो साथ में सरस्वती और गणेश जी को जरूर बुला लेना लक्ष्मी यदि धन देती है तो उसका विवेकपूर्ण इस्तेमाल हो इसलिए इन तीनों का समन्वय जरूरी है लक्ष्मी क्रोधी और चंचल है सरस्वती विद्या रूपी धन की देवी है। केवल लक्ष्मी के सिद्ध होने से "विकास" संभव नहीं है। सरस्वती धन की मदान्धता और धन आ जाने पर पैदा होने वाले गुण दोष को जानती है इसलिए भी छोटी-छोटी बातों पर लक्ष्मी सरस्वती से खुजड़ करने लगती है ऐसे समय गणेश जी सब संभाल लेते हैं गणेश जी के एक हाथ में अंकुश और दूसरे हाथ में मीठे लड्डू रहते हैं और वे संयमी और विवेकवान भी हैं। इतना कहते हुए उल्लू जी खर्राटे लेने लगे।

हमने सोचा यदि धोखे से लक्ष्मी जी हमारे घर आ हीं गईं और पूछने लगीं कि बोलो क्या चाहिए... तो हम तो सीधे कहं देगें...

"अपना क्या है इस जीवन में सब कुछ लिया उधार...।

श्री जय प्रकाश पाण्डेय - 416- एच, जय नगर, जबलपुर मो. 9977318765

लघुकथा - ज्योतिष - श्रीमति गौरी गाडेकर

पता नहीं, यह श्रद्धा है, अंधश्रद्धा है या महज़ एक संयोग?

माधव अपने सहकारी के साथ एक ज्योतिषी के घर गएं थे. सहकारी का काम हो गया और वे बस निकलनेवाले ही थें, ज्योतिषी जी ने उन्हें रोका और माधव से कहा, 'आप सावधानी बरतिएं. अगले पांच दिनों में आपके साथ दुर्घटना होने की संभावना है. उसका कारण होगा वाहन.'

'इन बातों पर मेरा विश्वास नहीं है. मैं बस इनके साथ आया हूं,' माधव ने सहकारी की ओर इशारा कर के कहा.

'यह एक शास्त्र है. इस विषय में मेरा बरसों का अभ्यास है. मैंने कहा ,वह गलत नहीं हो सकता. हां. आपके जान को कोई खतरा नहीं है. लेकिन आप डेढ-दो महिनों के लिए बिस्तर पे लेटे रहोगे.'

'लगी शर्त पांच हजार रुपयों की. मैं पांच दिन घर से बाहर ही नहीं निकलूंगा. तो फिर कैसे होगी यह दुर्घटना?'

'इस बार मैं हार गया और आप सुरक्षित रहें, तो मुझे आनंद ही होगा. ठीक है. आज से पांच दिन बाद रात साढेग्यारह बजे मैं आपके घर आऊंगा और हार मान के पांच हज़ार रुपएं आपको दे दूंगा.'

पांच दिन माधव घर में ही बैठे रहे. बाहर ही नहीं निकले तो दुर्घटना होगी कैसे ?

पांचवा दिन ढल गया. माधव तन्दुरुस्त थे.

ठीक साढेग्यारह बजे माधव के घर की घंटी बजी. 'लो. ज्योतिषी जी आएं होंगे पांच हज़ार रुपये लेके. कैसी उनकी भविष्यवाणी झूठी साबित की!' अतीव हर्ष के साथ माधव उठे और दरवाज़ा खोलने दौडे.

उफ़! अचानक उनका पैर किसी चीज़ पे पडा. वे फिसल गएं और पीठ के बल गिरे. उन्होंने उठने का प्रयास किया ,लेकिन वे असफल रहे.

माधव की पत्नी ने दरवाज़ा खोला. ज्योतिषी जी अंदर पधारें. देखा तो माधव बेटे की खिलौने की कार पे फिसल के गिर गए थे.

अर्थात वक्त हार-जीत के बारे में सोचने का नहीं था. ज्योतिषी ने डॉक्टर से बात की. उनके कहने पर ॲम्ब्युलंस मंगवाई और माधव को अस्पताल ले गए.

डॉक्टर ने प्लास्टर लगवाया, जो डेढ-दो महिनें रहनेवाला था.

श्रीमती गौरी गाडेकर - 1/602,कैरव,जी.ई.लिंक्स,राम मंदिर रोड, गोरेगाव(पश्चिम),मुंबई 400104. मो. 9820206306.

कविता - लावण्यपूर्ण रात्रि-अभिसारिका - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी

अप्सरा की भाँति, वो सौन्दर्य-प्रतिमा,
बादलों से विहीन, तारों भरी रात्रि में
अतिशय प्रकाश की अप्रतिम छटा लिये
वो निरंतर चहलकदमी करती रही...

आकर्षक डील-डौल, मृगनयनी चक्षु
भीनी-भीनी चाँदनी में पिघलता यौवन
ऐसी लावण्यपूर्ण वो दिव्य अनामिका
वो रमणीय सौंदर्य जो कदापि
ईश्वर प्रदत्त भी संभव नहीं...

एक स्वार्गिक रंगीन छटा लिए
लहराती स्याह वेणियां से युक्त
अर्ध-प्रच्छादित मुखाकृति को
और भी संवारती- निखारती हुई...
अभिलाषा की वो एक परम उत्कटेच्छा...

जहाँ विचार मात्र ही मधु-सुधा टपकाते..   .
कितना पवित्र, कितना प्यारा उसका संश्रय...!
दैवीय कपोलों, के मध्यास्थित,
उन वक्र भृकुटियों में वो इतनी निर्मल,
शांतचित, फिर भी नितांत चंचल
एक विजयी मुस्कान लिए...!

वो देदीप्यमान दैवीय आभा,
सौम्यता के व्यस्ततम क्षणों को
हर्षोन्मादित हो, अभिव्यक्त करते हुए
एक शांतचित्त मन, स्थितप्रज्ञ अवस्था
एक निष्कपट प्रेम परितृप्त, ऐसी थी
वो कोमल हृदय धारिणी नवयौवना..!

~प्रवीन रघुवंशी 'आफताब'

कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, एन एम् - पुणे

कविता - शामियाना - डॉ. भावना शुक्ल

शामियाने के होते
है कई रूप
मिल गया मुझे मेरे अनुरूप
जब से मिल गया
तेरा शामियाना
सुकून और चैन
छा गया मेरे आँगना।
तन मन हो गया
सभी का प्रफुल्लित
हो गई तेरी कृपा
दिन रात तुझे ही जपा।
हम सबको
सूरज देता है प्रकाश
छाया है शामियाना आकाश
धरती पर उतरती है
धीरे-धीरे रूप की
सुनहरी धूप
छाया है नूर का सुरूर
जब तक है तेरा शामियाना
तब तक अस्तित्व है हुजूर।
प्रभु तेरे शामियाने का
अनोखा है रूप
कभी ओलो की बरसात
कभी फसलें दुखी
कभी फसलें सुखी
कभी बरसता अमृत रूपी पानी
कभी धरती होती धानी
तेरे शामियाने के रूप
हैं अनूप।
दीवाली में लगते है
हर जगह शामियाने
कहीं मिठाई
कहीं पटाखे
कहीं मचती है नृत्य की धूम
कहीं राम नाम की धुन
शामियाने के रूप अनेक
जब तक हैं धरती पर पांव
रहेगी हम पर तेरी छाँव।

डॉ. भावना शुक्ल प्रतीक लॉरेल - J-1504, नोएडा सेक्टर - 120, नोएडा (यू.पी)- 201307 - मो. 9278720311 ईमेल : bhavanasharma30@gmail.com

लेख - गूगल बन रहा है बुढ़ापे का दोस्त - श्री अजीत सिंह

छोटे होते परिवारों और रोज़गार के लिए दूर शहरों और विदेशों में जाने की नई पीढ़ी की मजबूरी के कारण अक्सर देखने में आता है कि माता-पिता बुढ़ापे में अकेले ही रह जाते हैं। स्थिति उस समय और भी विकट ही जाती है जब पति-पत्नी में से कोई एक चल बसे।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के पूर्व प्रोफेसर 87 वर्षीय डॉ एम पी गुप्ता 11 साल पहले पत्नी के स्वर्गवास होने के बाद घर में अकेले रहते हैं लेकिन अकेलापन महसूस नहीं करते। उन्होंने इसका एक ढंग निकाल लिया है। वे रोजाना 4 घंटे घर में रखे कंप्यूटर पर काम करते हैं। वे ब्रॉडबैंड सुविधा के साथ यह समय इंटरनेट पर अपनी मनमर्जी की जानकारी ढूंढने और उसे पढ़ने में लगाते हैं।

"मैं फेसबुक, वॉट्सएप जैसे सोशल मीडिया साइट पर अपना समय बर्बाद नहीं करता। वहां लोग ऊट-पटांग संदेश भेजकर अपना रौब जमाना चाहते हैं। अक्सर तो फॉरवर्ड किए गए संदेशों की भरमार रहती है। यह सब कुल मिलाकर बहुत बोरिंग होता है।

प्रो गुप्ता का कहना है कि गूगल का मामला अलग है हालांकि ये सभी इंटरनेट या ब्रॉडबैंड पर आधारित हैं।

"गूगल आपको आपकी मर्ज़ी की सूचना खोजने और आनंदित होने की सुविधा देता है। में चाहूं तो नोबेल पुरस्कारों के बारे उनके घोषित होते ही विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकता हूं। या फिर मेरी हॉबी फोटोग्राफी के बारे सब कुछ जान सकता हूं। चाहूं तो अपनी पसंद के पुराने पंजाबी गाने सुन सकता हूं और गीतों के बोल भी प्राप्त कर सकता हूं"।

डॉ गुप्ता ने बताया कि उन्होंने अपने पैतृक कस्बे जगराओं और वहां की मशहूर हस्ती लाला लाजपतराय के बारे में रोचक जानकारी हाल ही में गूगल से ही प्राप्त की।

"मुझे यह जानकर खुशी मिली कि लाला लाजपतराय जगराओं से हिसार आए थे वकालत के लिए और मैं जगराओं से हिसार आया था नौकरी के लिए और यहीं का होकर रह गया।

"समाचार माध्यमों से या फिर मित्रों से बातचीत में अक्सर कुछ सवालों के जवाब पूरे नहीं मिल पाते। गूगल पर जाकर मैं उनके जवाब ढूंढ लेता हूं। ऐसा करने पर मुझे एक तरह की संतुष्टि और आनंद मिलता है। मुझे ऐसा भी लगता है कि काश यह सुविधा उस वक़्त उपलब्ध होती जब मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ाता था। उस समय जानकारी इकट्ठा करने के लिए लाइब्रेरियों के चक्कर लगाने पढ़ते थे। कई हफ्ते लग जाते थे। अब वही काम एक दो घंटे या फिर एक दो दिन में हो जाता है।

पहले पुस्तक ढूंढ़ना, फिर जानकारी ढूंढ़ना और फिर हाथ से नोट लिखना या संबंधित पृष्ठों की फोटो कॉपी लेना, यह सब काफी लंबी व ऊबाऊ प्रक्रिया थी। आज तो गूगल पर जानकारी सर्च करना है और फिर उसका कॉपी-पेस्ट लेना है। सीधा प्रिंट ले लो या पेन ड्राइव में डाल लो।

डॉ गुप्ता कहते हैं कि वरिष्ठ नागरिकों को कंप्यूटर व स्मार्टफोन की टेक्नोलॉजी अवश्य सीखनी चाहिए। यह बहुत ही आसान है। गूगल का भरपूर उपयोग करना चाहिए मगर फेसबुक और वॉट्सएप की लत नहीं डालनी चाहिए।

गूगल आपका अकेलापन दूर कर देगा। आप बुढ़ापे का आनंद ले सकेंगे, अपनी शर्तों पर, मन चाहे ढंग से।

डॉ गुप्ता की राय है कि बच्चों को भी वॉट्सएप और फेसबुक की बजाय गूगल के उपयोग की तरफ मोड़ना चाहिए। इसमें अध्यापकों व अभिभावकों की अहम भूमिका होगी।

"जिसकी हमें ज़रूरत है , हम वही जानकारी लेंगे। किसी की हम पर थोंपी जा रही जानकारी क्यों लें?"

"बुढ़ापे में अकेलापन बहुत से लोगों को परेशान करता है। इसे दूर करने के लिए टेक्नोलॉजी की मदद ली जा सकती है। समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन ये सभी एकतरफा संवाद करते हैं। अपनी सुनाते हैं, हमारी नहीं सुनते। हमारा सारा समय भी खा जाते हैं। गूगल आज्ञाकारी पुत्र है। जब कहोगे, तभी हाज़िर होगा, जो मांगोगे वही ला कर देगा। आजकल मैं गूगल की मदद से अंगदान, देहदान के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रहा हूं"।

डॉ एम पी गुप्ता

डॉ एम पी गुप्ता 1996 में प्रोफेसर के पद से रिटायर हुए थे। बेटा सेना में कर्नल है और दो बेटियां जयपुर और दिल्ली में अच्छी तरह अपनी अपनी घर गृहस्थी चला रही हैं। बातचीत होती रहती है, मिलना जुलना समय समय पर ही हो पाता है, पर यह कोई समस्या नहीं है।

" मैं अकेला रहता हूं, पर अकेलेपन में नहीं। कुछ साथी मिलते रहते हैं, और सबसे बढ़िया दोस्त गूगल है जो हरदम मेरे साथ ही रहता है"।

डॉ गुप्ता की ज़िन्दगी यूं तो सही ढंग से चली पर 2009 में पत्नी को ब्रेन कैंसर हुआ तो कष्ट भी उठाना पड़ा। 2012 में उनका स्वर्गवास हुआ और तबसे डॉ गुप्ता अकेले ही रहते हैं।

"बुढ़ापे की सही काट यह है कि आदमी अपनी पसंद के किसी रचनात्मक शौक को अपना ले। किसी चीज़ से इश्क करले; पेंटिंग, बागबानी, ज्ञानवर्धन, गायन, लेखन,शेरो-शायरी, किसी से भी। दोस्तों की मंडली भी ज़रूरी है। यह मानसिक सेहत के लिए अति आवश्यक है। खुशी एक मानसिक अवस्था मात्र है। ज़िन्दगी में न ऊंचे पहाड़ हैं न गहरी घाटी। बस छोटे मोटे उतार चढ़ाव हैं"।

डॉ गुप्ता बुधवार व शुक्रवार को वरिष्ठ नागरिकों की संस्था वानप्रस्थ की बैठकों में नियमित रूप से जाते हैं। सेक्टर-15 में उनके कई पुराने मित्र रहते हैं जिनके साथ वे सुबह शाम की सैर भी करते हैं और गपशप भी।

गपशप बहुत ज़रूरी है, हंसना हंसाना ज़रूरी है और मिलना जुलना बहुत ज़रूरी है।

उम्र की परवाह न करें। मस्त रहें।

अटल बिहारी वाजपाई की कविता याद रखें ,

'उम्र का हरेक दौर मज़ेदार है

अपनी उम्र का मज़ा लीजिये।

ज़िंदा दिल रहिए जनाब,

ये चेहरे पे उदासी कैसी,

वक्त तो बीत ही रहा है,

उम्र की ऐसी की तैसी...!

श्री अजीत सिंह, पूर्व समाचार निदेशक, दूरदर्शन हिसार। मो : 9466647037

(लेखक श्री अजीत सिंह हिसार से स्वतंत्र पत्रकार हैं। वे 2006 में दूरदर्शन केंद्र हिसार के समाचार निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए।)

गीत - शुभ सबको हो - श्री अरुण दुबे

शुभ सबको हो दीपावली हो संपदा अपार
पूजी हो सद्गुणों की हो ज्ञान का भंडार
वैभव नहीं कम होगा गुण शील हैं जहाँ पर
बरसेगा धन सदन में बदु शर्त में हज़ार
शुभ सबको हो

सब देते है बधाई खुशियों का है त्यौहार
दीपों की सजी लड़ियाँ रौनक है बेशुमार
ये रात अमावस की है कौन कहेगा
धरती से गगन तक है रँगों की बहार
शुभ सबको

बीता है क्वार ये है कार्तिक का महीना
लगती लिहाफ प्यारी भूले है पसीना
न शीत है न ताप है बस खुशनुमा मौसम
होने लगा है चाँदनी में धूप का दीदार
शुभ सबको हो

बोनी हुई रबी की पुलकित बड़े किसान
लाएगा घर में वैभव उगता हुआ ये धान
हरयाली की चादर से ढके लग रहे है खेत
चादर चढ़ी हुई हो किसी पीर की मज़ार
शुभ सबको हो

बच्चों के जोश का है अलग ही नजारा
पहिने नए परिधान जिनमें टका सितारा
लायेगें मिठाई पटाखे कील बताशे
खुशबू से मिठाई की महका हुआ बाजार
शुभ सबको हो

ये पर्व है ऐसा जिसे सब मिलके मनाते
बाकी दिनों दीवार जो मजहब की उठाते
है दौड़ में शामिल सभी शुभ लाभ की खातिर
धन के बिना चलता नहीं कोई कारोबार
शुभ सबको हो

श्री अरुण दुबे - सागर मध्यप्रदेश

लघु कथा - दीपों की कश्मकश - श्रीमती सिद्धेश्वरी सराफ 'शीलू'

दीपावली का समय चारों तरफ उत्साह उमंग और रंग रोगन करते, सभी श्री लक्ष्मी पूजन की तैयारी के लिए अपना-अपना घर सजा रहे थे। गुलाबचंद के फलते-फूलते घर को न जाने किसकी नजर लग गई थी। अचानक उसके ज्वेलरी दुकान के कारोबारी में ग्रहण सा लग गया।

बस उसके दोनों बेटे अजय और विजय का परिवार आपस में तानाकशी और एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे। देखते-देखते घर के टुकड़े हो चले बराबर-बराबर दो हिस्सों में सब कुछ बँट गया। गुलाबचंद और उसकी पत्नी के लिए यह बहुत ही असहनीय था। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आखिर वह किसके हिस्से में आएंगे, क्योंकि दोनों माँ - पिताजी को रखना नहीं चाह रहे थे।

छोटा बेटा विजय माँ का थोड़ा दुलारा था। किसी तरह अपने माँ पिताजी को अपने पास रख लिया।

मकान के घर के दो हिस्से एक हिस्से में अजय का परिवार जिसमें उसके करीब 13 -14 साल का बेटा और सुंदर सी बिटिया, धर्मपत्नी। विजय के पास माता-पिता और उसकी अपनी धर्मपत्नी दो सात - आठ साल के सुंदर बाल गोपाल।

बड़े बेटे की समझदारी थोड़ी ज्यादा थी। किसी तरह उसने कारोबार संभाल कर अपनी स्थिति सुधार लिया, परंतु छोटे बेटे के पास न सुविधा थी और न वह ज्यादा कुछ जानता था। लिहाजा थोड़ा कमजोर पड़ने लगा।

धनतेरस, छोटी दीपावली, साधारण पूजा पाठ मन विचलित सा होने लगा। अजय अपने घर के चारों तरफ आज दीपमाला लाईट की लडियों को सजा रहा था। बेटा भी साथ दे रहा था। जगह-जगह ज्यादा लाइटों के गुच्छे बना रहे थे। बेटे के दिमाग में एक बात बार-बार आ रही थी क्यों न लाइट को पहले की तरह पूरे मकान में फैला कर लगाया जाए। बेटा कुछ बोलता इसके पहले पापा ने डांट लगाई और वह चुपचाप घर के अंदर चला गया।

दोपहर पापा अपने दुकान में चले गए। दुकान जाते ही बेटे ने चाचा को आवाज लगाई.... "चाचा ओ चाचा देखिए इन दीपों की लडियों में कश्मकश होने लगी है। लड़ाई छिड़ गई है। यह जलना ही नहीं चाह रहे हैं। ये चारों तरफ फैलना चाह रहे हैं।"

दूसरी तरफ से सारे लोग एक साथ निकल आए। तब तक वह लडियों को निकाल कर घर के दूसरे कोने तक फैला चुका था। और कह रहा था..." अब यह फैल चुकी है। अब इनमें कोई कश्मकश नहीं होगी। देखना कितना खूबसूरत लगेगा। जब यह जल उठेगी।"

जो काम बड़े नहीं कर पा रहे थे। पोते ने कर दिया। न जाने चाचा, बेटे और दादा में क्या बात हुई।

शाम को जब पापा दुकान से पूजन के लिए लौटे तो देखा पिताजी के काँपते हाथ दियों पर तेल डाल रहे थे। और उसके घर माँ और दोनों बहुओं ने जमकर दीपावली पूजन की तैयारी कर ली है।

धर्मपत्नी में हंसकर आवाज लगाई... "अब देखते भी रहोगे या शुभ-लाभ के साथ लक्ष्मी जी का स्वागत करेंगे।"

बड़ी सी थाल में जलते दीपक लिए भाई निकल रहा था और कह रहा था.. "भैया आईए शुभ - दीपावली मनाते हैं।" माता-पिता के चेहरे पर असीम शांति और खुशी के आँसू बहने लगे। अब कोई कश्मकश नहीं सिर्फ प्रेम के साथ मुस्कुराहट थीं।

श्रीमती सिद्धेश्वरी सराफ 'शीलू' - जबलपुर, मध्यप्रदेश

कविता - माटी के दीपक जलें - श्री संतोष नेमा

दीपक से दीपक जला, हुआ दूर अँधियार।
दीवाली में सभी के,रोशन हैं घर द्वार।।

लौटे थे वनवास से,आज अवध श्री राम।
झूम उठी नगरी सकल,हुई धन्य अभिराम

सदियों से ही हो रही,अच्छाई की जीत
नहीं बुराई ठहरती,यह सनातनी रीत

रहे स्वच्छ पर्यावरण,रखें हमेशा ध्यान
बारूदी माहौल से,रखें बचाकर मान।।

माटी के दीपक जलें,माटी ही पहचान
माटी से मानव बना,रख माटी का मान

आज रोशनी से भरी,घनी अमावस रात
नन्हा दीपक दे रहा,अँधियारे को मात

दीवाली की रात का,जगमग है परिवेश
लक्ष्मी माता कर रही,गृह में सुखद प्रवेश।

दीवाली की रोशनी,हर लेती अँधियार।
देखो दस्तक दे रहीं,खुशियाँ हर घर द्वार

दीपों की यह रोशनी,सबके लिए समान
ऊँच-नीच या पंथ का,कभी न रखती भान।।

खूब खरीदी कर रहे,सजा हुआ बाजार
जेब भरे धनवान के,है गरीब लाचार

दीप ज्ञान का जब जले,हटे तिमिर अज्ञान
दीप ब्रह्म है दीप शिव,दीप हृदय का गान

माँ लक्ष्मी द्वारे खड़ीं,सज्जित वन्दनवार
मिले शरण"संतोष" को,माँ की करुणाधार

श्री संतोष नेमा "संतोष" - आलोकनगर, जबलपुर (म. प्र.) मोबा 9300101799

कहानी - ठहरे हुए पल - डॉ हंसा दीप

चिकित्सकों की टीम कई दिनों से चर्चा कर रही थी- “इस रोगी को घर भेजा जा सकता है।”
“आज तक कभी कोई हिंसक काम नहीं किया। न खुद को चोट पहुँचायी, न किसी और को।”
नर्स, स्टाफ, सब यही बात करते- “बस रात भर चीखें सुन-सुनकर कान बंद कर लेता और घूमता रहता था। दवाई देते तो नशे में सो जाता।”
मैं सबकी बातें सुनी-अनसुनी कर अपने बिस्तर पर देता और पड़ा रहता। आखिरकार, एक दिन निर्णय ले लिया गया और मेरी छुट्टी कर दी गयी। अस्पताल वाले भी मुझे नींद की गोलियाँ देकर, सुला-सुला कर तंग आ गए थे। मैं घर आना नहीं चाहता था। यहाँ दवाई लेकर सोते-सोते, बचे-खुचे दिन काटना बेहतर था, बजाय इसके कि घर जाकर वापस अपने अतीत में धकेल दिया जाऊँ। लेकिन ऐसा हो न सका। मुझे उसी घर में लौटना पड़ा, जहाँ मेरा अपना कोई नहीं था। देश छोड़े, माता-पिता को छोड़े अरसा हो गया था। अब तक माता-पिता भी दुनिया छोड़ कर जा चुके थे। हालाँकि यहाँ इस देश में भी कई लोग मेरे अपने थे लेकिन इतने सालों में सब ने दूरी बना ली थी।
कोशिश कर रहा हूँ कि एक बार फिर से अपनी जिंदगी शुरू कर सकूँ। घर तो आ गया मैं, लेकिन क्या सचमुच इसे घर कह सकते हैं! जब मैं खुद भी मैं नहीं रहा तो घर कैसे घर हो सकता था! दीवारें जरूर थीं जो धूप-सर्दी से बचाती थीं, मगर बेजान चीजों से घर की अनुभूति न मिल पाती। सामान अपनी जगह वैसा का वैसा पड़ा था। घर की जिम्मेदारी मेरी अनुपस्थिति में एक केयर-टेकर कंपनी के पास थी इसीलिए सब कुछ सुव्यवस्थित था। टीवी, पानी, लाइट सारे कनेक्शन मुहैया थे। एक अरसे के बाद आज पहली सुबह है जब मैं होशोहवास में हूँ। बगैर किसी दवाई के। बाजार से सामान लेकर आया हूँ। ब्रेड, दूध, सब्जी सब कुछ। घर की बनी चाय मेरी कमजोरी रही है। ज्यादा दूध वाली चाय, हर घूँट के साथ गले को तर करते अंदर जा रही है। आज हर चीज का स्वाद महसूस हो रहा है।
कुल मिलाकर अच्छा लग रहा है। पतझड़ का मौसम पूरी बहार पर है और अपना सौंदर्य बिखेर रहा है। रंग-बिरंगे पत्तों से आच्छादित पेड़ ऐसे लग रहे हैं जैसे किसी माली ने अपनी बगिया को जी-जान से सजाया हो। कितनी सुहानी दुनिया है। मन खुश है। खुली हवा में चलना ऐसा लग रहा है मानो पहली बार चलना सीखा हो। पैरों की जुगलबंदी का अहसास भी है। एक दूसरे का साथ देते ये दोनों पैर कितनी सतर्कता से एक दूसरे का सम्मान करते हुए उठते हैं- “पहले तुम, पहले तुम।” जैसे उस आवाज के साथ कदम ताल मिलाते अपने जीवंत होने का सबूत दे रहे हों। पूरे रास्ते एक भी परिचित दिखाई नहीं दिया।
घर लौटा तो हल्की-सी थकान थी। सोफे पर पसर कर आदतन एक बार फिर खबरें चलाने के लिए रिमोट उठाया। अनजाने ही भारतीय चैनल का बटन दब गया। जिससे मैं बचना चाह रहा था, वही खबर थी। सालों से जो मेरी आँखों में कैद है, वही आज भी, वैसा ही खबरों में है। एक जमाना बीत गया। कुछ भी नहीं बदला। वही ढपली है, वही राग है। वही दरिंदगी, वही वहशियत, वही अंधी मानसिकता।

एक बार फिर बलात्कार की खबर। एक बार फिर ऐसा हुआ कि प्रकृति को शर्म आ गयी। यह खबर न सुनता तो भी उस अतीत में पहुँचता ही, जब मैं खुद भी इस रासलीला में शामिल था। जिंदगी में कुछ पल ऐसे होते हैं जो हमेशा रील की तरह आँखों के सामने बने रहते हैं। मेरी जिंदगी के वे पल कभी मेरे सामने से जाते ही नहीं थे। बाबा की दी हुई नसीहत याद आती जो एयरपोर्ट छोड़ते हुए उन्होंने दी थी- “तुम कायर नहीं हो, मेरे बेटे हो। ये चीखें तुम्हारे मन का वहम है।”

माँ ने कहा था- “कभी कुछ गलत करने का सोचना भी मत। समय के साथ सब ठीक हो जाएगा।”

माँ की आशंका अपनी जगह सही थी कि बेटा घबरा कर अपनी जान न ले बैठे। बेटे को इस कदर परेशान देखना एक यातना थी। बाबा ने अपने कंधों पर सारी जिम्मेदारी ले ली थी- “इतना पैसा छोड़ा है तुम्हारे लिए कि जीवन भर सुख से रह सको।”

सचमुच जीवन भर कुछ नहीं किया। कुछ करने के लायक रहा ही नहीं। चीखें सुनता रहा। सुन-सुनकर तंग आ गया तो मानसिक अस्पताल में भरती कर दिया गया। सरकारी मेहमान बना रहा। सोने से पहले और उठने के बाद लोग भगवान का नाम लेते हैं, सुनते हैं। लेकिन मैं उस लड़की की चीखें सुनता रहा हूँ जो आज भी उतनी ही तीखी होती हैं जितनी उस दिन थीं। सांय-सांय करती उस रात के अंधेरे को कभी सूरज की किरण नसीब न हुई। गाँव की उस सुनसान सड़क का एक सिरा, दूसरे सिरे की तरह सन्नाटे में डूबा हुआ था। दूर-दूर तक कोई आदमी तो क्या जानवर भी दिखाई नहीं देता था। परिंदे भी अपने घर लौट चुके थे। उस खामोश रात में हम पाँचों दोस्तों का अट्टहास गूँज रहा था। शहर से लौटते, नशे में झूमते, हम बेबात ठहाके लगा रहे थे। अपने खानदानी नाम का कवच हमारे शरीर पर तो था ही, उससे कहीं ज्यादा हमारी सोच पर था। हम पूरी तरह मदहोशी में थे। रात के तकरीबन साढ़े नौ बजे थे। रात गहराना शुरू भी नहीं हुई थी लेकिन हमारी मदांध सोच में सारी दुनिया, वह रात और उसका अंधेरा, सब कुछ हमारी मुट्ठी में थे। हमारी मस्ती अपने चरम पर थी। अकस्मात उस सन्नाटे में एक लड़की दिखी तो नशे का असली मजा सिर उठाने लगा। अबोध थी वह। उसने दवा की दुकान के बारे में हमसे ही पूछा। वह अपने बूढ़े पिता के लिए दवा लेने जा रही थी। उसे लगभग आधा किलोमीटर और चलना था तब कहीं उसे दवा की दुकान मिलती।

हम पाँचों की शैतान नजरें मिलीं। मर्दानगी ने अपना सिर उठाया। कुछ ही पलों में वह सूनी सड़क हमारा रंगमहल बन चुकी थी। उस लड़की की चीख-पुकार सुनने वाला वहाँ कोई नहीं था। थे तो बस उन्मादी मर्दों के तेवर। पहला हक मेरा था क्योंकि दोस्तों को पिलायी थी मैंने। वह शारीरिक सुख मेरा पहला मौका था और इतने सालों की एकत्र ऊर्जा थी। जी भर कर जीया उन पलों को। शेष तो कुछ याद नहीं लेकिन उस युवा अनगढ़ मस्तिष्क में कुछ पैठ गया था। वह समय का हिस्सा, जब उसे निर्वस्त्र कर उन पलों को भोग रहा था। उस दो मिनट की ग्लोरी को अपने में समेट रहा था। चाँद की हल्की रोशनी में उस लड़की के जननांग में खून-खून दिखाई दे रहा था। यह बात काफी बाद में समझ आयी थी मुझे कि हम जिसे बलात अपनी हवस का शिकार बना रहे थे, वह रजस्वला थी। तब मेरे अंगों पर भी खून लगा था। वह खून जो आज भी मेरे शरीर पर उतना ही लाल है जितना उस दिन था।

वह लड़की एक सजी सजायी पकवानों की थाली थी जिसे मैं खाए जा रहा था, लपालप। उन पलों में मैं, मैं नहीं था, मेरे भीतर कोई और था। अपने उन्माद में चूर। ठीक वैसे ही, जैसे आज के ये पल आज का मुखौटा पहने हैं। आज तो कभी आया ही नहीं मेरे लिए। वह रात बीती होगी, सवेरा भी हुआ होगा।

लेकिन मेरे लिए आज भी वही रात है, मैं हूँ और वह लड़की है। वह चिल्ला रही है, मैं हाँफ रहा हूँ। कानों में वही आवाजें, एक के बाद एक। न नींद, न चैन। उसके बाद गुजरी हर रात एक खौफनाक रात में बदलती रही। होश आने पर भी होश उड़े रहे। मेरी वह मर्दानगी मुझ पर लगातार कोड़े बरसाती रही। हर नयी सुबह, एक नयी दहशत लाती और हर रात उस दहशत को जैसे साकार कर देती। मैं उससे दूर जाने के लिए बेतहाशा भागता रहता। एक बर्फीली खोह में कैद होते देखता रहता अपने आप को। अपने हाड़-माँस के शरीर को बर्फ की चादर में सिमटते रोक न पाता।

उस घटना ने मेरे इर्द-गिर्द एक ऐसा जाल बना दिया था जो लगातार शिकंजा कसते हुए मेरा दम घोंटने लगता था। बाबा-माँ समर्थ थे। अपने बेटे की मानसिक स्थिति को देखते हुए एक ही रास्ता सूझा था कि यहाँ से दूर चला जाए उनका बेटा। उस माहौल से पीछा छुड़ाते हुए विदेश भेज दिया था। कैनेडा की उस धरती पर जहाँ कई रिश्तेदार थे। बाबा ने अपनी सामर्थ्य से मुझे हर भय से मुक्त कर दिया था। जैसे किसी शिकारी को एक नया जंगल देकर उसकी दुष्टता का पारितोषिक प्रदान कर दिया हो।

एक नये देश में था मैं। माँ-बाबा के लिए अब मैं सुरक्षित था लेकिन उन्हें क्या मालूम कि मैं किस तरह के भय से अहर्निश जूझ रहा था। धरती जरूर सीमाओं की बंदिश में कैद है लेकिन दूर तक फैला हुआ आसमान किसी भी सीमा को मानने से इनकार कर चुका था। ऐसा लगता जैसे मदद की गुहार लगाती हुई उस लड़की की चीखों को आसमान ने पनाह दे दी हो। हर रात जब मैं सोने जाता तो वही चीत्कार मेरे कानों में गूँजती रहती। दिन तो किसी तरह निकल जाता पर रातें भय के साए में बीततीं। शादी करना तो दूर कभी उस बारे में सोच भी नहीं सका। यहाँ तक कि उसके बाद किसी लड़की को सिर उठाकर देखने की हिम्मत तक न कर पाया। मेरे अंगों की हलचल खत्म हो गयी थी। उस रात की गरमी ऐसी ठंडी सिहरन छोड़ गयी थी कि मेरे भीतर का मर्द स्पंदनहीन था। लगता जैसे उस अंग को मृत कर गयी है वह लड़की। मैंने तो अपनी ताकत एक ही रात में दिखाई थी लेकिन वह लड़की न जाने कितनी रातों से मुझे अपनी ताकत दिखा रही थी। एक युवा का जीवन नहीं, एक ठंडी बर्फ की सिल्ली का जीवन जी रहा था मैं। लगता कि मैं किसी फ्रिज़र में हूँ। उसमें जमा बर्फ का जखीरा सालों से मुझे उसी हालत में रखे हुए है।

विक्षिप्त अवस्था में अस्पताल ही मेरा घर था।

आज एक अरसे के बाद घर आया। घर में पहले दिन की शुरुआत में ही फिर एक बार गुनाह का बोध विचलित करने लगा। उस रजस्वला लड़की का खून मानो आँखों की पुतलियों में जम गया था। उस खून के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता था। वह खून जो जिंदगी देता है। वही खून जो अपवित्र माना जाता है। देह का खून, अंदर कोख में है तो जीवन देता है, बाहर आता है तो अपवित्र हो जाता है। मेरे उस कृत्य ने परिवार को तबाह कर दिया। बाबा व माँ अपनी इकलौती संतान के प्रेम से वंचित रहने को मजबूर हो गए। बेटे को जेल की हवा खानी पड़े उसके पहले ही देश के बाहर भगा दिया था। वही भगौड़ापन दौड़ा कर उसी घटना के पास वापस ले जाता था।

काश बाबा ने मुझे बचाया न होता। काश माँ ने मुझे लकड़ी से पीट-पीट कर बेदम कर दिया होता। याद है मुझे, बचपन में छोटी-छोटी शरारतों पर माँ सज़ा दिया करती थी। कभी डाँटती थी तो कभी बात करना बंद कर देती। उसका मौन मेरे लिए बहुत असहनीय हुआ करता था। लेकिन इस जघन्य अपराध के लिए माँ ने कोई सज़ा नहीं दी। कहती रही- “चिंता न करो बेटा, तुम आराम से जाओ।”

मैं कातर नजरों से माँ को देखता। वह समझाती- "कुछ नहीं होगा। हम हैं यहाँ, सब सँभाल लेंगे।"
हर सज़ा से मुझे बचा लिया माँ-बाबा ने, पर मुझे अपने आप से नहीं बचा सके। अपनी खुद की सज़ा मैं भुगतता रहा। वह मेरी अपनी हवस थी। उस पल मेरे भीतर के दरिंदे ने एक मजबूर लड़की को अपनी ताकत का निशाना बनाया और उसके बाद मेरे भीतर के इंसान ने तमाम रातों में कभी चैन से सोने नहीं दिया था मुझे। वह उस लड़की की भटकती आत्मा नहीं थी जो आगे-पीछे आकर डरा रही हो, पर लगातार कानों में गूँजती वे चिल्लाहटें कुछ कहती थीं। कुछ पूछती थीं। मैं जवाब किसे देता। वह लड़की अगर मुझे फिर से मिल जाती तो शायद पश्चाताप कर पाता। मैं कहीं का न रहा था। जब-जब उस रात के सन्नाटे से बचने की कोशिश करता, तब-तब और ज्यादा उसमें धँसता जाता। मानो यह सालों पहले की नहीं, अभी-अभी, बीती रात की बात हो। सात समंदर पार का सफर तय करके कई गुना तेज हमला बोलती थीं वे चीखें।
जीवन भर बहुत अच्छे काम करने चाहे लेकिन उस एक बुरे काम की बुराई को धो नहीं पाया। गाँव में वे सारे दोस्त बच गए थे, किसी का बाल बाँका न हुआ। एक गरीब अपनी बेटी के लिए कब तक लड़ पाता! वैसे भी इतने बड़े देश में, करोड़ों की जनसंख्या में, अगर किसी एक लड़की के साथ बलात्कार हो जाए तो कुछ फर्क नहीं पड़ता। यूँ भी उन लड़कियों के पास न खाने को रोटी है, न तन ढँकने को कपड़ा। उनकी क्या इज्जत और क्या बेइज्जती। यह बात अलग थी कि माँ-बाबा ने अपनी तसल्ली कर ली थी। मुझे दूर भेजकर खुद को दिलासा दे दिया था कि नयी जमीन पर मैं पुरानी करतूतों से मुक्त हो जाऊँगा। माँ ने बेटे के मन की शांति के लिए कई व्रत-उपवास किए होंगे।
माँ एक साल के भीतर ही यह दुनिया छोड़कर चली गयी थी। मैंने अपनी खैरियत बताकर उसकी अंतिम साँसों को आसान कर दिया था। कई सालों तक अपने देश नहीं लौटा। पिताजी की असामयिक मृत्यु पर गया तो चार दिनों के भीतर लौट आया। इन चारों दिन-रात के दौरान मैंने जो कुछ महसूस किया वह मौत से अधिक क्रूर था। वह खून कानों से सरकता, गले में अटकता मेरी साँसों को जैसे रोक देता था। हथौड़ों की चोट दिमाग को लहूलुहान कर देती। मैं इन हमलों को लगातार झेलता रहा पर बचने की हर कोशिश असफल होती गयी।
रक्तरंजित शब्द के भीतर जकड़ा हुआ था मैं। कुछ शब्द जन्मजात अपवित्र होते हैं। रजस्वला सिर्फ वह नहीं थी जिसे मैंने अपवित्र किया था, वह समाज भी था, जो सदियों से गंदा खून बहा रहा था। आततायी पुरुषों को उनकी माँएँ माफी देतीं, उनकी बहनें अपने भाई को बचाने में जुट जातीं। बेटों को, भाई को इतना अधिकार दे दिया जाता कि वह किसी के भी साथ, कुछ भी कर सकता है। मैं भी इसी तरह के अहं में जकड़ा था। आरोपों की कड़ियाँ मुझ जैसे पुरुषों को जकड़ कर रख नहीं पातीं, मैं भी मुक्त हो गया था। फर्क सिर्फ इतना था कि खुद अपनी नज़रों से मुक्त नहीं हो पाया। खून के जो दाग उन पलों में लगे, वे अमिट थे। एक नहीं, शरीर का हर अंग उन्हें महसूस करता रहा।
अब यह बात मेरे दिमाग में घर चुकी थी कि इस दर्द से मुक्ति पाना है तो इस देह को मुक्त करना ही होगा। कायरता मुझ पर इस कदर हावी हो रही थी कि आत्महत्या के अलावा कुछ सूझता ही नहीं। कमजोर हूँ। खुद से लड़ नहीं सकता। कितनी लड़ाइयाँ लड़ते रहते हैं लोग, कोई लड़ाई थमती नहीं दिखती। कितने साहसी हैं वे मर्द जो औरतों को अपनी हवस का शिकार बना लेते हैं! कितने निर्भय हैं वे जो अपने शिकार की तड़प से आग पाकर अपनी रोटियाँ सेंक लेते हैं। मैं तो इतना बेबस हूँ कि खुद पर

भी शासन नहीं कर पा रहा। जो हर उठती आवाज को कुचल सकता था, अपने ही भीतर की आवाज से पछाड़ खा चुका था।

मैं, जिसके हाथ सत्ता तक थे। सर्वाधिकार सुरक्षित, जिसके भीतर का मर्द उसी दिन मर गया था। वह नशेड़ी था। उन नशेड़ियों का मित्र था जो औरतों को कपड़ों की तरह बदलते थे। उनमें से कोई एक मर भी जाता तो उन लड़कियों के माथे दोष मड़ा जाता जिन्हें वह भोगता रहा। जिंदा भी रहता तो समाज को कलंकित ही करता। उसकी मौत पर शहर जलते। कई बेकसूर मारे जाते। सत्ता के तंत्र में कितना खून बहा, कितना नरसंहार हुआ, इस पर कौन सवाल उठा सकता है! सांय-सांय करती उस रात ने आज तक पीछा करना नहीं छोड़ा। उस रात के उन पलों का जुनून किसी फुँफकारते नाग की तरह जीवन भर के लिए मेरे गले से लिपट गया। शिथिल होती आवाज उस लड़की से जैसे कह रही थी- “न तुम भूल सकीं, न मैं भूल सका। आज मैं यह जिंदगी तुम्हारे साथ हुए गुनाह के बदले समाप्त करता हूँ। तुम्हारा नाम तो मुझे नहीं मालूम पर तुम्हारा अस्तित्व मेरे दिमाग से हट नहीं पाता। मेरा शरीर और मेरी आत्मा इस बोझ को अब और ज्यादा नहीं सहन कर पा रहे हैं।”

अपने डर के इस चोले का उतार फेंकने को आतुर हो गया मैं। अब और नहीं, आँखों में एक निर्णय था और निर्णय के कारण थोड़ा सा सुकून। उसी धरती पर लौटना था, जहाँ से आया था।

कुछ ही दिनों बाद बरसों पहले हुए अपराध को स्वीकार करने के लिए मैं अपने कस्बे में था।

जेल की काल कोठरी में उमस थी, मच्छर थे पर मेरी आँखों में अब चैन की नींद थी। बरसों से ठहरे हुए पल अब धीरे-धीरे आगे सरकने लगे थे। रात सूर्योदय के लिए व्याकुल थी।

डॉ हंसा दीप , 22 Farrell Avenue, North York, Toronto, ON – M2R1C8 – Canada दूरभाष - 001 + 647 213 1817

लेख - स्कूल बंद है, किताबें भी बंद हैं, क्योंकि दीपावली की छुट्टियाँ जो लगी हैं!

- डॉ मीना श्रीवास्तव

आप सबको दीपावली के आनंददायक पर्व की बहुत बहुत मंगलमय शुभकामनाएं!

आप में से मम्मी, डैडी, नाना नानी, दादा दादी और बाकी सारे पाठकों को मेरा प्यार भरा प्रणिपात, नमन और बहुतसी शुभकामनाएँ! परन्तु एक नम्र निवेदन, आपके घर के छोटे सदस्यों को सादर अभिवादन, पूछिए क्यों? मेरा कहा अंत तक पढ़ेंगे तो आप ही आप समझ जाइएगा!

स्कूली बच्चों की कोई भी छुट्टी, यानी माता पिता और उनकी तरह अन्य लोगों के लिए परीक्षा से कम नहीं, यह अलिखित नियम ही समझिये! और इनमें एक महत्वपूर्ण छुट्टी यानि दीवाली व्हेकेशन! आजकल नियमानुसार वर्षा ऋतु काल आता है, ऐसा बिलकुल भी नियम नहीं है| 'सारे नियम तोड दो' यह गीत गाते हुए वह कभी भी और कहीं भी आ धमकता है| उसी तरह हमारे देश में इतनी छुट्टियाँ क्यों दी जाती हैं, यह प्रश्न अत्यंत यथोचित तथा समयोचित है| इसी कारण अपना देश 'छुट्टियों का देश' इस रूप में प्रख्यात है| प्रधानाचार्य एवं शिक्षक गण तो ऐसी छुट्टियाँ देने को हर वक्त तत्पर ही होते हैं| साथ ही जोरों का धक्का धीरे से लगाते हुए अप्रत्याशित रूप से कोरोना का पर्मनन्ट वरदान पायी हुई अवस्था का लाभ उठाकर 'ऑनलाईन शिक्षा' का प्रबंधन करते रहते हैं| परन्तु मित्रों, अब आप प्रधानाचार्य एवं शिक्षक गणों का सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे या नहीं? उन्हें भी तो ब्रेक चाहिए| उन्हें भी घर के काम काज हो सकते हैं, आप यह सोचेंगे या नहीं? इस मौके पर वे अपने बच्चों की छुट्टी का व्यवस्थापन भी तो करेंगे! इसलिए हमेशा स्कूल में मस्ती करने वाले बच्चों के समस्त घरवालों को अब बच्चों का ब्रेथलेस परफॉर्मन्स देखना अनिवार्य हो जाता है|

स्कूल में नियोजनबद्ध गतिविधियों के लिए नियत अवधि होती है, परन्तु अगर स्कूल न हो तो यह नियोजन नहीं होगा, यह तो मानी हुई बात है| फिर आपके घर में ऐसे सुसंवाद सुनाई देते तो होंगे!

पहला बालक, "मम्मी, कल सुबह सुबह मत जगाना प्लीज़, मैं खुद ही उठूंगा तब, उठ जाऊंगा!”चाहे वह नरक चौदस ही क्यों न हो|

दूसरा बालक, "मम्मी, आज ऑफिस मत जाओ ना! घर में ही खूब मस्ती में टाइम पास करेंगे!” यानि तुम एकदम टेस्टी ‘ऐसा-वैसा’ कुकिंग करना और मैं खाऊंगा! मित्रों, इसमें चकली, सेव, चिवडा, कडबोळी, बोले तो हमारे समय सिर्फ दीवाली के त्यौहार में मिलने वाले लड्डू, अनारसे, शक्करपारे, चिरोटे जैसे ट्रेडिशनल या प्राचीन डिशेस का अंतर्भाव सम्पूर्णरूप से वर्जित है जी!

एक चिरंजीवी बच्चू "मम्मी, आज जरा घर ढंग से लगाकर ठीक-ठाक कर लेना, और बढ़िया स्नॅक्स, कोल्ड-ड्रिंक का प्रिपरेशन करना अर्थात पिझ्झा, बर्गर और अन पास्ता!! मेरे फ्रेंड्स आने वाले हैं और हम एन्जॉय करने वाले हैं|”

एक चिरंजीवी बच्ची, "मम्मी, अभी-अभी तो छुट्टी लगी है, पढाई कर-कर के बोरियत महसूस हो रही है, मैं पहले ही बता रही हूँ, मुझे थोड़ा रिलॅक्स होना है, यानि दीवाली के पहले की साफसफाई, पंखे पोंछना, जाले निकालना, आदि कामों की फेहरिस्त में मुझे इन्क्लूड मत करना हां!

एक अत्यंत दयालु किशोर देखिये क्या कह रहा है, "मम्मा, आज तुम थक गई होगी ना दीवाली की साफसफाई और नाश्ता बनाते बनाते! अब ना तुम्हारी किचन से छुट्टी! कितना कुछ करती हो न हमारे लिए, आज तुम पूरी तरह आराम करो तो!" माँ सोच रही है, 'आज मेरे बच्चे मेरे लिए खाना बनाएँगे|' पर हाय री किस्मत! बच्चों की तैयारी कम्प्लीट हो गई है, पूछिए किस चीज की? मेन्यू भी डिसाइड हो गया है| अजी, वे बाहर महंगे रेस्त्रां में मेक्सिकन और थाई फूड गटकने को तैयार हैं| बच्चा पार्टी के डॅड हैं ही, कार ड्राइव्ह करने और बिल पेमेंट करने को! डॉक्टर मीना श्रीवास्तव

मित्रों, अब मैं इसी क्षण फ़्लैश बैक मोड में चली गई हूँ! नवरात्री के परम पवित्र नौ दिन और थोड़े नहीं बल्कि गिनती का एक पूरा महीना भुलाबाई के गानों के दिन| (भुलाबाई का त्योहार महाराष्ट्र में प्रचलित एक त्यौहार है| इसमें पार्वती माता और शंकर भगवान की पूजा की जाती है, उन्हें लाड प्यार से क्रमशः भुलाबाई और भुलोजी कहा जाता है, साथ ही मजेदार लोकगीतों से लैस खेलकूद और बहुतसे व्यंजन! लड़कियां यह सब अति उत्साह और धूमधाम से मनाती है| बदलते समय के अनुसार इसकी रौनक अब कम हुई है|) यह कोजागिरी पूर्णिमा को संपन्न होता है| उस एक महीने भर के लिए हमारा डिनर बाहर ही होता था| भुलाबाई के रसीले गाने गाते हुए हमें थकान महसूस न हो, इसलिए घर घर की माताएं बहुत सजग रहतीं थीं| खूब पेट भर खिलाया हुआ मेन्यू रिपीट होता ही नहीं था| हम भी मानों बरसों से भूखे रहे साल भर का कोटा, उस काल खंड में (एक से बढ़कर एक) नाश्ते कम खाने को गटकने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे|

हर एक घर की माताराम को बहुत कष्ट उठाने पड़ते उन दिनों! हम शहर में रहते थे, इसलिए गांव की परंपरानुसार सब महिलाओं को एक जगह इकठ्ठा होकर काम करना संभव नहीं था| नौकरीशुदा लोगों को दीवाली की छुट्टियां गिनती की होती थीं| फिर भी जहाँ तक संभव हो पहले से ही बनाये हुए नाश्ते के ढेरों व्यंजन, पीतल, ताम्बा और थोड़े बहुत चाँदी के बर्तन साफ़ करना, घर को तमाम कोनों सहित यथार्थ रूप में स्वच्छ करना, पूजा पाठ की सामग्री, उबटन, ऐसी कई चीजें, जितने जमें उतने पटाखे, घर में ही बनाया हुआ आकाशदीप और मिटटी की दियाली (उन्हें अंदर की तरफ गीले चूने से लीपने की प्रथा थी, उसके कारण दिए की अंदरूनी सतह तेल सोखती नहीं थी)| पाठकों, बजट के अनुसार नए कपड़ों की खरीददारी होती थी! आज की पीढ़ी के हाथ में पैसे होते हैं, इसलिए जिस दिन मन में आया, उस दिन दीवाली होती है| बताइये तो, हम लोग दीवाली में चकली, सेव, चिवडा, गुझिया, अनारसे आदि खाने की आस रखे रहते हैं क्या? हम सब कपडा गहने, वाहन आदि की खरीददारी करने के लिए बलिप्रतिपदा की प्रतीक्षा करते हैं क्या? इसका कोई रोमांच ही नहीं रह गया है, क्योंकि हम अब ‘बारोमास खरीददारी के ही मोड’ में होते हैं| गाँव में ऐसी अवस्था नहीं होगी ऐसी केवल आशा ही कर सकती हूँ| परन्तु गाँवों का जिस तेजी से शहरीकरण (अरबनाइझेशन) हो रहा है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि, शायद वहाँ भी यह खरीदफरोख्त का रोग फ़ैल गया हो!

फिर हमें क्या करना होगा, जिससे बच्चे इस दीवाली की छुट्टियों का सच्चा आनंद उठा पाएंगे? मैं जो उपाय साझा कर रही हूँ, वे अर्थात मेरे विचार हैं| देखिये, क्या आप इनसे सहमत हैं?

सबसे बड़ी बात! दीपावली का पर्व घर पर ही मनाएँ| मित्रों, सबको आनंद का अनुभव देने वाला यह एकमात्र सर्वसमावेशक त्यौहार है| वसुबारस गाय और बछडेका, धनतेरस धन्वंतरी पूजा का, नरक चतुर्दशी (छोटी दीवाली) संपूर्ण स्वच्छता का, श्रीकृष्ण ने इसी दिन नरकासुर का वध किया था! प्रमुख त्यौहार (बड़ी दीवाली) दीपावली, अर्थात

दीपों की कतार, वैभव और समृद्धी प्रदान करनेवाली विष्णुपत्नी लक्ष्मीमाता का सम्पूर्ण भावभक्ति से पूजन करने का! उसी तरह अमावस की अँधेरी रात्रि को अपने पवित्र उजाले से जगमग करने वाले मिटटी के दियों का| इन छोटीसी मिटटी की दियालियों का मान इतका बड़ा कि, इस दिन उनकी पूजा की जाती है| बेशकीमती बिजली द्वारा निर्मित चमकदार रोशनी के प्रकाश पुंज भी इनके सामने फीके लगते हैं|

बलिप्रतिपदा (पड़वा) यह साढेतीन मुहूर्तों में से आधा मुहूर्त ऐसा पावन दिवस है। वर्ष में एक बार पाताल से पृथ्वी पर आने वाले दानवीर बली के पूजन का और गोवर्धन पूजा का, श्रीकृष्ण को छप्पनभोग अर्पण करने का| इसके साथ ही पति पत्नी के नाते का सन्मान करने का, यानि पति ने इस दिन पत्नी को कुछ भेंट देना अनिवार्य है! यमद्वितीया यानि भाईदूज यानि भाई और बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक ऐसा यह त्यौहार! पाठकों, पहले के दिनों में पांडव पंचमी, कार्तिक एकादशी, द्वादशी के दिन तुलसी विवाह और कार्तिक पूर्णिमा तक दीवाली मनाई जाती थी! इसके अलावा इस दीपपर्व के आनंद में सम्मिलित होने वाले सगे सम्बन्धी और मित्र मंडली से इस सर्वांगीण त्यौहार की परिधि को पूर्णत्व मिल जाता था!

अगर बड़े बुज़ुर्गों ने युवा एवं बालकों (कभी कभी तो अभिभावक भी) को छुट्‌टी के अवसर का लाभ उठाकर दीवाली का यह भव्य रूप समझकर बताया तो, प्रत्येक दिन की हुई पूजा मात्र औपचारिक नहीं रहेगी| घर में बच्चों को चाव से साफसफाई करना (जाले निकालना और पंखे स्वच्छ करना यह प्रमुख कार्य), नाश्ता बनाने में मदद करना, आकाशदीप स्वयं ही तैयार करना, मिटटी की दियालियों को रंगों से सजाना, फूलों की माला गूंथना, पूजा के बर्तन स्वच्छ करना, अपनी अलमारी या स्वतंत्र कमरा हो तो वह ठीक ठाक करना, ये समग्र उपक्रम हाथ में लेने होंगे| देखिये बच्चों, आपकी माताजी कितनी प्रसन्न होगी! इस साफसफाई के बहाने अनचाहे कपडे, स्टेशनरी, कॉपियां, किताबें, आदि जहाँ तक हो सके, गरीबों को दी जा सकती हैं| दीवाली का नाश्ता अगर अनाथाश्रम या वृद्धाश्रम में दिया जाये और वहां एकाध दिन दीवाली मनाई जाए तो सोने पर सुहागा! बच्चे अपना पॉकेटमनी का पैसा यहाँ पर दान कर सकते हैं| मित्रों, इस पर सोच विचार कर देखिये! - डॉक्टर मीना श्रीवास्तव

बच्चों की कलाकारी की क्षमता को बढ़ावा देने वाली दीवाली की एक खास चीज है, किला बनाना! इसमें कल्पनाविलास का उपयोग करते हुए उपलब्ध सामग्री से सुन्दर किले बनाने का मजा कुछ और ही है| प्रतिस्पर्धा की भावना जगानी हो तो सोसायटी/ परिसर में प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है| परन्तु हर किले को कुछ न कुछ पुरस्कार देना ही चाहिए|

एक सुझाव है, कम से कम दीवाली के दिनों में बड़े सवेरे उठकर अभ्यंगस्नान करने का महत्त्व समझ में आ जाये तो, बच्चे आमूलाग्र रूप से अभ्यंगस्नान करने को जरूर तैय्यार हो जाएंगे| शायद उन्हें बड़े सवेरे उठने की आदत भी पडेगी! वैसे भी आजकल कुछ खास सर्दी नहीं है| वह कहाँ और क्यों खो गई, यह हमें मालूम होना जरुरी है, क्यों, है न?

अब एक गम्भीर चेतावनी! पटाखों के जानलेवा खेल की! आग की दुर्घटना, हाथ, पाँव अथवा आँखों को चोट लगना, कभी शरीर का जलना, ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और पैसे का खर्चा, एक, दो, तीन कितनी गिनती करें! अब तो दुर्भाग्य ऐसा है कि, आये मौके पर पटाखों की माला जपना सामान्य हो रहा है| अब उसपर एक चिंताजनक विपदा, लेजर किरणों की! पटाखे खरीदना ही नहीं, यह उपाय थोड़ा जालिम है, इससे बच्चे कंपनी बहुत उदास हो जाएगी भरे त्यौहार के माहौल में! यह पूरा प्रदूषण रोकना है तो, कार POOLING की तरह पटाखों का भी POOLING

किया जा सकता है| हर परिवार ने सोसायटी (परिसर) के पदाधिकारियों को या नियुक्त समिति को पैसे देकर, फिर उन लोगों ने खालिस नैनसुख देने वाले, ध्वनि विरहित पटाखे नियोजित स्थान और नियोजित समय पर लगाए तो सोसायटी के लोग इसे बहुत एन्जॉय करेंगे| चाहे तो एक दिन नियुक्त कर सोसायटी में सामूहिक दिवाळी प्रभात (परन्तु कलाकार स्थानीय हों) और दीपावली के नाश्ते का भी इंतजाम किया जाए तो मजा आएगा| वैसे भी बड़े शहरों में रिश्तेदारों से अपने सगे पडोसी ही हमारे लिए अमूल्य साथी होते हैं|

प्रिय पाठकों, दीवाली की कुछ चीजें मुझे अखरती हैं, अपने वैभव का प्रदर्शन करते हुए महँगे गिफ्ट देना, दीवाली की रात्रि में लाखों का जुआ खेलना और बाहर पार्टियाँ मनाना| अगर बड़े ऐसा करते हैं, तो बच्चों को दीवाली का विकृत रूप ही दिखाई देगा! इसके बजाय बच्चों द्वारा घर में बनाई हुई भेंट वस्तुएं और ग्रीटिंग (भेंटकार्ड) कितने सुहाने और सलोने लगेंगे! हैं ना? मित्रों, मेरे ये विचार आपको जंग लगे पुराने बर्तनों के माफिक लग रहे हैं क्या? एक बार ठन्डे दिमाग से सोच कर तय कीजिये| अब सम्पूर्णतः दीवाली मनाने के उपरांत छुट्टीके बचे दिनों का प्लॅनिंग करना चाहिए! काम करते करते थक गए हों तो ब्रेक तो बनता ही है| शीतकाल का मौसम ही सत्य में सीजन है पर्यटन करने का! लेकिन इसमें से मॉल, संस्कारशिबिर, शीतकालीन शिबिर की छुट्टी करते हुए, किसी प्राकृतिक आनंदमय, प्रदूषण विरहित छोटेसे गांव, पहाडी इलाके, बन और बाग़ बगीचों आदि का प्रवास करें तो, दिलो दिमाग फ्रेश होने में अवश्य ही मदद मिलेगी।

आप सबको फिर एक बार दीपावली के मंगल पर्व की बहुत शुभ कामनाएं! दीवाली का भरपूर आनंद उठाईये, उसे बाँटकर द्विगुणित कीजिये| देखिये तो आपके हाथ के दिये द्वारा किसी अँधेरे घर में दीप जल सकता है क्या? 🪔🪔🪔🪔🪔

डॉ. मीना श्रीवास्तव - **ठाणे मो क्रमांक ९९२०१६७२११, ई-मेल -drmeenashrivastava21@gmail.com**

कविता - दीपों की मौन अभिव्यक्ति - हेमन्त बावनकर

सबके हिस्से सफलता की सीढ़ी
उसके हिस्से अंधेरी गली कूचा।
सीमा पर शहीद सैनिक पुत्र ने
अपनी विधवा माँ से यूं पूछा -

रंग बिरंगे वस्त्र पहिनाकर
तुम तो प्रसन्न हो जाती हो।
फिर क्यों इन श्वेत वसनों में
लिपटी तुम खो जाती हो।

श्वेत वसना माँ, पुत्र को देख
पहले तो जी भर कर रो ली।
वात्सल्य प्रेम से ओत प्रोत
सीने से लिपटाती बोली।

मैं हूँ माली उस बगिया की
जिसमें फल-फूल पनप रहे हो।
जी भर कर लहू सींचा है मैंने
जिसको रंग बिरंगे समझ रहे हो।

मैं तो सोच रही हूँ बैठी
इन श्वेत वसनों में खोई।
तेरे बापू सा तुझको मुझसे
अलग न कर ले कोई।

प्यारे बापू का नाम सुन
नन्हें के नेत्र भर आये थे।
लाल सेब से गालों पर
मानों मोती झर आये थे।

वह सैनिक का वीर पुत्र था
या आग का धधकता शोला।
जो माँ के सम्मुख खड़ा हुआ
कुछ पूछता समझाता बोला।

माँ, कौन कहता है कि -
बापू हमसे अलग हुये हैं?
मैं कहता हूँ कि वे तो
चिर निद्रा में लीन हुये हैं।

जब शहीद कभी नहीं मरते
और अमर कहलाते हैं।
तब फिर क्यों तुम विधवा
और हम अनाथ कहलाते हैं?

आज दीपमालिका पर जब
घर घर दीप जले हुये हैं।
तब फिर क्यों हम इस
अंधकार में डूबे पडे हुये हैं।

माँ तुम आँसू पोछो अपने तब
बापू चित्र पर दीप जलाउंगा।
और जब तक न मुस्काओगी
मैं फिर पटाखे नहीं छुड़ाउंगा।

मां की आंखों के साथ अब
गला भी भर आया था।
खिल उठा उनका चेहरा
जो अब तक मुरझाया था।

शहीद पति चित्र के सम्मुख
फैला दी आँचल की झोली।
और आंखें पोंछ भरे गले से
नन्हें को लिपटाती बोली।

जब शहीद कभी नहीं मरते
और अमर कहलाते हैं।
तब फिर क्यों हम और तुम
विधवा-अनाथ कहलाते हैं।

छोटे मुंह बड़ी बात पूछी है
बेटे कैसे तुझे समझाउंगी?
तू अनाथ समझेगा तो
मैं तेरी माँ कैसे कहलाउंगी?

यह है विधि की विडम्बना
जो मुझको आज परखती है।
तेरे बापू की आत्म शांति पर
दीपों की मौन अभिव्यक्ति है।

अब कौन कहता है कि
हम अंधकार में डूबे हैं?
बहुत उजाला है तुमसे
तुमसे सब मंसूबे हैं।

उठो अपने बापू चित्र पर
दीप प्रज्वलित कर दो।
इसी तरह मेरे आंचल को
खुशियों से तुम भर दो।

हेमन्त बावनकर, पुणे

1 फरवरी 1982

Poetry - Farming of Flowers… Capt. Pravin Raghuvanshi, NM

Millions of lamps burn
on the eyelids of the twilight,
ushering the countless dreams
in the unfathomable depths
of the surreal imagination…

As the hands raise in prayers
Continually, an avalanche of
cosmic waves keep turning
them into celestial flowers...
Divine fragrance keeps spreading
enveloping the lives around…

Alas! It still can't reach
the merchants of death–
who are obsessed with
the demonic desires to
grow the crops of gunpowder,
laced with the blood of the innocents

Will someone explain it to them
that with the little effort
Flower farming is more profitable;
and your existence starts
smelling with the divine fragrance
along with the whole universe...!

Capt. Pravin Raghuvansh, NM - Pune

Story - Wickets Never Fall - Dr. Amitabh Shanker Roy Choudhury

Afreen's name was most suitable for her. In Kashmiri, 'afrin' means bravo! And she was really a brave girl.

There, in the state of Jammu and Kashmir, is a village named Nabipura, in the district of Kulgam. Afreen lived there with her parents, grandparents, one brother and two sisters.

Her father Matin (means 'patience') worked in the apple orchard of Haji Zunaid. (It's the name of a great sage of Baghdad). Among Muslims the persons who go to the holy places of Mecca and Medina for hajj, a pilgrimage, are called the hajis. They're held in high esteem. Haji Zunaid was a kind-hearted man. He didn't treat the persons working in his orchard simply as labours. While they would trim the trees or pluck the apples or fill the baskets with them and pack them for delivery, quite often he would stop and ask, 'So Matin, how is life? How is your old man at home? And your family? Blessed, are they?'

'Salaam alaykum (Peace be upon you!), sir.' Matin or for that matter everybody else would raise his hand with a bow and smile, 'By Allah's grace, everything is fine.'

Those were the days when every hour was full of anxiety and turbulence. Naturally it was a divine blessing to live with family in peace. Particularly the western part of Jammu and Kashmir was ablaze. The so-called terrorists would attack a bazaar or a mosque or a military vehicle any time at any place. But Kulgam, somehow, remained an isle of peace in the ocean of fire.

Afreen had to help her father in the orchard. She was the only helping hand to her mother in the kitchen. Someday she would go out with her brother Imroz (today) into the nearby forest to collect woods for the kitchen.

One day, at dusk, the sister - brother duo was returning home. Each was carrying a bundle of woods and twigs, tied with rope, on his or her head. On the western sky

the sun was sinking behind the chinar and deodar treetops. Their long shadows were spread across the dirt track through the woods. The bushes and grass were all gone because people would often use this to enter into the deep forest. Only a few weeds grew by the side of the path.

They were hurrying to reach home because anytime it would be dark inside the jungle. Just to ward off the fear they were chatting jovially.

‘Jiji (sis), do you know what happened this morning when we were playing cricket in the ground.’

‘And what was it, my dear brother?’

‘Twice I hit the ball hard and sent it to the top of chinar.’

‘Really?’ Afreen couldn’t check her giggle.

‘No joke. I’m telling you the truth.’

‘Imroz, you can touch the top of chinar with your words only but not with the ball you hit.’

‘It’s sad jiji, that you don’t believe your own brother.’

‘O.K, now don’t make a face. And then -?’

‘By Allah! I’m not lying.’

Then suddenly the whole air of the forest was abuzz with a peculiar sound. Buzz …., buzz …….

Soon the reason was seen. A swarm of honeybees came buzzing from all directions.

‘What happened, jiji?’ Imroz was taken a back.

‘Be careful and mind your steps.’ Afreen came forward to shield her brother.

A few steps ahead, a big honeycomb was there, hanging from the branch of a tree. A mother black bear had climbed up the tree trunk. It was eating honey from a chunk of the comb. Her cub was looking up in expectation from the ground.

‘Stop. If we go near the tree, it’ll think we’re going to harm her cub. So it’ll attack.’ Afreen took her brother behind the trees on the other side.

‘Oh, jiji, these nasty bees! They’re biting my face. Oh, it burns!’ Imroz was very much scared.

‘Cover your face with that cloth. But keep the eyes open. Pushing the bundle forward on the ground, we must crawl behind the trees. After that we’re in safe haven.’

Afreen, neither was nervous nor she lost her head. She always kept a cool head. And that day, it was simply because of her courage that both of them could escape any untoward happening.

Although, that day, she didn’t let any harm come to her brother, but a few days later, it was quite difficult for her to protect her younger sisters Bani (initiator) and Razi (happy). What happened one afternoon and the days that followed is a profound story of her sheer courage and singlemindedness.

One afternoon, once their school was done, all the three sisters were returning home with their friends. Three of the girls had their faces covered with hijab, a head scarf. The rest had put the scarf over their heads only, leaving their faces uncovered.

A discussion about the Kashmiri sportswomen was on in the way. Roushni said, ‘You know? An all-women Rugby team of Kashmir is there. Abbu (dad) read it in the newspaper.’

‘And princess, what that rugby is?’

‘In this, they play with an oval ball which can be kicked or carried by hand. All the players jump upon the opponent to stop him carrying the ball. Sometimes it seems to be a wrestling with a ball.’

No sooner had the girls giggled than their giggles were just choked.

Two bikes screeched to a halt just across their way. There were three young men sitting on one bike and two on the other. The driver of one bike shouted at them, ‘Hey girls, why do you go to these unholy schools? By studying there what do you want to become- doctor, engineer, officer, or a leader? A big shot?’

They had their faces covered with black cloths. Another biker, who had pulled the covering from his mouth, shot another salvo, ‘Don’t you girls read holy Koran?’

All of them were shaking like leaves in a storm. Afreen was nervous too. She couldn’t dare to utter a single word. Everyone prayed in silence for this storm to fade away.

‘What happened? Are you guys simply dumb? Answer me, do you ever read Koran?’ Getting irritated he took out his rifle and tried to hit Roushni, standing just in front, with the butt on her face.

‘No, no! Please don’t.’ Afreen jumped between them to shield Roushni from getting hurt, ‘We all read Koran at home.’

‘Just recite any ayat (a verse of Koran).’That man commanded.

‘……Make not your own hands contribute to destruction; but do good; for Allah loveth those who do good.’ Afreen recited boldly. God only knows why this particular ayat came to her mind.

‘O.K. we must not see again you girls going to that unholy place. Just stay at home, understand?’

They were all pretty bad guys. Terror worshippers. They started threatening all the principals of the girls’ schools, ‘Just keep your school gates closed. Girls are not supposed to read all these nonsenses. They must study only the holy book at home.’

The name Kulgam had evolved from Sanskrit ‘kul’, meaning a clan and ‘gam’, that’s a village. But now the clean blue sky overhead the peaceful village of Nabipura got covered with black clouds. People started living under a constant terror. They wouldn’t venture to go out after the dusk.

Just on the north-western horizon of Kulgam stands the Pir Panjal Mountain range. So, it was not easy for any wicked soul to cross the border and infiltrate into our land. But it did happen, nevertheless. And now the blood thirsty wolves were in Kulgam, howling their diktats.

Afreen felt restless. Although she was not among the toppers of her class, but for her sports activities she was quite liked by the girls and the teachers alike. As a caged bird keeps on flapping its wings for freedom, she too, with scary thoughts gnawing at

her, was mulling over a way out. Without surrendering to those evil diktats. Two days were passed and one fine morning she was there knocking at the door of one of her friends. As soon as the door was opened to her, she started, ‘Saba (a cold breeze), just think. Shall we accept all these hands down in silence? Why?’

‘Sh! Keep your voice down!’ Saba put her hands on her friend’s mouth, ‘First come inside. Don’t be crazy. Who knows who is listening? And they may report it to those scoundrels.’

Both of them sat near the khangri, an earthen pot in which the Kashmiris put burning coal or twigs and hang it near their waists to warm themselves up.

Afreen was visibly agitated, ‘Saba, my darling, please suggest me something. What next?’

‘What can we do? We’re helpless. Afreen, don’t forget, they will not only punish us but they may attack even our parents, our brothers and sisters.’

‘But what of now? Will we just sit in the corner of our houses without going to school? Forbidden to play even?’

‘What are you two buddies talking so earnestly?’ Saba’s ammi came up with three cups of kahwa chai, a Kashmiri saffron tea, prepared without milk.

Immediately Afreen charged her, ‘Khala (mother’s sister), you just tell me. Simply because we are girls, so we can’t go to school? Can’t play in the ground? Just because those humbugs forbade us?’

‘Yes, I know, beti. We’re but old fools. If you can fight for your right, all my blessings will be with you!’

Saba was the nervous type. Naturally she wouldn’t dare much. So, without seeing a glimpse of hope Afreen came out. But she avoided the main road to her house. Instead, she took to the grit covered street that ran beside a canal, behind the columns of pines and deodars. A few maple trees were standing there, spreading all around their three peaked leaves. This canal is linked to the river Veshav. Long ago, Syed Simnan, a famous mystic saint, lived on its pristine bank.

Afreen, buried in her thoughts and worries, wouldn't see anything particularly, walking along the side of the street. But she was fully cautious not to be seen by those rifle wielding cowards. Nevertheless, though unaware, the sight in a side alley caught her attention.

A few little boys were playing cricket with a wide wooden plank. Their ball was quite worn out but wrapped with pieces of cloths. Absentmindedly she was looking at them. She thought, 'Brothers, you're so lucky! See, you can play, you can go to school. You can live the life of your choice, but we -?'

'Ouch -!' suddenly she shrieked in pain.

A little batsman had hit the ball and it dropped on her thigh.

'Sorry jiji.' a little fielder ran to her. He was scratching his head, 'Just an accident. Give me the ball, please.'

Afreen picked up the ball. As she walked two steps to give it to the little cricketer, these words just crept out of her mouth, 'Will you let me play with you?'

Afreen herself was unaware of what she had said. Also, the boy was not ready for this proposal either. With an open mouth he said, 'Jiji, will you? Really?'

Rest of the cricketers rushed to them, 'Oh, what are they talking about?'

And the moment they came to know about the point of their discussion, they simply burst out in a roar, 'Our jiji is a Harmanpreet Kaur!'

Harmanpreet was the captain of Indian women's cricket team at that time.

For more than an hour she played with them and in the meantime, she decided that playing cricket only she would give a fight to those wretched fellows. She made up her mind to ask Roushni and Ramzani (named after the holy month of Ramadan) -and many of the girls. Some were with her in class six. Others, her seniors, or juniors.

That afternoon when her mother, Kadira (the strong), sent her to the orchard with Matin's lunch, her granny Alia (great) accompanied her, too. Even though her grandpa, Nasir (who helps), was a bit timid, saying always, 'You can't go against the will of those terrorists. They can go to any extreme to teach you a lesson.' But Alia was a courageous woman. She would say to her granddaughter, 'The birds can fly anywhere

they want. The clouds can sail anywhere in the sky. Then why the girls can't study or play as they please?'

It was her blood in Afreen's vein that was seeking madly the light in a blind tunnel.

Haji Zunaid was seated on a string cot, enjoying his post lunch hookah. He welcomed them, 'Afreen, what I hear from others is pretty disheartening. Are you girls scared to go to school? Oh, Allah!' He breathed out noisily and said, 'Beti, you know? Our nabi (prophet) Hazrat Mohammad knew the importance of books. He said, 'Just to read a book, if you've to go to China, then you must!' But these wicked fools don't even bother for his sayings.'

Now grandma Alia came forward to bat on the pitch, 'Sir, can't you do anything for these poor girls? Can't they study or play anymore?'

'Certainly, they can.' Zunaid turned to Afreen then, 'Ask your friends to come over here. Here you can study and play too, in my orchard. I know it's a bit dangerous game. But one must have guts. And remember, Allah helps them who have the courage.'

Past that mid night the valley had its first snowfall. Haji and his men were happy because the apples were already plucked and packed. Now there was no question of their getting ruined. Later, when this snow would melt, it would help in irrigation of the orchard.

Next morning, Afreen went out to persuade her friends. Alia was with her, too. She tried to convince the mothers of the girls, 'Bibi, you see, don't ruin your daughter's life simply by your cowardice. We, the women had had enough to suffer. Let the girls study, play and laugh.'

Even the stars in the sky don't appear all at a time. The girls had their own hesitations and justified fear. Still one by one they came to the orchard. Nabipura girls' cricket team was formed. They were studying in the morning and playing in the afternoon. The sun had melted the snow and the field had become muddy. But Roushni rubbed her hands in glee and said, 'See friends, it's our Wankhade stadium of Nabipura!' (Wankhade stadium is in Mumbai.)

Afreen was bowling and Saba was at batting crease. Saba hit the ball and Roushni was running for a catch.

Everyone shouted in excitement, ‘Catch it. Don’t miss the ball.’

Stretching out her hands Roushni was running, but aargh -! She slipped on a puddle. Everyone giggled and ran to help her stand.

Haji sahib, witnessing everything smiled and said, ‘Alas! The cooking was marvellous, but we couldn’t savour the food!’

It was really a hot news in the locality. Within a few days ticketless spectators, sitting on the branches of trees outside or peeping through the fence, started encouraging them, ‘Afreen’s bowling just like Mithali Raj.’

Others would exclaim, ‘No, no, she’s Nabipura’s Jhulan Goswami.’

Both were former captains of women’s cricket team.

But the life’s walk is not so smooth. The devils couldn’t just sit twiddling their thumbs.

Just a week later when the girls were playing in the orchard they came again. Zunaid sahib had anticipated this. He had already posted a boy, Gufran (liberation), near the entry, to keep a watch. As the two bikes stopped, Gufran ran inside, shouting, ‘They’re here.’

One of them fired a shot in the sky. Hearing this, the girls ran for a cover behind the trees.

They got down from the bikes and rushed inside. One of them shoved the oldman, yelling, ‘How dare you let them play? Where’s that bitch of a girl?’

‘In the name of Allah, don’t hurt them. They’re innocent.’

But the militant whacked him, and he fell.

Afreen couldn’t stay in her hiding. She rushed to them, ‘No, no harm to him.’

Two of them jumped upon her and started beating, ‘How dare you ignore us?’

The news of their attack had already spread like a wildfire. Alia had a premonition. She had already made a plan. She started hitting a gong with a stick. It was a call for action. Soon all the villagers came running with stones in their hands. They reached the spot and started pelting the stones upon the devils.

'Oh, oh!' Pressing their heads two of them fell on the ground. Others let the hold of Zunaid go. They were abusing everybody.

The girls came out from their shelter. They too joined the war. Stones were being showered on those wolves from everywhere. Today even Afreen's dadajani Nasir was among them, throwing stones.

The cowards could not stand this attack anymore. Each of them was injured. They rushed out to ride their bikes for an escape. But they couldn't.

Alia and Matin had already informed the local police. They were already there to welcome them into jail. Their ultimate destination!

Afreen and all the girls ran to Alia, 'Dadi, you're great!'

Alia drew Afreen close to her bosom, 'Our land is a paradise. Here, there's no place for the satans!'

****

Dr. Amitabh Shanker Roy Choudhury - Flat no. 301. Fourth Floor. Tower no.1. Mangalam Aananda, Phase 3A. Hajyawala Colony. Rampura Road. Sanganer. Jaipur 302029. Rajasthan. Mob: 9455168359. Email: asrc.vns@gmail.com

Poetry - The Future... - Miss Radha Unmesh Mulay

Oh! The future! What a place it will be!
Man will zoom around in the sky you see
How fast will society advance!
All of us swaying to a computer's dance
Countless activities will be enhanced,
As among us all, robots shall prance!

Oh! The future! Everyone will be same!
All will be equal in life's witty game.
No more discrimination will go around
Together we shall be strongly bound
Happiness as king, shall be crowned
Life's inner peace by all will be found!

But if we ignore nature's plea
All life will cease, you see
Preserve our future, strong and tall
By paying heed to a crucial call
"Save our Earth! Use the 3 R's!"
To make the future sustainable for all!

Oh! The future! Full of technical boons!
Rocket ships and visits to the moon!
To make this dream come alive you see,
| must embrace the voice of nature around me
Care for the Earth for future generations,
To make our future a series of celebrations!

Miss Radha Unmesh Mulay - Pune

Article - An Adventure to Save the Great City of Athens - Miss Ira Gautam

On a bright and sunny day, by a deep-sea blue lake, were the two siblings: Stella and Nicholas fishing. In the tingling breeze, the intelligent young woman observed the curious birds chirping merrily, the naughty boy focusing on fishing. Stella had bright red hair, whereas Nicky had cinnamon brown hair. Distinguishably, the two siblings both had cantaloupe orange skin and had a few freckles here and there. Moss green branches surrounded the ocean blue lake, the forest was filled with peanut brown wood on which rested lush green leaves.

Quite a distance away, a storm stirred; the two siblings hiked up Mt. St. Helens to their house packed with unmistakable love and warmth. When they reached home, their mom, who loved cooking, greeted them. While their father was a nerd, the interesting woman was great at helping the two youngsters. Cooking was mum's favourite hobby. The brother & sister explored the kitchen, they found something quite peculiar: a jar of rock salt. Everyone was either allergic to it or did not like it. A moment later, there was a strange knock on the door. "Come in," shouted Nicky. A bearded figure shuffled in. "Take care," he mumbled under his breath, he narrowed his eyes and barged out the oak door.

Thinking a wide range of thoughts, the children wondered about what the mystery man had said; lunchtime came by and went- they didn't even take one bite out of their delicious lunch. Rain was pouring and thunder was booming- just then, the rain stopped. No thunder. No lightning. The kids went out to play, but the mysterious man was waiting outside. He took a deep breath. "You really do need to help your hometown, really, you do!" the old man rushed through the conversation, "Hurry! Get

in this portal!” The three of them jumped in. At the speed of light, the children zoomed and then came to a stop. They were in the city of Athens, their hometown. The place was bizarre! Catapults everywhere! Amazed, Stella whimpered, “War…”

With grenades flying everywhere, the man’s shirt transformed into full greek armour, “Got to help!” cried the man. The kids had to sneak away to safety. Cautiously, they went to the house where dad had grown up, but there was a feeling that there just might be happiness here after all. Although there was a war going on outside, Stella was not hyperventilating- instead rather calmly, the curious girl smoothly hovered her hand along the walls. Right there, at that moment, was a bump; on that very bump was a wheel. That really got the attention of Nicholas. They both together turned as it opened. A vault. Inside was a jar, a jar of rock salt but it was not ground. Crash! “Oopsies!” Nicky was now crying. They decided to move on and crept out and soon realized with relief the battle had stopped.

After peace returned to Athens, at the very middle of midnight, the scene around them changed back into the peaceful mountains of Norway. No mystery man- no battle just clear morning sunlight. The two siblings told their parents about the glorious adventure they had just experienced. Soon enough, the curious adults started to believe each and every word as they looked again into the kitchen cupboard and saw that the mysterious jar of rock salt had disappeared.

Miss Ira Gautam, Mumbai

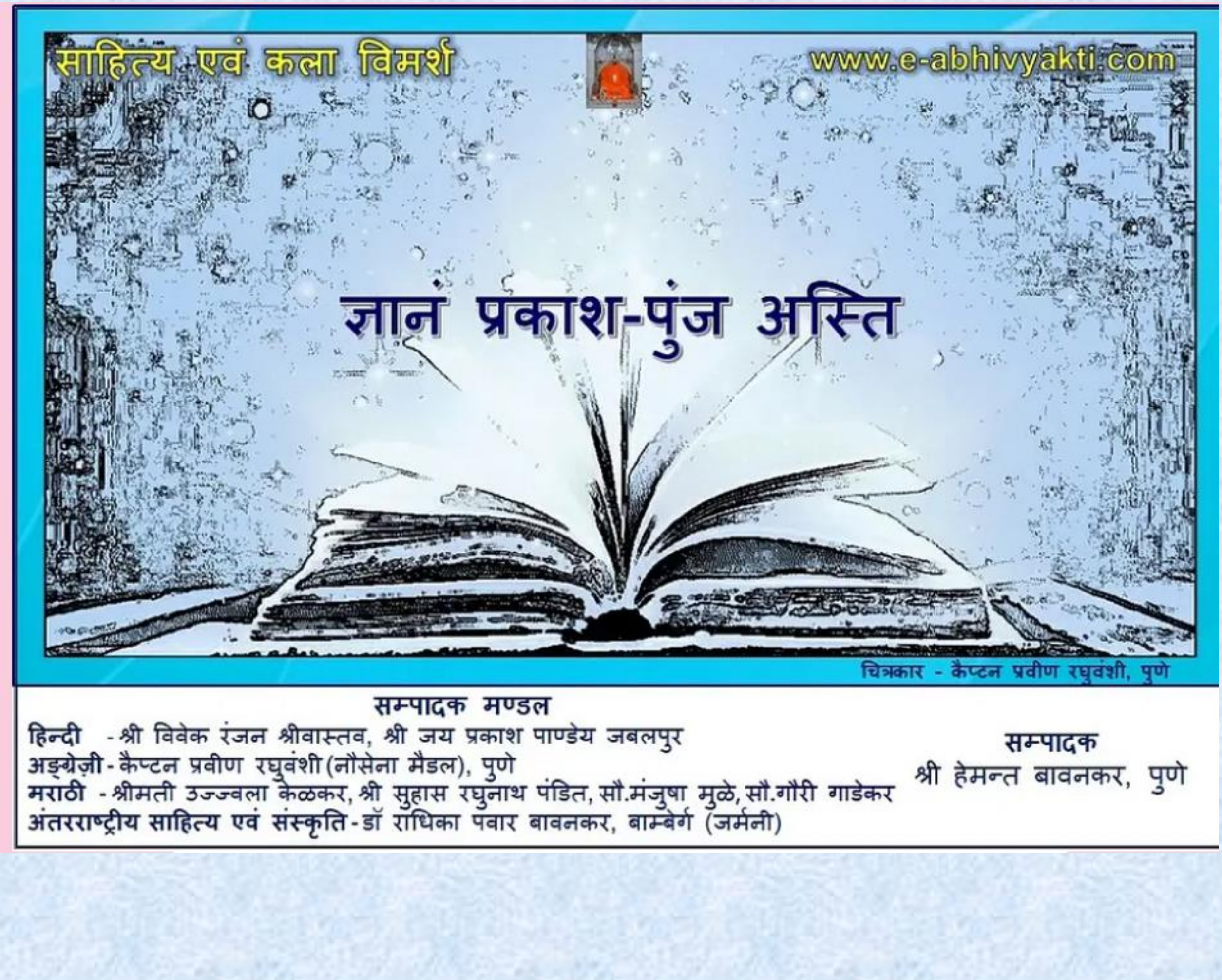
साहित्य एवं कला विमर्श
www.e-abhivyakti.com
ज्ञानं प्रकाश-पुंज अस्ति
चित्रकार - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, पुणे
सम्पादक मण्डल
हिन्दी - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव, श्री जय प्रकाश पाण्डेय जबलपुर
अङ्ग्रेज़ी - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी (नौसेना मैडल), पुणे
मराठी - श्रीमती उज्ज्वला केळकर, श्री सुहास रघुनाथ पंडित, सौ.मंजुषा मुळे, सौ.गौरी गाडेकर
अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति - डॉ राधिका पवार बावनकर, बाम्बेर्ग (जर्मनी)
सम्पादक
श्री हेमन्त बावनकर, पुणे

e-abhivyakti

निःशुल्क

www.e-abhivyakti.com